इतिवुत्तकं

राहुलसङ्किच्चानेन
आनन्दकोसल्लानेन
जगदीसकस्सपेन च
सम्पादितो

उत्तमभिक्खुना पकासितो
२४८१ बुद्धवच्छरे (1937 A.C.)

इतिवुत्तकं

राहुलसङ्किच्चानेन
आनन्दकोसल्लानेन
जगदीसकस्सपेन च
सम्पादितं

उत्तमभिक्खुना पकासितो
२४८१ बुद्धवच्छरे (1937 A.C.)



प्राङ्निवेदनम्

पालिवाङ्मयस्य नागराक्षरे मुद्रणं अत्यपेक्षितमिति नाविदितचरं भारतीयेतिहासविविदिषूणाम्। संस्कृतपालिभाषयोरतिसामीप्यादपि यत् परस्सहस्रेभ्यो जिज्ञासुभ्यः संस्कृतज्ञेभ्यः पालिग्रन्थराश्यवगाहनं दुष्करमिव प्रतिभाति तत् लिपिभेदादेव। एतदर्थमयमस्माकमभिनवः प्रयासः। अत्र नूतना अपि पाठभेदा निधेया इत्यासीदस्माकं मनीषा परं कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादन्यत्र न तत् कृतमभूत्। अधोटिप्पणीषु सन्निवेशिताः पाठभेदाः। प्रायः Pali Text Society मुद्रितेभ्यो ग्रन्थेभ्य उद्धृताः।

अर्थसाहाय्यं विना अस्मत्समीहितं हृदि निगूहितमेव स्यात्। तत्र भदन्तेन उत्तमस्थविरेण साहाय्यं प्रदाय महदुपकृतमिति निवेदयन्ति—

कार्त्तिकशुक्लैकादश्यां
२४८० बुद्धाब्दे

राहुलः सांकृत्यायनः
आनन्दः कौसल्यायनः
जगदीशः काश्यपश्च

सुत्त-सूची

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

इतिवुत्तकं

१–एकनिपातो

१—पाटिभोग-वग्गो

(१—राग-सुत्तं १।१।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकधम्मं[1] भिक्खवे ! पजहथ[2]। अहं वो पाटिभोगो[3] अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? लोभं भिक्खवे ! एकधम्मं पजहथ।

अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येन लोभेन लुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं लोभं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥

अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

(२—दस-सुत्तं १।१।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एक धम्मं भिक्खवे ! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? दोसं[4] भिक्खवे ! एकधम्मं

१. [1]स्कंधः [2]पजहत B. अत्राप्रेच [3]पाटिभोगो ति पटिभू' A,
२. [4]द्वेषः=दोसो द्वेष दोसन्ति अनत्थम्मे अचरीति आघातो जायतीति ... A.

पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामितााया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येन दोसेन दुट्ठासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं दोसं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति।।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति।।२।।

(३—मोह-सुत्तं १।१।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? मोहं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ।

अहं' वो पाटिभोगो अनागामितााया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मोहेन मूळ्हासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गति।
तं मोहं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति।।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति।।३।।

(४—कोध-सुत्तं १।१।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? कोधं भिक्खवे! एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामितााया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येन कोधो न कुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं कोधं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति।।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति।।४।।

(५—मक्ख-सुत्तं १।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं एकधम्मं भिक्खवे ! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो आनागामिताय। कतमं एकधम्मं ? मक्खं भिक्खवे ! एक-धम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मक्खेन मक्खासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं मक्खं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(६—मान-सुत्तं १।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"एकधम्मं भिक्खवे ! पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं ? मानं भिक्खवे ! एकधम्मं पजहथ। अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मानेन मत्तासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं मानं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(७—सब्ब-सुत्तं १।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"सब्बं[1] भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। सब्बञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो[2] दुक्खक्खयाया'ति।

५. १ C. D. E. P. Pa. **हतेषु मानसुत्तं प्राग् पश्चाद् मक्खसुत्तं। अनुसरति** B. M. **च** A.; **१० सूत्रानन्तरं उद्दानं द्रष्टव्यम्।**

७. [1] **सब्बम्पि,** B. [2] **अभब्बो,** C.

एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

यो सब्बं सब्बतो ञत्वा सब्बत्थेसु[1] न[2] रज्जति[3]।
स वे[4] सब्बं[5] परिञ्ञा[6] सो[6] सब्बदुक्खं[7] उपच्चगा[8] ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥७॥

(८—मान-सुत्तं १।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"मानं भिक्खवे! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मानञ्च खो भिक्खवे अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच—तत्थेतं इति वुच्चति।

मानुपेता अयं पजा मानगन्था[9] भवे[10] रता।
मानं अपरिजानन्ता[11] आगन्तारो[12] पुनब्भवं॥
ये च मानं पहत्वान[13] विमुत्ता मानसङ्खये[14]।
ते मानगन्थाभिभूनो[15] सब्बदुक्खं[16] उपच्चगुन्ति[17]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥८॥

---

[1] सब्बसत्तेसु, P.Pa. [2] न पुन, B. [3] सज्जति, E., शोधितं-रज्जति, D. [4] सवे, M.; सचे, B.C.P. Pa.; सब्बे, D.E., अट्ठकथा व्याख्यान (व्यत्तं, एकंसेन) मपि वे—सपक्षीयं (स निपातमत्तं)। [5] सब्बं, B.C.P.Pa.; सब्ब, M.D.E., D. पुस्तके शोधितं—सब्बं। [6] परिञ्ञा सो B. M. Pa.; परिज्जायो, C.; परिञ्ञातो, D.E.; A. पुस्तके-सब्बपरिञ्ञा' ति सब्बं [?] परिजाननतो यथावुत्तस्स सब्बस्स परिञ्जाभिसमयवसेन परिजाननतो सो हि [?] यथावुत्तो योगावचरो अरियो। [7] °दुक्खमुप,° M. [8] उपज्झगा, C.P.Pa.

८. [9] °गन्था, C. D. E. M.; °गण्ठा, P.Pa.; °खन्धा, B. [10] भावे, B. [11] मानं न परिजानन्ति, P.P.a. [12] आगन्तारो, D.E.M.; अगन्थारो C.; अगन्धारो P.Pa.; आगन्त्वायो, B. [13] पहत्वान, D. E.; पहन्त्वान, B.; पहन्तान, M.; पहन्तानं, C. Pa. A. (अट्ठकथा व्याख्यानं—पजहित्वा)। [14] °संय D.E.,D. पुस्तकेतु शोध्यते-°संखये, मनुसंखये, C. [15] °गन्ताभि भुनो, M., °गन्धाभिभूनो, C. P. Pa.; °भुनो च, B. °क्खन्धाभिभूतो सो D.E. D. पुस्तकेतु शोध्यते— °भूता, सो—त्यज्यसे। [16] °दुक्खमुप°, M. [17] उपज्झगा, C.P.Pa.

(९ —राग-सुत्तं १।१।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"लोभं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। लोभञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन लोभेन लुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं लोभं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥९॥

(१०—दोस-सुत्तं १।१।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"दोसं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। दोसञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन दोसेन दुट्ठासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं दोसं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१०॥

पाटिभोग-वग्गो पठमो

तस्सु[1] द्दानं[1] :
राग (१) दोसा (२) अथ मोहो (३)
कोध[2] (४) मक्ख[3] (५) मानं[3] (६) सब्बं (७)।
मानतो (८) राग (९) दोसा[4] (१०) पुन द्वे
पकासिता वग्गमाहु पठमन्ति॥

---

१०. [1] M. **पुस्तक एव**, M. **पुस्तके तु सर्वत्र उवानं। उद्दानं इति** M. **पुस्तके.** [2] **कोध,** M.; **कुज्झनं,** B.C.; **कुज्झानं,** D.E.; **कुज्झ,** P.Pa. [3] **मक्खं मानं,** C.; **मानमक्ख,** D.E.; °**मखा,** P. Pa. [4] °**दोस,** B. C.M.P.Pa.

२—दुतिय-वग्गो

(११—मोह-सुत्तं २।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"मोहं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मोहञ्च खो[1] भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मोहेन मूळ्हासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं[2]।
तं मोहं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति[3] मे सुतन्ति॥१॥

(१२—कोध-सुत्तं १।२।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"कोधं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। कोधञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन कोधेन कुद्धासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं[4]।
तं कोधं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥२॥

---

११. [1] **खो —त्यक्तं** D.E. Pa. (P. **पुस्तके पंक्तेरधो योजितम्**)
[2] **दुग्गति,** P.Pa. [3] **ति** B.

१२. [4] **दुग्गति,** Pa.

(१३—मक्खो-सुत्तं १।२।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"मक्खं भिक्खवे ! अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय। मक्खञ्च खो भिक्खवे ! अभिजानं परिजानं तत्थ चित्तं विराजयं पजहं भब्बो दुक्खक्खयायाति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

येन मक्खेन मक्खासे सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं[1]।
तं मक्खं सम्मदञ्ञाय पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति इमं लोकं कुदाचनन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥३॥

(१४—मोह-सुत्तं १।२।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नाहं भिक्खवे ! अञ्ञं एकनीवरणम्पि[2] समनुपस्सामि येन नीवरणेन[3] निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ति यथयिदं[4] भिक्खवे। अ वि ज्जा नीवरणं[5]। अविज्जानीवरणेन[6] हि[7] भिक्खवे निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

नत्थञ्ञो एकधम्मोपि[8] येनेव निवुता पजा।
संसरन्ति अहोरत्तं यथा[9] मोहेन आवुता[10]॥
ये च मोहं पहत्वान[11] तमोखन्धं[12] पदालयुं।
न ते पुन संसरन्ति हेतु[13] तेसं न विज्जती'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥४॥

---

१३. [1] दुग्गति, P.Pa.

१४. [2] एकनिव°, B.Pa. [3] निव°, B.Pa. [4] यथायिद, B.P.Pa. [5] °निव°, B.P.Pa. [6] °निव°, B.Pa. [7] हि—त्यक्त D.E. पुस्तकयोः [8] च, D.E. [9] सदा, D.E. [10] आवुटा, P.Pa. [11] पहत्वान, D.E.; पहन्त्वान B.C.; पहन्तान M.; पहन्तानं, P.; पहनन्तान, Pa. [12] तमोक्ख°; तमोक्खन्धा, C. [13] हेतुमूलकारणा अविज्जा तेसं न विज्जति सब्बसो नत्थि समुच्छिन्नत्ता ति, A.

(१५—तण्हा-सुत्तं १।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नाहं भिक्खवे! अञ्ञं[1] एकसंयोजनम्पि[2] समनुपस्सामि येनेव[3] संयोजनेन[4] संयुता[5] सत्ता दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ति यथयिदं[6] भिक्खवे तण्हा—संयोजनं[7]। तण्हासंयोजनेन हि भिक्खवे! संयुत्ता सत्ता दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—[8]

तण्हादुतियो[9] पुरिसो दीघमद्धानं संसरं।
इत्थभावञ्ञथाभावं[10] संसारं नातिवत्तति[11] ॥
एवमा[12] दीनवं ञत्वा[13] तण्हादुक्खस्स सम्भवं।
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजेति[14] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[15] ॥५॥

(१६—सेख-सुत्तं १।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं[16]—"सेखस्स[17] भिक्खवे! भिक्खुनो अप्पत्तमानसस्स[18] अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानस्स विहरतो अज्झत्तिकं अङ्गन्ति करित्वा[19] न अञ्ञं एकङ्गम्पि समनुपस्सामि एवं बहूपकारं[20] यथयिदं[21] भिक्खवे!

१५. [1] अञ्ञं°, त्यक्तं.B. [2] °सञ्ञोजनं, B.M. [3] येन, M. [4] सञ्ञोज°, B.M. [5] संवुत्ता, एकः त कारो, D.E. [6] यथायिदं, [7] सञ्ञोज°, B.M. B.C.P.Pa. [8] एतत् M.पुस्तक एव [9] तण्हादुतियो तण्हासहायो (विच्छिन्नो हस्तलेखे—सहारो), A. [10] इत्थभाव°, C.A. तत्थ इत्थिभावो मनुस्सत्तं अञ्जथा भावो ततो अ वसिट्ठ सत्तावासा. . [11] नातिवत्तति न अतिक्कमति, A. [12] एवं, C.M.P.Pa.A.; एतं B.D.E. [13] दिस्वा, C.P.Pa. [14] एतासां एव गाथानां पुनरावृत्तिः १०५ सूत्रे। [15] अयं° M. पुस्तक एव

१६. [16] वुत्तं ° M. एव [17] सेक्खस्स, C.D.E. अप्पत्त°, B.D. [18] E.P. M. Aa.; असम्पत्त°, o. Pa.; असंपत्तमानस्स, C.; अप्पत्त अरहत्तस्साति, A., मानस शब्दस्यायमर्थो ऽन्यत्र गाथयाऽपि प्रतीयते। धम्मपदं २५५ (S.Childers, Dict.S.V. सेखो). [19] अत्तनो सन्ताने समुट्ठितं करणन्ति कत्वा, A. [20] बहुकारं, C. [21] यथायिदं, B.; यथाइवं, D.

योनिसो मनसिकारो। योनिसो भिक्खवे ! भिक्खु मनसि[1] करोन्तो अकुसलं पजहति कुसलं भावेतीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[2]—

योनिसो मनसिकारो धम्मो सेखस्स[3] भिक्खुनो।
नत्थञ्जो एवं बहूपकारो[4] उत्तमत्थस्स पत्तिया।
योनिसो पदहं[5] भिक्खु[6] खयं दुक्खस्स पापुणे ति[7]
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[8] ॥६॥

(१७—कल्याणमित्तता-सुत्तं १।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं[9]—"सेखस्स[10] भिक्खवे ! भिक्खुनो अप्पत्तमानसस्स अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानस्स विहरतो बाहिरं अङ्गन्ति करित्वा न अञ्ञं एकङ्गम्पि समनुपस्सामि एवं बहूपकारं यथयिदं[11] भिक्खवे कल्याणमित्तता[12]। कल्याणमित्तो भिक्खवे ! भिक्खू अकुसलं पजहति कुसलं भावेतीति[13]। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[14]—

कल्याणमित्तो यो भिक्खु सप्पतिस्सो[15] सगारवो।
करं[16] मित्तानं वचनं सम्पजानो पतिस्सतो[17]।
पापुणे अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[18] ॥७॥

(१८—संघभेद-सुत्तं १।२।८)

वुत्त हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं[19]—"एकधम्मो भिक्खवे ! लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनाहिताय बहुजनासुखाय[20] बहुनो जनस्स[21]

[1] C. मनसि.... एका पंक्तिः त्यक्त [2] एतं° M. एव। [3] ध° यस्स स°, B.; ध° सेक्खस्स, D.E. [4] बहुकारो, M. [5] पजहं, D.E. [6] भिक्खू, E. भिक्खवे, D. [7] पापुनोति, E..; °नाति, D. [8] अयं° M. एव।

१७. [9] वुत्तं° M. एव। [10] सेक्खस्स, C.D.E. [11] यथायिदं, B.Pa. [12] °मित्तं, P.Pa. [13] भावेति, B. [14] °एतं M. एव। [15] सप्पटिस्सो, M. [16] कल्याणमि°, C. [17] पटि°, M. [18] अयं°, M. एव

१८ [19] वुत्तं° M. एव। [20] बहुजन अहिताय बहुजन असुखाय, B.P. Pa.; D.E. इमे शब्दाः त्यक्ताः। [21] बहुजनोजनस्स, B. C. (B प्रथमः जकारो विच्छिन्नः।

अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं। कतमो[1] एकधम्मो ? संघभेदो। संघे खो पन भिक्खवे ! भिन्नो होति,[2] अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि चेव होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिभासा च परिक्खेपा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं, परिच्चजना[3] च[4] होन्ति, तत्थ अप्पसन्ना चेव नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं[5] होतीति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति[6]:

आपायिको[7] नेरयिको कप्पट्ठो संघभेदको।
वग्गारामो[8] अधम्मट्ठो योगक्खेमतो धंसति[9]।
संघं समग्गं[10] भित्वान[11] कप्पं निरयम्हि[12] पच्चतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥८॥

(१६—संघ-समग्गी-सुत्तं १।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकधम्मो भिक्खवे ! लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति वहुजनहिताय वहुजनसुखाय, वहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। कतमो एकधम्मो ? संघस्स सामग्गी[13]। संघे खो पन भिक्खवे ! समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञं भण्डनानि[14] होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिभासा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा होन्ति,[15], न च अञ्ञमञ्ञं परिच्चजना[16] होन्ति तत्थ अप्पसन्ना चेव पसीदन्ति[17] पसन्नानञ्च[18] भीयो भावो[19] होतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेदं इति वुच्चति—

[1] कतमो च, D.E. [2]अ° परिभासा च ह° त्यक्तः Pa. [3]परिच्चज्ज°, B. [4] च—त्यक्तः C. [5] अञ्ञायत्तं, C.E.M.; अञ्ञातत्थं, B.D.P.Pa.A. [6] एतं° M. एव [7] आपा°, M.; अपारयि शेषेषु हस्तलेखेषु। [8] वग्गारामो, B.C.M. (कम्मारामो, सूत्रे ७९.); वग्गरामो, P.Pa.; वग्गरतो D-E. [9] योगक्खेमा विधंसति, M.; धंसति द्रष्टव्यं Journ.P.T.S., 1885, p. 4. [10] सङ्घसामग्गि, B. (सूत्रे १९). [11] भेत्वान, D.E.Pa. [12] निरयम्हि (?) पच्चति—नैव, निरये।

१९. निरयम्हि च P.Pa.

१९. [13] सामग्गी, P.; अन्येषु सर्वेषु ह०. ह° [14] भण्डना, D.E. [15]Pa. त्यज्यते—न च......होन्ति। [16]परिच्चज्जना, B. [17]पस्सीद°, Pa. [18]पस्स°, P.Pa. [19]भिय्यो°, B.M.P.Pa.

सुखा[1] संघस्स सामग्गी[2] समग्गानञ्च'नुग्गहो[3]।
समग्गरतो धम्मट्ठो योगक्खेमा न धंसति।
संघं समग्गं[4] कत्वान कप्पं सग्गम्हि मोदतीति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(२०—दुट्ठचित्त-सुत्तं १।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"इधाहं भिक्खवे! एकच्चं पुग्गलं पदुट्ठचित्तं एवं चेतसा चेतो परिच्च पजानामि, इमम्हि चायं समये पुग्गलो कालं करेय्य यथा भतं निक्खितो एवं निरये[5]। तं किस्स हेतु? चित्तम्हिस्स भिक्खवे! पदुट्ठं। चेतोपदोसहेतु खो पन[6] भिक्खवे! एवमिधेकच्चे सत्ता कायस्स भेदा परम्मणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जन्तीति[7]। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति—

पदुट्ठचित्तं[8] ञत्वान एकच्चं इध पुग्गलं।
एतमत्थञ्च व्याकासि बुद्धो भिक्खूनं सन्तिके॥
इमम्हि चायं समये कालं कयिराथ[9] पुग्गलो।
निरयं उपपज्जेय्य चित्तम्हिस्स पदूसितं[10]॥
यथा हरित्वा निक्खिपेय्य एवमेव तथाविधो।
चेतो पदोसहेतू हि[11] सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इपि मे सुतन्ति॥१०॥

वग्गो दुतियो॥ २॥

[1] **सुखाय**, B. [2] **इ—सर्वत्र.** [3] °**चनुग्गहो**, C.D.E.M.P.Pa.,Aa.; °**चानुग्गहो**, B. [4] **संघं समग्गं**, M.; **सङ्घसम**°, P.Pa.; **संघस्स स**°, D.E.; **संघसामग्गिं**, C.; °**इ**, B.

२०. [5] **निरये' ति**, P.Pa. [6] **पन—त्यज्यते** C.M. [7] **उप्पज्ज**°, D.E. [8] **चित्तं तं**, D.E. [9] **कयिराथ**, C.D.E.M.; **करियाथ**, B; **करिया**, P.Pa. [10] **पदूसितं**, D.E.P.; **उ**, Pa.; **पदुस्सितं**, B.C.M. [11] **हेतुहि**, C.D.E.M.; **ति**, P. Pa; **हेतु ति**, B.

तस्सुद्दानं[1]—

मोह (११) कोधा[2] (१२) अथ मक्खो[3]
(१३) मोह[4] (१४) कामा[5] (१५) सेक्खा[6] दुवे (१६, १७)।
भेद (१८) मोदा[7] (१९) पुग्गलो
(२०) च वग्गमाहु दुतियन्ति वुच्चति[8]

---

[1] उद्दानं, अत्यशु द्धंसर्वेषु हस्तलेखेषु। [2] कोध—सर्व० ह०. [3] मक्खतो, B.P.Pa.; मक्खाथो, M.; मक्खितो, D.E. मक्खको, C. [4] मुह, B.; मुहा, M.; मुसा, C.D.E.P.Pa. [5] काम, B.C.M.P.Pa.; कामर, D.E [6] सेक्ख, D.E.M.; सेख P.Pa. [7] भेदमोद, P.; ° मेव, Pa.; ° मेध, D.E; ° मेव, B.C.; ° सामग्ग, M. [8] वुच्चतीति, D.E.M. Pa.

३—ततियवग्गो

(२१—चित्त-सुत्तं १।३।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतं—"इधाहं भिक्खवे! एकच्चम्पुग्गलं पसन्नचित्तं एवं चेतसा चेतो परिच्च पजानामि, इमम्हि[1] चायं समये पुग्गलो कालं करेय्य यथा भतं निक्खित्तो एवं सग्गे। तं किस्स हेतु? चित्तञ्हिस्स भिक्खवे! पसन्नं। चेतोपसादहेतु खो पन भिक्खवे! एवमिधेकच्चे सत्ता कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्तीति[2]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पसन्नचित्तं ञत्वान एकच्चं इध पुग्गलं।
एतमत्थञ्च[3] व्याकासि बुद्धो भिक्खूनं सन्तिके॥
इमम्हि चायं समये कालं कयिराथ[4] पुग्गलो।
सुगतिं[5] उपपज्जेय्य[6] चित्तञ्हिस्स पसादिकं॥
यथा हरित्वा निक्खिपेय्य एवमेव[7] तथाविधो।
चेतो पसादहेतू[8] हि सत्ता गच्छन्ति सुगतिन्ति[9]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१॥

---

२१. [1]इमस्मि, M. [2]उप्पज्ज°, D.E.
[3]अत्थं (त्यज्यते, च) D.E.Pa. [4]कयिराथ, C.D.E.M.; करियाथ, B.P.Pa. [5]सुग्गतिं C.M.
[6]उप्पज्ज, D.E. [7]एवमेवं, B.C.Pa.
[8]°हेतू C.M.; °हेतु, B.D.E.P.Pa.
[9]सुग्ग° o,C.D.E.M.

(२२—झायी-सुत्तं १।३।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"[1]मा भिक्खवे ! पुञ्ञानं भायित्थ, सुखस्सेतं भिक्खवे अधिवचनं, इट्ठस्स कन्तस्स पियस्स मनापस्स, यदिदं पुञ्ञानि। अभिजानामि खो पनाहं भिक्खवे ! दीघरत्तं कतानं पुञ्ञानं दीघरत्तं इट्ठं[2] कन्तं पियं मनापं विपाकं पच्चनुभूतं। सत्त वस्सानि मेत्तचित्तं भावेत्वा सत्त[3] संवट्टविवट्टकप्पे[3]न-यिमं लोकं पुनरागमासि,[4] संवट्टमाने सुदं भिक्खवे ! कप्पे आभस्सरूपगो होमि, विवट्टमाने कप्पे सुञ्ञं ब्रह्मविमानं उपपज्जामि। तत्र सुदं भिक्खवे ! ब्रह्मा होमि[5] **महाब्रह्मा** अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो[6] वसवत्ती[7]। छत्तिंसक्खत्तुं खो पनाहं भिक्खवे ! **सक्को** अहोसिं[8] देवानमिन्दो, अनेक-सतक्खत्तुं राजा अहोसिं,[9] चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा चातुरन्तो विजितावी[7] जनपदत्थावरियप्पत्तो[10] सत्तरतनसमन्नागतो[11]। को पन वादो पदेस-रज्जस्स ? तस्स मय्हं भिक्खवे ! एतदहोसि। किस्स[12] नु खो मे इदं कम्मस्स फलं,[13] किस्स[13] कम्मस्स विपाको, येनाहं एतरहि एवं महिद्धिको एवं महानुभावो ति ? तस्स मय्हं भिक्खवे ! एतदहोसि। तिण्णं[14] खो मे इदं कम्मानं फलं, तिण्णं कम्मानं विपाको, येनाहं एतरहि एवं महिद्धिको एवं महानुभावोति, सेय्यथीदं[15] दानस्स दमस्स सञ्ञमस्सा[16] ति। एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पुञ्ञमेव सो सिक्खेय्य आयतग्गं सुखिन्द्रियं[17]।

२२. [1] विरामाभावः — मा भिक्खवे....... पदेसरज्जस्स; BM. **पुस्तकयोः— भायित्थ इत्येतदनंतरं—पुञ्ञानि, होमि, उपपज्जामि, वसवत्ति, कोपन—इत्यतःप्राग्** M. **तथा-इत्येतदनंतरं पच्चनुभतं इन्दो; यथा** D. **पश्चात्— मनापस्स, पच्चनुभूतं, आगमासि, उपपज्जामि वसवत्ति, इन्दो, धम्मराजा, प्राक्— कोपन;** E. **पुस्तके—भायित्थ—इत्येतदनंतरं अधिवचनं, मनापस्स, पच्चनुभूतं, ...यथा** D. [2]M. **त्यज्यते द्वितीयं—दीघरत्तं; भिक्खवे दीघरत्तं अद्धानं इट्ठं,** B. [3]**सत्त—त्यज्यते** D.E. **सत्तसंवट्टकप्पे,** P.Pa. [4]**पुन,** B.C. M.P.Pa; **आगमा** C.M. [5]**अहोसि,** P.Pa. [6]°**त्थुसो,** D.E.; °**त्थुते,** C.; **अञ्ञंदत्थुदस्सा,** P.; **अञ्ञंदत्थु, प द्र० सुत्ते ११२ एतेषां शब्दानां पुनरुक्तिस्तत्र** [7]°**इ सर्वत्र हस्त० विजितावी** E.M. [8]**अहोसिं,** D.M.; °**इ पुस्तकयोरेव** [9]**अहोसिं,** M.; °**इ-सर्वत्रान्येषु** [10]**पत्तो,** B.M. [11]°**सम्पन्नो,** B.M. [12]**तस्स,** D.E. [13]**त्यज्यते** D.E. [14]**तिन्नं,** C. [15]°**यिदं,** B.M.P. **प** [16]**संञ्ञ**° B. [17]**सुइन्द्रियं,** D.E

दानञ्च समचरियञ्च मेत्तचित्तञ्च[1] भावये ॥
एते धम्मे भावयित्वा तयो सुखसमुद्दये[2] ।
अब्यापज्झं[3] सुखं लोकं पण्डितो उपपज्जतीति ॥
अयंपि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(२३—उभो अत्थ-सुत्तं १।३।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतं—"एकधम्मो भिक्खवे! भावितो बहुलीकतो उभो अत्थे समधिगय्ह[4] तिट्ठति दिट्ठधम्मिकञ्चेव अत्थं सम्परायिकञ्च। कतमो एकधम्मो? अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसु। अयं खो भिक्खवे[5]! एकधम्मो भावितो बहुलीकतो उभो अत्थे समधिगय्ह[6] तिट्ठति दिट्ठधम्मिकञ्चेव अत्थं सम्परायिकञ्चा'ति। एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अप्पमादं पसंसन्ति पुञ्ञकिरियासु[7] पण्डिता।
अप्पमत्तो उभो अत्थे अधिगण्हाति पण्डितो ॥
दिट्ठे धम्मे च यो अत्थो यो च'त्थो सम्परायिको।
अत्थाभिसमया[8] धीरो पण्डितो ति पवुच्चतीति ॥
अयम् पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(२४—वेपुल्लपब्बत-सुत्तं १।३।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकपुग्गलस्स भिक्खवे! कप्पं

[1] मेत्ता° B. [2] °समुद्दये, M.; °समुदये, P. प; सुखे समुद्दिसे, B.; ततो सुखसमुद्दिस्से, C.; यो सुखसमुद्रिये; D.; समुद्रिये, E.; A. केवलं—सुखसमुद्रिये (?) ति सुखानिसं से आनिसं सफलम्पि ने सं सुखमेवा-ति दस्सेति अब्यापज्झं . . .; सुत्ते ६० अपि, गाथाद्वयमिद, समुद्दये—इति शुद्धतमः। एतादृशः शब्दः तेलकटाहगाथायां ८९—दानादिपुञ्ञकिरियानि सुखुद्रयानि कत्वा, द्र० अङ्गुत्तर० Part.I.p.97. [3] ज्ज, B.M.

२३ [4] समधिग्गय्ह D. प. [5] भिक्खु, C.
[6] समधिग्गय्ह, D.P.Pa [7] °क्रियासु, M.
[8] अत्ताभि,° P.Pa.

सन्धावतो संसरतो सिया[1] एवं महा[1]अट्ठिकंकालो[2] अट्ठिपुञ्जो अट्ठिरासि[3] यथायं **वेपुल्लपब्बतो**,[4] स चे संहारको[5] अस्स, सम्भतञ्च[6] न विनस्सेय्या'ति। एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

एकस्सेकेन कप्पेन पुग्गलस्सट्ठिसञ्चयो[7] ।
सिया पब्बतसमो रासि इति वुत्तं महेसिना[8] ॥
सो[9] खो पनायं अक्खातो वेपुल्लो[10] पब्बतो महा ।
उत्तरो **गिज्झकूटस्स**[11] **मगधानं गिरिब्बजे** ॥
यतो च[12] अरियसच्चानि सम्मप्पञ्ञाय पस्सति ॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमं ।
अरियं[13]अट्ठंगिकं[13] मग्गं दुक्खूपसमगामिनं[14] ।
स[15] सत्तक्खत्तुं परमं सन्धावित्वान पुग्गलो ॥
दुक्खस्सन्तकरो होति सब्बसंयोजनक्खया ति ।
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(२५—सम्पजानमुसावद-सुत्तं १।३।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"एकधम्मं[16] अतीतस्स[17] भिक्खवे! पुरिसपुग्गलस्स नाहं तस्स किञ्चि पापकम्मं अकरणीयन्ति वदामि। कतमं एकधम्मं[18] ? यथयिदं[19] भिक्खवे ! सम्पजानमुसावादो ति[20]। एतं अत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

२४ [1] **एवं सम्परायिका महा**, B. [2]**अट्ठिकनाकलो**, B. M.P. (**द्रष्ट० संस्कृते कङ्कालः, अस्थिकङ्कालः**); **अट्ठिकलो**, C.D.E.; A **पुस्तके—अट्ठिकलो ति अट्ठिभागो; अट्ठिचलो (?) ति पठन्ति अट्ठि-सञ्चयो ति अत्थो।** [3] **अट्ठिरासि पि**, B. [4] **वेपुल्लो पब्ब**°, B. [5] **संहारको**, D.E. M.P. Pa.; **संहारो को** C.; **संपहारतो**, B. [6]**संहतञ्च**, C. [7]**एकस्सेकस्स पुग्गलस्स अट्ठिसञ्चयो**, C. [8] **महेसिव**, C. [9]**यो** C. [10] **वेपुल्ल**, D.E. [11] **किज्झ**°, B. [12]**व** A **त्यज्यते** M. [13]**अरियट्ठङ्गिकं**, B.M.P.Pa. [14]**दुक्खुप**°, B.M.P.Pa. [15]**त्यज्यते**. B.

२५. [16] **एकं ध**°, B. C. E. P. Pa. [17] **भणितस्स**, P. Pa. [18]**एकं ध**°, C. [19]**यथायिदं**, B.C. [20]**ति—त्यज्यते**.D.E.P.Pa.

एकध [1]म्मं अतीतस्स [2]मुसावादिस्स[3]जन्तुनो ।
वितिण्णपरलोकस्स नत्थि पापं अकारियंति[4] ॥
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(२६—दान-सुत्तं ३।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता, ति मे सुतन्ति—एवञ्चे भिक्खवे सत्ता जानेय्यु दानसंविभागस्स विपाकं यथाहं जानामि, न अदत्वा भुञ्जेय्युं, न च नेसं मच्छेरमलं चित्तं परियादाय तिट्ठेय्य[5] यो पि नेसं अस्स चरिमो आलोपो चरिम कबलं,[6] ततो पि न असंविभजित्वा भुञ्जेय्यु, सचे नेसं पटिग्गाहका अस्सु। यस्मा च खो भिक्खवे सत्ता न[7] एवं जानन्ति दानसंविभागस्स विपाकं यथाहं जानामि, तस्मा अदत्वा भुञ्जन्ति मच्छेरमलञ्च नेसं चित्तं परियादाय तिट्ठतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

एवञ्चे सत्ता जानेय्युं यथा वुत्तं महेसिना ।
विपाकं संविभागस्स यथा होति महप्फलं ॥
विनेय्य[8] मच्छेरमलं विप्पसन्नेन चेतसा ।
दज्जु[9] कालेन अरियेसु यत्थ दिन्नं महप्फलं ॥
अन्नञ्च दत्वा बहुनो[10] दक्खिणेय्येसु दक्खिणं ।
इतो चुता मनुस्सत्ता सग्गं गच्छन्ति दायका ॥
ते च सग्गं[11] गता तत्थ[12] मोदन्ति कामकामिनो ।
विपाकं संविभागस्स अनुभोन्ति अमच्छराति ॥
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

---

[1]एकं ध°, C.D.E. [2]भणितस्स, P.Pa.
[3]°वादस्स, B.P. Pa.A. अ. [4]इयमेव पदे. धम्म. १७६
२६. [5]तिट्ठेयं, C.; तिट्ठेय्यु, B. [6]कवलं, M
[7]न,.BC. [8]विनेय्युं, M; A. पुस्तके मच्छरियं मलं अपनेत्वा
[9]वज्जं, C.; दज्ज, B.; A. पु० रज्जं (?) ददेय्युं [10]पाहुनो D.E.
[11]सग्गं, M.P.Pa.; सग्ग, B.C; D.E. [12]एते सग्गगता सत्ता, C.

(२७—मेत्तभाव-सुत्तं १।३।७)

[1]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"यानि कानि चि भिक्खवे ! ओपधिकानि[2] पुञ्ञकिरियवत्थूनि[3] सब्बानि तानि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया कलं नाग्घन्ति[4] सोळसिं, मेत्ता येव तानि चेतोविमुत्ति अधिग्गहेत्वा भासते च तपते च विरोचति च। सेय्यथा पि भिक्खवे ! या काचि[5] तारकरूपानं पभा[6] सब्बा ता[7] चन्दिया[8]पभाय कलं नाग्घन्ति[9] सोळसिं, चन्दप्पभा[10]येव ता[11] अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[12] च[12] विरोचति च, एवमेव खो[13] भिक्खवे ! यानि कानिचि ओपधिकानि पुञ्ञकिरियवत्थूनि[14] सब्बानि तानि[15] मेत्ताय चेतोविमुत्तिया कलं[16] नाग्घन्ति[17] सोळसिं, मेत्ता येव तानि चेतो विमुत्ति अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[12]च[12] विरोचति च। सेय्यथापि भिक्खवे ! वस्सानं पच्छिमे मासे सरदसमये विसुद्धे[18] विगतवलाहके नभे[19] आदिच्चो नभं अब्भुस्सक्कमानो[20] सब्बं आकासगतं[21] तमगतं अभिविहच्च[22] भासते च तपते[12] च[12] विरोचति च, एवमेव खो भिक्खवे ! यानि कानिचि [23]ओपधिकानि[24]पुञ्ञकिरियवत्थूनि[14] सब्बानि तानि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया कलं[25] नाग्घन्ति[26] सोळसिं, मेत्ता येव तानि चेतोविमुत्ति

२७. [1]सादृश्यं मनु० २।८६-८७ [2]ओसधिकानि, B. C. A. अ [3]°क्रिय,°M. [4]नग्घन्ति, M.; नागग्घन्ति, Pa. [5]यानि कानिचि, B.C. [6]पभानि, B. [7]ता—त्यज्यते B.C.P.प. [8]चन्दिया, M.P.Pa. A अ,; चन्दिमा, B. चन्दिमाय, C.D.E. [9]नग्घ°, M. Pa. [10]चन्दपभा, M. [11]तानि, B. C. P. Pa. [12]त्यक्तः. Pa. [13]एवं खो, B. C. M. P. Pa. [15]त्यक्तः C. [16]°कालं, B. [17]नग्घ°, M.P.Pa. [18]विद्धे, D. E. M. P. Pa.; A. — विद्धेति उब्बिद्धे। (उब्बिद्धे ?) मेघविगमेन दूरिभूतो, ति अत्थो. [19]नखो, B. [20]अभुसक्कमानो ति उदयट्ठाणतो आकासं उल्लंघेन्तो, A.; द्रष्टव्यं—सक्कति Child. Dict., सह—अभि-and उदब्भुस्सग्ग° इत्येताभ्यां, M.; अब्भुसत्त्°, P.; अभस्सत्त°, Pa; अब्भुस्सक्कमादो, E.; अब्भुस्सूक्कमादो, D.; आभासमानो, B. C. [21]धामगतं, B.; आकासं तमं तमं, D. E. [22]अभिहच्च, E. अभिहच्च, D. [22]om. P. Pa. [23]ओसधिकानि, B. C. [24]°क्रिय°, M. [25]कालं, B. [26]तग्घ° M. P. Pa.

अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[1] च[1] विरोचति च। सेय्यथापि भिक्खवे! रत्तिया पच्चूससमयं ओसधितारका भासते च तपते[2] च[2] विरोचति[3] च, एवमेव खो भिक्खवे! यानि कानिचि ओपधिकानि[4] पुञ्ञकिरियवत्थूनि[5] सब्बानि तानि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया कलं नाग्घन्ति[6] सोळसिं, मेत्ता येव तानि चेतोविमुत्ति अधिग्गहेत्वा भासते च तपते[7] च[7] विरोचति चेति"[8] एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यो च[9] मेत्तं भावयति अप्पमाणं[10] पतिस्सतो[11]।
तनु[12] संयोजना होन्ति पस्सतो[13] उपधिक्खयं॥

एकम्पि चे पाणमदुट्ठचित्तो[14] मेत्तायति कुसलो[15] तेन होति।
सब्बे च पाणे मनसानुकम्पं[16] पहूतम[17]रियो पकरोति पुञ्ञं॥

ये[18] सत्तसण्डं[19] पथविं[20] विजित्वा[21] राजीसयो[22] यजमानानुपरियगा[23]।
(अस्समेधं[24] पुरिसमेधं[25] सम्मापासं[26] वाजपेय्यं[27] निरग्गळं[28])
मेत्तस्स चित्तस्स सुभावितस्स[29] कलम्पि ते नानुभवन्ति सोळसिं[28]॥
(चन्दप्पभा तारगणा' व[30] सब्बे)

[1] ओसधिकानि, B. C. [2] तपथा, P. त्यक्त: Pa. [3] च त्यक्त: Pa.; वासवो च विरोचति, B. [4] ओसधिकानि, B.C. [5]त्यक्त: C. [6] नग्घ°, C.M. P. Pa. [7] तपथा, P.; त्यक्त: Pa. [8] च [नास्ति] ति, C.D.E.P. [9] त्यक्त: D.E. Pa. [10] अप्पमानं, B. C. D. E. A. अ. [11] पटिस्स°, M.; पतियतो, B. [12] मनु, C.; तन्ध, D. E. [13] पस्सधीरो, C. [14] पानपदुट्ठ°, C.; पाणंपदु°, B. [15] कुसलो D.E. [16] °कम्मं, B.; कम्पि, D.E. [17] पहूतम्, M. (च संबंधेन) D; बहूनम्, E.; बहुतम, C. P.Pa. बाहुतम, B. [18] यो, C.M. [19] °सन्तं, B. C., सत्ता°, B. [20] पठविं,C. D. E. [21] विजेत्वा, D. E. P. Pa. [22] राजीसयो, E.; राजीसयो, D.M.; राजीसयो, Pa.; राजिस्सयो, C. P.; राजिस्सरो, B. [23] यजमानो नुपरि°, P. Pa.; ये यजमानानुप°, C.; °नुपरियगा सर्वत्र हस्तेंखेषु A. अनुपरियहा (सिच्!) ति विचरितुं; अनुपरियगुं °गू.—वायुज्यते बहुवचने. [24] सस्स°, B. C.M. [25] पू°, B.; पुरिसस्समे°,C. [26] सवोसं, C. [27] वाच°, C.; वाचा°, B. M. P. Pa. [28] I.C. [29] सभा°, D. E.; सभासितस्स, C. [30] च, B. C. E. M. बन्धनीस्थ: पाठ: पुराण प्रक्षेप इवाभाति, अट्ठकथायामप्युपलभ्यते। (अस्समेधं . . . निरग्गलं) लभ्यते संयुत्त-निकाय, Part I., P.76.

यो न हन्ति न घातेति[1] न[2] जिनाति[3] न[4] जापये[5]।
मेत्तं सो[6] सब्बभूतेसु वेरं तस्स न केनची ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥
[उद्दानं][7]
चित्तं(२१) झायि (२२) उभो अत्थे[8] (२३) पुञ्ञं[9] वेपुल्लपब्बतं (२४)।
सम्पजानमुसावादो (२५) दानञ्च (२६) मेत्तभावञ्च[10] (२७) ॥
सत्तिमानि च सुत्तानि पुरिमानि च वीसति ।[11]
एकधम्मेसु सुत्तन्ता सत्तवीसति सङ्गहा ॥
एकनिपातो निट्ठितो,
द्वे धम्मे अनुक्कटि ।[12]

---

[1] घापेति, D.; घाचेति, E.; नाग्घतीति, C. [2] न च, P. Pa. [3] चिनाति, B. [4] न च, Pa. [5] जासये, B. [6] मेत्तासो, P. Pa.; मेत्तंयो, C. [7] (उद्दानं) त्यज्यते सर्वत्र ह० [8] अत्था, M.; अत्ता, C. [9] पुञ्ञ' (एमःशब्दः सुत्त. २४), M. [10] मेत्त°, C. D. E. M.; मेत्ता°, B.; मेत्तं, P.Pa; °भावञ्च, B. M.; °भावच, C.; °भावा च, D. E;. वाचमुच, P. Pa.; मेत्ताभावना अभिप्रेता [11] सत्तिमानि .... वीसति M पुस्तके. [12] अनुक्कटि, M.; °ı, C.; प्रनुक्कुटि, B.; अनुकति, D. E.; अदुक्कटि, Pa. (P.?).

२—दुकनिपातो

१—पठमोवग्गो

(२८—इन्द्रिय-सुत्त २।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुत—"द्वीहि भिक्खवे। धम्मेहि स मन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[1] धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं स-उपायासं[2] सपरिळाहं कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा। कतमेहि द्वीहि ? इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारताय च[3] भोजने अमत्तञ्ञुताय च[4]। इमेहि भिक्खवे! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु द्विट्ठेव[5] धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं स-उपायासं सपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा'ति।" एत-मत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

चक्खु[6] सोतञ्च घानञ्च जिव्हा कायो तथा मनो।
एतानि यस्स द्वारानि अगुत्तानि'ध[7] भिक्खुनो॥
भोजनम्हि[8] अमत्तञ्ञू[9] इन्द्रियेसु असंवुतो।
कायदुक्खं चेतोदुक्खं दुक्खं सो[10] अधिगच्छति॥
डय्हमानेन कायेन डय्हमानेन चेतसा।
दिवा वा यदि वा रत्तिं[11] दुक्खं विहरति तादिसो'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥ १॥

---

[1] चेव, B.P.Pa., A. अ. [2] सउप्प°, B.A. अ. [3] त्यक्तः B.
[4] अगुत्तद्वारो...अमत्तञ्ञु, A अ.; इति पाठान्तरं पुस्तके [5] चेव, B.
[6] भिक्खु, D.E. [7] च, B.D.E. Aa.; अवुत्तानिध C. [8] भो° च, C.
[9] °ऊ°, M.; °उ, B.C.D.E.; अप्पमत्°, P.Pa. [10] दुक्खे सो, C.; दुक्खतो, B.; A. पुस्तके दुक्खंसो न समस्तंपदं यथा मेत्तंसो सुत्त २७
[11] °रत्ति, B.P.Pa.

(२९—इन्द्रिय-सुत्तं २।१।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[1] धम्मे सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा सुगति[2] पाटिकङ्खा. कतमेहि द्वीहि ? इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताय[3] च भोजने[4]मत्तञ्ञुताय च। इमेहि[5] भिक्खवे ! द्वीहि[6] धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[7] धम्मे सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा सुगति पाटिकङ्खा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इतिवुच्चति—

चक्खु सोतञ्च घानञ्च जिव्हा कायो तथा[8] मनो।
एतानि यस्स द्वारानि[9] सुगुत्तानि'ध[10] भिक्खुनो ॥
भोजनम्हि च मतञ्ञू[11] इन्द्रियेसु च संवुतो।
कायसुखं चेतोसुखं सुखं सो[12] अधिच्छति ॥
अडय्हमानेन[13] कायेन अडय्हमानेन[14] चेतसा।
दिवा वा यदि वा रत्तिं[15] सुखं विहरति तादिसो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(३०—तपनीय-सुत्तं २।१३)

वुत्तं[16] हेतं भगवता वुत्तमरहता ति'मे सुतं—"द्वे मे भिक्खवे ! धम्मा तपनीया[17]। कतमे द्वे ? इध भिक्खवे ! एकच्चो अकतकल्याणो होति अकतकुसलो अकतभीरुत्ताणो[18] कतपापो कतत्थद्धो[19] कतकिब्बिसो। सो अकतं मे

२९. [1]चेव, D.; द्रष्टव्यं सुत्त ४१ [2]सुग्गति, D.E.P.Pa. [3]रत्तद्व°, B. [4]भोजनेन, B. [5]इमेहि खो, D.E. [6]त्यक्तः. B. [7]चेव, D.E. [8]अथो, B.C.M. [9]D.E. पुस्तकयोस्त्यक्तोयं पादः. [10]ध, C.M.; च, B.D.E.P.Pa. [11] °ऊ, M.; हस्तलेखान्तरे—°उ. [12]सुखं सो, M.P.Pa (द्र० सु० २८) एवं नास्ति—सुखं, D.E.; सुखतो, B.C [13]अटाय्°, B.; दय् D.E. [14]अदय्°, B.P.Pa; दय्°, D.E. [15]°रत्ति, B.P.Pa.

३०. [16] द्र०. अङ्गुत्तरनिकाय, II.1.3. [17]तपनिया, B.M.Pa. [18]°भिअत्तानो, B°; भीरुणो, E.; °रुणो, D.; अकत अभीरुत्तानो, C. [19] °त्थद्धो, C; °त्थद्धो, E; °लुद्धो, B. M.; °लुद्धो, D. P. Pa.

कल्याणन्ति'पि[1] तप्पति,[2] कतं मे पापन्ति'पि तप्पति[2]। इमे खो भिक्खवे ! द्वे धम्मा तपनीया'[3]ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं[4] कत्वा वचीदुच्चरितानि[4] वा[5]।
मनोदुच्चरितं[4] कत्वा यञ्च'ञ्ञं दोससञ्ञितं[6]॥
अकत्वा कुसलं कम्मं[7] कत्वानाकुसलं वहुं।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[8] उपपज्जतीति[8]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(३१—अतपतीय-सुत्तं २।१।४)

[9]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"द्वे-मे भिक्खवे ! धम्मा अतपनीया[10]। कतमे द्वे ? इध भिक्खवे ! एकच्चो कतकल्याणो होति कतकुसलो कतभिरुत्ताणो, अकतपापो अकतत्थद्धो[11] अकतकिब्बिसो। सो कतं मे कल्याणन्ति पि न तप्पति[12]। अकतं मे पापन्ति'पि[13] न तप्पति[12]। इमे खो भिक्खवे ! द्वे धम्मा अतपनीया[14]'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं हित्वा वचीदुच्चरितानि वा[15]।
मनोदुच्चरितं हित्वा यञ्चञ्ञं दोससञ्ञितं[16]॥
अकत्वा कुसलं[17] कम्मं[18] कत्वान कुसलं वहुं।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

---

[1]त्यज्यते Aa. [2]तप्पति Aa. (द्रष्टव्यं धम्मपदे, गाथा १७); तपति सर्वत्र हस्तलेखेष्वन्येषु [3]तपनिया, B.M.P.Pa. [4]°दुचर°, B. [5]च, M. [6]°संहितं, D.E. [7]धम्मं, B.C.M. [8]सोपपज्जतीति, M.

३१. [9]द्र० अङ्गुत्तर-निकाय, II.1.4. [10]अतपनिया, B.M.P.Pa. [11]°त्थन्द्धो, C.; °त्थद्धो, E.; °लुद्धो, B.P.; °लुद्धो, D.M.Pa. [12]तप्पति—किमु तपति सर्वत्र हस्त० द्र० सु० इ० A. न व्याख्यायत इदं सुत्तं [13]ए त्यज्यते B.P.Pa. [14]अतपनिया, B.M.Pa. [15]च, B.M. [16]°संहितं, M.; यं पञ्ञं दोससंहितं, D.E. [17]अकत्वा अकुसलं, B.D.E.P.Pa. [18]धम्मे, C.

(३२—सील-सुत्तं २।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि द्वीहि ? पापकेन च सीलेन पापिकाय च दिट्ठिया। इमेहि खो भिक्खवे ! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं[1] निक्खित्तो एवं निरये'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पापकेन च सीलेन पापिकाय च दिट्ठिया।
एतेहि द्वीहि धम्मेहि यो समन्नागतो नरो।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[2] उपपज्जतीति[2]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(३३—सील-सुत्तं २।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे[3]। कतमेहि द्वीहि ? भद्दकेन च सीलेन भद्दिकाय च दिट्ठिया। इमेहि खो भिक्खवे ! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

भद्दकेन च सीलेन भद्दिकाय च दिट्ठिया।
एतेहि द्वीहि धम्मेहि यो समन्नागतो नरो।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(३४—अनोत्तप्पी-सुत्तं २।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"अनातापी[4] भिक्खवे ! भिक्खु अनोत्तप्पी[5] अभब्बो सम्बोधाय अभब्बो निब्बानाय अभब्बो अनुत्तरस्स

३२–[1] द्र०. **अङ्गुत्तर-निकाय,** III,10;153. [2] **इति त्यज्यते.** C. **सोपपञ्जतीति,** M.

३३–[3] **सग्गे ति,** C.

३४–[4] **°ई,** M.; **°इ,** B.C.P.Pa; **अनागामिपि,** D.E. [5] **°ई,** C.; **°इ,** B.D.E.P.Pa.; **अनोत्तापि,** M.

योगक्खेमस्स अधिगमाय। आतापी[1] खो[2] भिक्खवे ! भिक्खु ओत्तप्पी[3] भब्बो सम्बोधाय भब्बो निब्बानाय भब्बो अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अनातापी[4] अनोत्तप्पी[5] कुसीतो हीनवीरियो[6] ।
यो थीनमिद्धबहुलो अहिरीको[7] अनादरो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[8] सम्बोधिमुत्तमं ॥

यो च सतिमा[9] निपको झायी[10] आतापी[11] ओत्तप्पी[12] च अप्पमत्तो।
संयोजनं जातिजराय छेत्वा इधेव सम्बोधिमनुत्तरं[13] फुसे'ति।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(३५—कुहना-सुत्तं २।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नयिदं भिक्खवे ! ब्रह्मचरियं वुस्सति[14] जनकुहनत्थं[15] जनलपनत्थं[16] लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं[17] इति म जनो जानातु'ति[18]। अथ खो इदं भिक्खवे ! ब्रह्मचरियं वुस्सति संवरत्थञ्च[19] पहानत्थञ्चा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] °ई, M.; °इ, अन्येषु हस्त० [2] त्यक्तः C.Pa. [3] °ई, C.; °इ, B.P.Pa; ओत्तापी, M.; °इ D.E. [4] °ई, M.; °इ, अन्येषुहस्त० [5] °इ, सर्वत्र हस्त० न त्वस्ति अनोत्तापी M. [6] वीरियो, C.D.E.M.; °वीरियो, B.P.Pa. [7] अहिरीको, C.; अहीरिको, M.; °अहिरिको, B. D.E.P.Pa. [8] फुट्ठुं, M; फुट्ठं, अन्येषु हस्त०; द्र० सुत्त० ७९,८०,११० [9] मतिमा, C. [10] झायी, M.Aa.; झानलाभी, D.E., °इ, B.C.P.Pa. [11] °ई; M.; °इ, अन्येषु हस्त० [12] ओत्तप्पी, M.; ओत्तापि, अन्येषु हस्त० [13] सम्बोधि अनुत्त°, B.

३५ [14] वुसति, P.Pa.; वसीति, C. [15] नच कु°, B.C. [16] जनलप्°, M.P. Pa. Aa.; न जनलप्°, D. E.; नच लप्°, B. त्यक्तः; C.

[17] M. P. Pa. Aa पुस्तकेषु; अन्येषु हस्त० न लाभसक्क° ।

[18] सर्वत्र हस्त०, न तु M. Aa., –पाठस्तु—नेति मं° ।

[19] °त्थञ्ञेव, D.E.; संवयतञ्चेव, P.; संवुतञ्चेव, Pa.

संवरत्थं पहानत्थं ब्रह्मचरियं अनीतिहं[1] ।
अदेसयी[2] सो भगवा निब्बानोगधगामिनं ॥
एस मग्गो महत्तेहि[3]अनुयातो महेसिनो[4] ।
ये ये[5] तं पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसितं ।
दुक्खस्सन्तं करिस्सन्ति सत्थुसासनकारिनो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(३६—कुहना-सुत्तं २।१।६)

[6]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"नयिदं भिक्खवे ! ब्रह्मचरियं वुस्सति[7] जनकुहनत्थं[8] जनलपनत्थं[9] लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं[10] इति मं जनो जानातु'ति[11] । अथ खो इदं भिक्खवे ! ब्रह्मचरियं वुस्सति अभिञ्ञत्थञ्चेव[12] परिञ्ञत्थञ्चा'ति[13] । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—
अभिञ्ञत्थं परिञ्ञत्थं ब्रह्मचरियं अनीतिहं[14] ।
अदेसयी[15] सो भगवा निब्बानोगधगामिनं ॥
एस मग्गो महत्तेहि[16] अनुयातो महेसिनो[17] ।
ये ये तं पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसितं ।
दुक्खस्स'न्तं करिस्सन्ति सत्थुसासनकारिनोति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

---

[1] अनीतिहं, C. M.; अनीतिहं, B.; अनीतिहं, E.; अनीतिमं, D.; अनिहितम् P.Pa.; द्र० Journ. P.T.S. 1886. P. 111.

[2] अदेसयी, C. D. E.; °इ. B. M. P. Pa.

[3] महत्तेहि, C.D.E. Pa.; °त्थेहि, P.; महन्तेहीति (?) महा आतुमेहि, A.; महन्तेहि, B.M. [4] °सिना, P.Pa.; महेसिहि, D.E. [5] पि, D.E.

३६. [6] द्र० सुत्त ३५ [7] वुसति, P.Pa. [8] नच कुह्°, B.C. [9] जनलप्°, M.; न जनलप°, D.E.P.; न च लप°, B.C. [10] लाभसक्क°, M.; न लाभ्°, D.E.P.Pa.; न च लाभ्°, B.C. [11] इति मं°, M.; न इति मं°, सर्वत्र अन्य हस्त० [12] °अत्तञ्ञेव, C. [13] °अत्तञ्ञाति, C. [14] अनिहितं, P.Pa. [15] °ई, C.E.; °इ, अन्वेषु हस्त० [16] °त्थेहि, P.; महन्तेभि, B.M. [17] महेसिहि, D.E.

(३७—संवेजनिय-सुत्तं २।६।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्ना-गतो भिक्खु दिट्ठे'व[1] धम्मे सुखसोमनस्स बहुलो विहरति, योनिसो[2] आरद्धो होति आसवानं खयाय[3]। कतमेहि द्वीहि ? संवेजनीयेसु[4] ठानेसु संवेजनेन संवेगस्स[5] च योनिसो पधानेन[6]। इमेहि खो भिक्खवे ! द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठे'व[7] धम्मे सुखसोमनस्सबहुलो विहरति, योनिसो[8] आरद्धो होति आसवानं खयाया'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

संवेजनीयेसु[9] ठानेसु संविज्जेथेव[10] पण्डितो ।
आतापी[11] निपको भिक्खु पञ्ञाय समवेक्खिय ॥
एवं विहारी[11] आतापी[11] सन्तवुत्ति अनुद्धतो।
चेतोसमथ[12]मनुयुत्तो खयं दुक्खस्स पापुणे'ति[13] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

वग्गो पठमो[14] ।

तस्सुद्दानं[15]—
द्वे इन्द्रिया (२८,२९) द्वे तपनीया (३०,३१)सीलेन अपरे[16] दुवे (३२,३३)।
अनोत्तप्पी[17] (३४) कुहना द्वे[18] च[18] (३५,३६)

---

३७. [1] चेव' B.D.E.P.Pa. [2] योनिसो, C.; योनिस्स, M.; योनिस्सया, B.; योनीचस्स, D.E. (योनिच्° द्वितीयवारं योनिसो चस्स' P.Pa. [3] खयाया'ति' B.C.Pa. [4] °इयेसु' B.C.M.Pa. [5] A. संवेगस्स-संवजित्वा [6] पधानेन च, सर्वत्र हस्त न तु, Aa-M. [7] °ट्ठयेसु, B.C.P.Pa.; संवेजनियठानेसु, M. [8] चेव' B.D.E.P.Pa. [9] संविज्जेथेव—किमु संविज्जतेव, M.; ग्रन्थेऽपि Aa; A. स्पष्टयते—संविज्जेय्य, संवेगं करेय्य, संविजित्वा ! इति पाठान्तरं निर्दिश्य—संवेजेथेव, D.E.; संवज्जेय्य च, P.Pa.; संवेज्जतेव' C.; संवेजते च' B.; संवेगट्ठाने संविज्जन्ति, धम्मपदं Faus. l120. [10] °ई' M.; °इ, अन्येषु हस्त० [11] समचेतोपय्यम्, E.; °वेतोपथम्, D. [12] पापुणोति, D.E. [13] ततियो, M.; B.C. P.; पुस्तकेष्वपि उद्दान; इत्यतःप रं; D.E. Pa. वग्गो—इति केवलम्। [14] तस्सुदानं (?) केवलं M. [15] अपरेण, D.E. [16] अनोत्तापि, B.P.; °ई, M. [17] चेव, C.D.E. [18] तरेस C.P

२—दुतियवग्गो

(३८—वितक्क-सुत्तं २।२।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं। तथागतं भिक्खवे ! अरहन्तं[1] सम्मासम्बुद्धं द्वे वितक्का[2] बहुलं[2] समुदाचरन्ति, खेमो च वितक्को पविवेको[3] च[3]। अब्याबज्झारामो[4] भिक्खवे ! तथागतो अब्याबज्झरतो[5] तमेनं भिक्खवे ! तथागतं अब्याबज्झारामं अब्याबज्झरतं[6] एसे'व[7] वितक्को बहुलं समुदाचरित—'इमायाहं इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेमि[8] तसं[9] वा थावरं वा' ति। पविवेकारामो[10] भिक्खवे ! तथागतो पविवेकरतो[11]। तमेनं भिक्खवे ! तथागतं पविवेकारामं पविवेकरतं[12] एसेव[13] वितक्को बहुलं समुदाचरति—'यं अकुसलं तं पहीनन्ति। तस्माति ह[14] भिक्खवे ! तुम्हे' पि[15] अब्याबज्झारामा विहरथ अब्याबज्झरता[16]। तेसंवो[17] भिक्खवे ! तुम्हाकं अब्याबज्झारामानं[18] विहरतं[19] अब्याबज्झरतानं[20] एसेव वितक्को बहुलं समुदाचरिस्सति[21]—'इमाय मयं[22] इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेम[23] तसं[24] वा थावर

३८ [1] अरहतं, B.; अरहन्तं तं' C. [2] वितक्कबहुला, C. [3] पविवेको च वितक्को D.E. [4] M. सर्वदा—अब्याबज्झ्°; अन्येषुतु सर्वदा—अब्यापज्झ°। [5] °आरतो, B.C.P. [6] °आरतं, B.P; त्यक्तः C. [7] एसो P. (Pa. त्यक्तः तमेनं......समुदाचरति). [8] ब्यपाधेमि, pa.; ब्यापा......(अशुद्धः) P.; ब्यापादेम, B. [9] तपं, B.C. [10] °अरामो, C.P. [11] °आरते, P. पुस्तकस्म सर्वत्र, Pa. पुस्तकस्य चहे P. (प्रमादपाठा न दत्ताः) [12] °आरतं, B. [13] एसो, Pa. [14] तीहि, D.E.Pa. [15] पि, D.E.M.P a.; हि, B.C. [16] °अराम्°, [17] °आरता, B.P.Pa. [18] A.—तत्थ वो ति निपातमत्तं; खो, B. C. [19] विहरति, D.E. [20] °आरत्°, B.P.Pa. [21] °चरतीति, B.Pa; °चरियेति, P. [22] इमायाहं, D. E.; त्यक्त:Pa. [23] ब्याबाधेमि, D.E.; ब्यापादेम, B.C.P. (Pa. अशुद्धः). [24] तपं, B.; तं, C.

वा'ति । पविवेकारामा[1] भिक्खवे ! विहरथ[2] पविवेकरता[3] । तेसं वो[4] भिक्खवे ! तुम्हाकं पविवेकारामानं विहरतं[5] पविवेकरतानं एसेव[6] वितक्को वहुलं समुदाचरिस्सति[7]—'कि[8] अकुसलं कि[9] अप्पहीनं कि पजहामा'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तथागतं बुद्धमसय्हसाहिनं[10] दुवे वितक्का समुदाचरन्ति नं ।
खेमो वितक्को पठमो उदीरितो ततो[11] विवेको दुतियो पकासितो ॥
तमोनुदं पारगतं[12] महेसिं[13] तं[14] पत्तिपत्तं वसिमं[15] अनासवं ।
विस्सन्तर[16] तण्हक्खये विमुत्तं तं वे मुनि[17] अन्तिमदेहधारिं[18] ॥
मानं जहं[19] ब्रूमि[20] जराय पारगु[21] ॥
सेले यथा पब्बतमुद्धिनि ट्ठितो[22] यथा पि पस्से जनतं समन्ततो ।
तथूपमं धम्ममयं[23] सुमेधो[24] पासादमारुय्ह[25] समन्तचक्खु[26] ।
सोकावतिण्णं[27] जनतं[28] अपेतसोको अवेक्खति[29] जातिजराभिभूतन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

---

[1] °अरामा, C.E. [2] त्यक्तः B. [3] °आरता, P.Pa. [4] खो, B. [5] त्यक्तः C.M. [6] एवमेव, C. [7] °चरिस्सतीति, C.Pa; °चरतीति, B. [8] किं, त्यक्तः B.C.D.E. [9] किं, त्यक्तः B.C. [10] बुद्धस्सय्हं साहिनं, D.E.; बुद्धसय्हसाहिनं, P.C. पाठे प्रमादः [11] तथा, P.; त्यक्तः B.Pa. [12] पारन्ग°, B. [13] महेसिं, M.; महेसि, अन्येषु ह० Mss. [14] नं, D.E. [15] वसीमं, D.E. [16] विसन्त°, C.; वेस्सन्त°, B.M.Aa.; वेसन्त°, P.Pa. [17] मुनिं, M.; मुनि, D.Pa.; मूनि, B.; मुनी, C.; मुणी, E.; पुनि, P. [18] °धारिं, D.E.M.; B. धारि, B.C.P.Pa. [19] मार°, P.Pa.; मारञ्च (?) Aa.; माजहं, D.E. [20] ब्रूह, D.E. [21] पारगुं, C.M.; °गु, B.; °गं, D.E.; पारञ्गुति, P.; पारङ्गति, Pa. एतदेव पादद्वयं सुत्ते ४६. [22] सेलो, C.D.E. [23] °ठितो, B. P.Pa. [24] धम्मवरं, C. सुमेध, B.M.D. [25] आरूय्ह, B. [26] °चक्खू, B.E.M.; चक्खुं, C. [27] °किण्णं, D.E. [28] जनतमपे°, D.E.M.P.Pa.; जनतं मपेतं सोको, C. तृतीया . . . [29] अपेक्खति, D.E. गाथा (सेले यथा) दृश्यते ब्रह्मसंयुत्तं 1.9.

(३९—देसना-सुत्तं २।२।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तथागतस्स भिक्खवे ! अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स द्वे धम्मदेसना परियायेन भवन्ति। कतमा द्वे ? पापं पापकतो[1] पस्सथा-ति[2] अयं पठमा धम्मदेसना। पापं पापकतो दिस्वा तत्थ निब्बिन्दथ विरज्जथ[3] विमुच्चथा'ति अयं दुतिया धम्मदेसना। तथागतस्स भिक्खवे ! अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स इमा द्वे धम्मदेसना परियायेन भवन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तथागतस्स बुद्धस्स सब्बभूतानुकम्पिनो ।
परियाय[4] वचन पस्स[5] द्वे च धम्मा पकासिता ॥
पापकं पस्सथ चेकं[6] तत्थ चापि विरज्जथ
ततो विरत्तचित्तासे[7] दुक्खस्सन्तं करिस्सथा[8]'–ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(४०—विज्जा-सुत्तं २।२।३)

वुत्त हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"अविज्जा भिक्खवे ! पुब्बङ्गमा[9] अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया, अन्वदेव[10] अहिरीकं अनोत्तप्पं। विज्जा च खो भिक्खवे ! पुब्बङ्गमा कुसलानं धम्मानं समापत्तिया, अन्वदेव हिरोत्तप्पन्ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

या काचि'मा दुग्गतियो अस्मि लोके परम्हि च ।
अविज्जामूलका सब्बा इच्छालोभसमुस्सया[11] ॥
यतो च होति पापिच्छो अहिरीको[12] अनादरो ।

३९. [1] पापतो, D.E. [2] सम्पस्स° B. [3] त्यक्तः D.E. [4] परियायेन, P.Pa. [5] पस्स' C.P.Pa.M.A.; चस्स, D.E.; यस्स, B. [6] चेकं, M.; चेका, P. Pa.; छेका, D.E.; चेतं, B.C. [7] विरत्तचित्ताय' D.E.; तथेवरत्तचित्तासे, Pa; तत्थेवरत्थं°, P. [8] करियथाति, B. प्रथम गाथा याः पूर्वार्द्धं देवतासंयुत्तेऽपि

४०. [9] °गमानं' D.E. [10] द्र० E. Muller The Pali Gramm, p,63. [11] इच्छालोकसमुस्सयं, D.E. [12] अहिरीको, C; अहीरिको, M.; अहिरिको, B.D.E.Pa.

ततो पापं पसवति अपायं तेन[1] गच्छति ॥
तस्मा छन्दञ्च[2] लोभञ्च[3] अविज्जञ्च[4] विराजयं[5] ।
विज्जं उप्पादयं[6] भिक्खु सब्बा दुग्गतियो जहे'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता'ति मे सुतन्ति ॥३॥

पठमभाणवारं ॥१॥

(४१—पञ्ञा-सुत्तं २।२।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं "ते भिक्खवे ! सत्ता सुपरिहीना ये अरियाय पञ्ञाय परिहीना; ते दिट्ठे चेव[7] धम्मे दुक्खं विहरन्ति[8], सविघातं सउपायासं सपरिळाहं, कायस्स भेदा परम्मरणा दुग्गति[9] पाटिकङ्खा। ते भिक्खवे ! सत्ता अपरिहीना[10]ये अरियाय पञ्ञाय, अपरिहीना; ते दिट्ठे चेव[7] धम्मे सुखं विहरन्ति, अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स[11]भेदा परम्मरणा सुगति[12] पाटिकङ्खा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति:—

पञ्ञाय परिहानेन[13] पस्स लोकं सदेवकं।
निविट्ठं नामरूपस्मिं इदं सच्चन्ति[14] मञ्ञति ॥
पञ्ञा हि सेट्ठा[15] लोकस्मिं यायं निब्बेधगामिनी[16] ।
या च सम्मा[17] पजानाति जातिभवपरिक्खयं ॥
तेसं देवा[18] मनुस्सा च[19] सम्बुद्धानं सतीमतं[20] ।

[1]अपायन्तेन, B.C.M. [2]चन्धा, C.; इच्छञ्च, D.E.Aa. [3]लोकञ्च, D.E. [4]अविज्जाच, C.P.Pa. [5]विराजियं, D.C. [6]उपादयं, M.; उपादियं C.

४१. [7]दिट्ठेव M.; द्र० सुत्त० २९ इति. [8]B. च—योज्यते. [9]°तिं' B.; सुग्गति, D.E. [10]परिहिना, B. [11]कायस्स............वुच्चति—त्यक्तः D.E. [12]सुग्गतिं, B. [13]परिहीनेन, C.; °हिनेन, P.Pa. [14]वुच्चन्ति, C. [15]सेट्ठ, C.; सेट्ठं, B. [16]°ई D.E.M.; °इ B.C.P.Pa. [17]M.A. पुस्तकयोः; M. पुस्तकेऽस्ति—याय सम्मा; A. पुस्तके—या च, सम्मा अविपरीतं जानाति; C. या च यस्मा; अन्येषु हस्त० सा च यस्मा। [18]देव, D. E. Pa. [19]वा, B.; वि, P.; मनुस्सानञ्च, Pa. [20]सति°, B.P.Pa.

पिहयन्ति सपञ्ञानं[1] सरीरन्तिमधारिनन्ति[2] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(४२ —धम्म-सुत्तं २।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"द्वे मे भिक्खवे ! सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति। कतमे द्वे[3] ? हिरि च ओत्तप्पञ्च। इमे चे[4] भिक्खवे ! द्वे[5] सुक्का धम्मा लोकं न पालेय्युं, नयिध[6] पञ्ञायेथ माता'ति वा मातुच्छा'ति वा मातुलानीति वा आचरियभरिया'ति वा गरूनं[7] दारा ति'वा[8], सम्भेदं लोको अगमिस्स[9] यथा अजेळका[10] कुक्कुटसूकरा सोनसिङ्गाला[11]। यस्मा च[12] खो भिक्खवे ! इमे द्वे सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति, तस्मा पञ्ञायति[13] माता'ति वा मातुच्छा'ति वा मातुलानीति वा आचरियभरिया ति वा गरून[7] दारा'ति वा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

येसं [14] हिरिओत्तप्पं सब्बदा च न विज्जति ।
वोक्कन्ता [15] सुक्कमूला ते जातिमरणगामिनो ॥
येसञ्च [16] हिरिओत्तप्पं सदा सम्मा[17] उपट्ठिता ।
विरूळ्हब्रह्मचरिया ते सन्तो खीणपुनब्भवा'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

---

[1]पिहयन्ति सुपज्जानं, D.E.; अन्येषु हस्त० A. पुस्तके च—पिहन्ति हास-पञ्ञानं; A.व्याख्यायते—....निब्बानसच्छिकिरियाहावेदतुट्ठिपामोज्ज बहुळताय हासपञ्ञानं; पिहन्तिहा—पुराण प्रमादपाठः, पिहयन्ति—स्थाने। [2]सरियन्तिमसरिरन्ति, B., A. अन्तिमसररीधारिनं।

42. [3]C. योज्यते धम्मे। [4]चे' B.Pa.; से. P. द्वे.; C.M.; त्यज्यते D.E [5]त्यक्तः M. [6]न इध D.E. [7]गुरुनं, P.Pa. [8]वा ति, C. [9]अगमिस्स, D.E.M.; आगमिस्सति, B.C.P.Pa. इ [10]यथाजेळका B.; यथा अजेलका, C.D.E. [11]सोन, C. ण्, D.E.P.Pa. सोणा वा, B; सिगाल, E.Pa. [12]त्यक्तः C. [13]सञ्ञ०, C. पञ्ञायेथ, D-B [14]ये C [15]वोक्कन्तं P. वोक्कमन्ति,. Pa [16]०चे M. [17]धम्मा, C.P.Pa.

(४३—अजात-सुत्तं २।२।६)

[1]वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"अत्थि भिक्खवे ! अजातं अभूतं अकतं असङ्खतं। नो चे तं भिक्खवे ! अभविस्स[2] अजातं अभूतं अकतं असंखतं नयिध जातस्स[3] भूतस्स कतस्स सङ्खतस्स निस्सरणं पञ्ञायेथा'ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

जातं भूतं समुप्पन्नं कतं सङ्खतमद्धुवं[5]।
जरामरणसङ्खतं रोगनीळं[6] पभङ्गुणं।
आहारनेत्तिप्पभवं[7] नालं तदभिनन्दितुं॥
तस्स निस्सरणं सन्तं अतक्कावचरं[8] धुवं[9]।
अजातं असमुप्पन्नं असोकं विरजं पदं[10]
निरोधो दुक्खधम्मानं सङ्खारूपसमो सुखो'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥७॥

(४४—धातु-सुत्तं २।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—द्वे'मा भिक्खवे ! निब्बानधातुयो। कतमा द्वे ? सउपादिसेसा च[11] निब्बानधातु अनुपादिसेसा च[12]निब्बानधातु। कतमा[13] भिक्खवे ! सउपादिसेसा निब्बानधातु ? इध भिक्खवे ! भिक्खु अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो[14]

४३. [1] इति A. च D.E.P. Pa. (खण°, D.E.); B.C.M. तेसं खीणा पुनब्भवाति। [2] अभविस्सा, B. [3] नयिधम्मजातस्स, D.E. [4] पञ्ञायतीति, M. [5] अन्धुवं, C.; अधूवं, B.; [6] °नीलं, M.; °निडं, C.; °निद्दं, P. Pa च A.; °निद्धं, B.; वोगनिन्दं, D.E. (पूर्वतनाः शब्दा अशुद्धाः D.E.); A अक्खिरोगादीनं अनेकेसं रोगादीनं पुलवकन्ति (?); रोगनिद्द (?); द्र० धम्म० गाथ था १४८ Child. Dict. S.V. निड्ढ। [7] आहारेनेत्ति°, C.; आहारेनेत्थि°, B.; आहारनेत्तिप्पभवनं, D.E. [8] अतक्करजरं, C. [9] परं, D.E. [10] पजं, C.

४४. [11] त्यज्यते D.E.Pa. [12] त्यज्यते D.E. [13] B.M. योज्यते—न्व. [14] °सदत्थो B.

परिक्खीणभवसंयोजनो[1] सम्मदञ्ञाविमुत्तो। तस्स तिट्ठन्ते'व पञ्चिन्द्रियानि येसं अविघातत्ता[2] मनापामनापं पच्चनुभोति, सुखदुक्खं पटिसंवेदियति[3]। तस्स यो[4] रागक्खयो दोसक्खयो मोहक्खयो, अयं वुच्चति भिक्खवे! सउपादिसेसा निब्बान-धातु। कतमा च भिक्खवे! अनुपादिसेसा निब्बानधातु? इध भिक्खवे! भिक्खु अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो[5] परिक्खीणभवसंयोजनो सम्मदञ्ञाविमुत्तो। तस्स इधेव भिक्खवे! सब्बवेद-यितानि[6] अनभिनन्दितानि सीतीभविस्सन्ति,[7] अयं वुच्चति भिक्खवे! अनुपादिसेसा निब्बानधातु। इमा खो भिक्खवे! द्वे निब्बानधातुयो'ति।

एतमत्थं भगवा अवोच; तत्थेतं इति वुच्चति—

दुवे इमा[8] चक्खुमता पकासिता निब्बानधातू [9]अनिस्सितेन तादिना।
एका हि धातु[10]इध दिट्ठधम्मिका सउपादिसेसा भवनेत्तिसङ्खया।
अनुपादिसेसा पन सम्परायिका[11] यम्हि निरुज्झन्ति भवानि[12] सब्बसो॥
ये एतदञ्ञाय पदं असङ्खतं विमुत्तचित्ता[13] भवनेत्तिसङ्खया।
ते[14] धम्मसाराधिगमा[15] खये रता[16] पहंसु[17] ते सब्बभवानि तादिनो'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(४५—पटिसल्लान-सुत्तं २।२।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"पटिसल्लानारामा भिक्खवे! विहरथ पटिसल्लानरता[1] अज्झत्तं चेतोसमथमनुयुत्ता[2] अनिराकतज्झाना

[1] संज्ज्°, B.C.M. [2] °त्था C.P. अविगत° P.Pa. [3] °इयति' D.E.; वेदेति M.Aa. [4] यो. C. M. P. (Pa. रोयागकक्खयो) च A., खो. B.; [5] त्यक्त: D.E. [6] देवयितानि (नास्ति—सब्ब), B. [7] सारि°, D.E. [8] दुवे इमा, M.; द्वे इमा, B. C. P. Pa.; द्वेमा, D.E. [9] °ऊं, M.; °उ अन्येषु हस्त०. [10] °ऊ, M. [11] °ई पि कम्हि' D.E. [12] कवानि, C. [13] विमुत्त° M.A.; विमुत्ति°, अन्येषु हस्त० [14] एते, C. [15] शुद्धः पाठ केवलं M.A.; धम्म, B.C. Pa.; [16] °सारधिगमक्खये, Pa.; °चाराधिगमक्ख°, P.; °साराधितमक्ख°, D. E. °साराधिकम्मक्खरेयता, B.; सारथिकम्मकखयेरथा, C. [17] पजहिंसु, P.Pa.

४५. [1] °रतानं, C. [2] चेत्° अनुप° अनिरागतमनुयुत्ता, Pa.; अनिरागमनुयुत्ता, C. [3] °ज्झानानं, B.; अनियाकतज्झाना, C.

विपस्सनाय समन्नागता ब्रूहेता[1] सुञ्ञागारानं[2] । पटिसल्लानारामानं भिक्खवे ! विहरतं[3] पटिसल्लानरतानं अज्झत्तं चेतोसमथमनुयुत्तानं अनिराक तज्झानानं[4] विपस्सनाय समन्नागतानं ब्रूहेतानं[5] सुञ्ञागारानं द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं, दिट्ठेव[6] धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे[7] अनागामिता' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति--

ये सन्तचित्ता निपका सतिमन्तो च झायिनो ।
सम्मा धम्मं विपस्सन्ति कामेसु अनपेक्खिनो[8] ॥
अप्पमादरता सन्ता पमादे भयदस्सिनो ।
अभब्बा परिहानाय निब्बानस्सेव सन्तिकेति ॥[9]
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(४६- सिक्खा-सुत्तं २।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं--"सिक्खानिसंसा भिक्खवे ! विहरथ, पञ्ञुत्तरा विमुत्तिसारा[10] सताधिपतेय्या । सिक्खानिसंसानं भिक्खवे ! विहरतं पञ्ञुत्तरानं विमुत्तिसारानं[11] सताधिपतेय्यानं द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे[12] अनागामिता' ति । एतमत्थं भगवा अवोच तत्थेतं इति वुच्चति--

परिपुण्णसेक्खं अपहानधम्मं[13] पञ्ञुत्तरं जातिखयन्तदस्सिं[14] ।
तं[14] वे मुनिं[15] अन्तिमदेहधारिं[16] मानं जहं[17] ब्रूमि जराय पारगुं ॥[18]

---

[1] ब्रूहेता, C. M. P. Pa. (ब्रूहेतारो--अनेकत्र A.); ब्रूहेतानं, B.; ब्रूहितु' D.E. [2] सुञ्ञाकगानं, C. [3] विहरथ, B.C. [4] अनिराकत°, B.; निराकत°, P.Pa. [5] ब्रूहेता' P.Pa. [6] चेव, B. [7] सेसा' D.E. [8] अनप°, B.; अनपेक्खनो, D.E. [9] द्वितीया गाथा, स्वल्प भेदेन धम्मपदे Dhp. गाथा, ३२.

४६. [10] विमुत्तिहरा, B.; °यार, C. [11] हरानं. B.; C. विमु° सताधि प --इत्यत्र-परं [12] सेसा, B. [13] अपहान°, M.P.; अप्पहान, A.; अप्पहान, D.E., पहान, B.C. A. पुस्तके--पहानधम्मो कुप्पधम्मो.... अकुप्पधम्मो अप्पहानधम्मो; छन्दोनुरोधेन--अपहान, द्रष्टव्य--जातिखय° तस्यामेवगाथायाम्. [14] °दास्से, M.; °इ, अन्येषु हस्त० दस्सितं । [15] वे, B.; दस्सिनं स वे. C, [16] °धारि°, M.; °इ अन्येषु हस्त० [17] °तहं, D.E.; मानजहं, P.Pa. [18] °गं, D.E. उत्तरार्द्ध दृश्यते सुत्त० ३८.

तस्मा सदा[1] झानरता समाहिता आतापिनो जातिखयन्तदस्सिनो ।
मारं ससेनं अभिभुय्य[2] भिक्खवो ![3] भवथ[4] जातिमरणस्स पारगा'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(४७—जागरिय-सुत्तं २।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"जागरो च'स्स[5] भिक्खवे! भिक्खु विहरेय्य सतो[6] सम्पजानो समाहितो पमुदितो[7] विप्पसन्नो[8] तत्थ कालविपस्सी[9] च कुसलेसु धम्मेसु । जागरस्स भिक्खवे ! भिक्खुनो विहरतो सतस्स सम्पजानस्स समाहितस्स पमुदितस्स[10] विप्पसन्नस्स[11] तत्थ कालविपस्सिनो कुसलेसु धम्मेसु द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं—दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे[12] अनागामिता'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

जागरन्ता सुणाथेतं[13] ये सुत्ता ते पबुज्झथ[14] ।
सुत्ता[15] जागरितं सेय्यो[16] नत्थि जागरतो भयं ॥
यो जागरो च सतिमा सम्पजानो समाहितो मुदितो[17] विप्पसन्नो[18] च[19] ।
कालेन सो सम्मा धम्मं परिवीमंसमानो[20] एको'भिभूतो[21] विहने तमं सो ॥

[1] तस्मा रताझ°, D.E. सदाज्झ°, B. [2] °भूय्य, B.P. [3] °वे, D.E.Pa. [4] भवथ, B.D.E. A.; अवथ, P.Pa.; भवेथ, C; भवत्त, M.; भवेथ—छन्दोऽनुरूपाः पाठः

४७. [5] चस्स B.M.P. A. (च सद्दो सम्पिण्डनत्थो.....अस्साति सिया भवेय्य), च सतस्स, C.Pa.; पस्स, D.E. A. पुस्तके पाठान्तर—जारो वा भिक्खु विहरेय्याति—इति तु, जारस्स .... विहरतो—इत्यस्यानुरूपः पाठः; विप्पसन्नो इत्यतः परं A. .....अस्सातिसम्बन्धो विहरेय्याति वा । [6] यतो, C. [7] चमुहितो, B.; समुदितो पामोज्जबहुलो, A. [8] विपस्सन्नो, C.; विपसस्सनो, D.E. [9] कायविपस्सि, B.Pa. [10] समुवितस्स, C.; मूदिताय, B. [11] विप्पस्सन्नस्स, C.; विपस्सनस्स, D.E. [12] सेसा, B. [13] सुणायेमं, B.; जागरन्ते मुकायेतं, C. [14] ते पबू, M.P.Pa. Aa; ते च बु°; D.E.; ते सम्बु°, B.C. (C. त्यक्तः—ते). [15] सुत्त B.C., [16] जागरतस्सेयो, D.E. जागरियं, P.Pa. [17] मुदित, P.; त्यक्तः Pa. [18] विप्पस्स,° Pa.; अविप्पस्स°, P.; विपस्स, C.; विपस्सी, D.E. [19] च त्यक्तः D.E. [20] परिस्समस°, C. [21] एकोधि°, B.C.; एकोवि°, D.E.—द्वितीयगाथायां छन्भंगाः; उपरि पाठस्तु M.; B. पुस्तके—यो जागरो..... धम्मं—इत्यत्रानुष्टुभवत् चत्वारः पादाः, अन्येषु हस्तलेखेषु विरामचिन्हाभाव

तस्मा हवे जागरियं भजेथ आतापी[1] भिक्खु निपको झानलाभी[2] ।
संयोजनं जातिजराय छेत्वा इधेव सम्बोधि[3] मनुत्तरं फुसे'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

(४८—अपायिक-सुत्तं २।२।११)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"द्वे'मे भिक्खवे ! अपायिका[4] नेरयिका इदमप्पहाय[5] । कतमे द्वे ? यो अब्रह्मचारी[6] ब्रह्मचारी[7] पटिञ्ञो, यो च परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्तं अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति । इमे खो भिक्खवे ! द्वे[8] अपायिका[4] नेरयिका इदमप्पहाया'[5] ति । एतमत्थं भगवा अवोच तत्थेतं इति वुच्चति—

अभूतवादी निरयं उपेति यो वापि[9] कत्वान करोमि चाह[10] ।
उभो' पि ते पेच्च[11] समा भवन्ति निहीनकम्मा मनुजा परत्थ ॥

कासावकण्ठा बहवो पापधम्मा असञ्ञता ।
पापा पापेहि कम्मेहि निरयन्ते उपपज्जरे ॥

सेय्यो अयोगुळो[12] भुत्तो तत्तो[13] अग्गिसिखूपमो ।
यञ्चे[14] भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्ञतो 'ति' ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ।

---

[1] °इ सर्वत्र ह० [2] °ई, D.M.; °इ, अन्येषु ह० [3] °बोधि, B.

४८. [4] आपायिका, M. [5] इदप्प°, D.E.; इधमप्प°, B. [6] °इ, P.Pa.; त्यक्तः B.C. [7] °ई, M.; °इ, B.C.P.Pa; त्यक्तः D.E. [8] त्यक्तः C.—इमा ति स्रो गाथा धम्मपदेऽपि ३०६-८ [9] चापि, P.Pa. [10] न करोमि चाह, M.; न करोमीति चाहं, P.Pa; °वाह, D.E. करोमि (नास्ति—न) तोह, C.; न करोमिहि आह, B.; A. यो वा पन पापकम्मं कत्वा नाहं एतं करोमीति आह; द्र० (Fausboll), धम्मपदं. p.394. [11] पच्च, B.C.D.Pa. [12] °गुलो, D.E.; अय्योगुळ्हो, B. [13] अत्थो,C. [14] यञ्च, C. अन्त्या गाथा ९१ सुत्तेऽपि

(४९—दिट्ठिगत-सुत्तं २।२।१२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"द्वीहि भिक्खवे ! दिट्ठिगतेहि परियुट्ठिता देवमनुस्सा ओलियन्ति[1] एके अतिधावन्ति[2] एके[3] चक्खुमन्तो च[3] पस्सन्ति। कथञ्च भिक्खवे ओलियन्ति[3] एके ? भवारामा[4] भिक्खवे ! देवमनुस्सा भवरता भवसम्मुदिता[5], तेसं भवनिरोधाय धम्मे देसियमाने चित्तं[6] न[6] पक्खन्दति[7] न पसीदति[8] न सन्तिट्ठति नाधिमुच्चति[9] एवं खो भिक्खवे ! ओलियन्ति[10] एके। कथञ्च भिक्खवे ! अतिधावन्ति[11] एके ? भवेनेव खो पनेके अट्टियमाना[12] हरायमाना[13] जिगुच्छमाना[14] विभव अभिनन्दन्ति। यतो किर भो अयं अत्ता[15] कायस्स भेदा परम्मरणा, उच्छिज्जति विनस्सति न होति परम्मरणा, एतं सन्तं एतं पणीतं[16] एतं यथावन्ति[17]। एवं खो भिक्खवे ! अतिधावन्ति एके। कथञ्च भिक्खवे ! चक्खुमन्तो पस्सन्ति ? इध भिक्खु भूतं भूततो पस्सति, भूतं[18] भूततो दिस्वा भूतस्स निब्बिदाय विरागाय निरोधाय पटिपन्नो होति, एवं खो भिक्खवे ! चक्खुमन्तो[19] पस्सन्तीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

> ये[20] भूतं भूततो दिस्वा भूतस्स च अतिक्कमं।
>
> यथाभूते[21] विमुच्चन्ति भवतण्हापरिक्खया ॥

४९. [1] ओलीय°, E. Aa. [2] त्यक्तः D.E. [3] ओलीय° C.I. [4] भवरामा, B.D.E.M. [5] समुदिता, B. [6] नचित्तं, M. [7] °न्धति, C.Aa. [8] नसम्पसीदति, D.E.; नप्पसीदेति, Pa.; त्यक्तः। [9] °मुञ्चति, B.P.Pa. [10] ओलाय्, E. Pa. पुस्तके—"एवं भिक्खवे ..अल्पधातु (सुत्त०५१)—सन्दर्भो न दृश्यते. [11] अभिभवन्ति, B. [12] ...अट्टियन्ति द्र० Journ. P. T. S. 1886. p.104; अन्थियमाना नि (?).................पीलियमाना, A. [13] A. व्याख्यायते—हराय' लज्जमाना। [14] जिकुच्छ°, B.; जिकुञ्च, P.; जिगुच्छयमाना, D.E. [15] अत्था, M.; अत्ता, D.E. [16] पनी°, C.Aa. [17] एतं यथावन्ति, D.; याथावन्ति, E.M.; यथा एतं च धावन्ति P.; यथा च एतं धावन्ति, C.; °अति धावन्ति, B. [18] त्यक्तः C.D.E.P. [19] C.M.P. योजितः च, B. योजितः व. [20] यो, M. [21] यथाभूतं, D.E.

स चे[1] भूतपरिञ्ञो सो[2] वीततण्हो[3] भवाभवे ।
भूतस्स विभवा भिक्खु नागच्छति[4] पुनब्भवन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१२॥[5]

दुकनिपातं निट्ठितं ।

तस्सुद्दानं—

संवेजनीयेन (३७) ते दस ॥

वितक्का[6] (३८) देसना (३९) विज्जा[7] (४०) पञ्ञा (४१) धम्मेन (४२) पञ्चमं ।

---

[1] सवे, M.; भवे, D.E.; A सचेति निपातमत्तं । [2] यो, Aa; °परिञ्ञा यो, च.; °परियोसो, D.E. [3] विगततण्हो, D.E. [4] नागच्छन्ति, C. [5] अन्त्य वाक्यं केवलं M. [6] वितक्क, D.E. [7] विसज्जा, B.

३—तिकनिपातो

१—पठमवग्गो

(५०—मूलधातु-सुत्तं ३।१।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तीणि[1]'-मानि भिक्खवे! अकुसलमूलानि। कतमानि तीणि? लोभो अकुसलमूलं, दोसो अकुसल मूलं, मोहो अकुसलमूलं। इमानि खो भिक्खवे? तीणि[2] अकुसलमूलानीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[3]:—

लोभो दोसो च मोहो च पुरिसं[4] पापचेतसं।
हिंसन्ति अत्तसम्भूता[5] तचसारं' व सम्फलन्ति[6] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥[7]

(५१—मूलधातु-सुत्तं ३।१।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्त मरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे! धातुयो। कतमा तिस्सो? रूपधातु अरूपधातु निरोधधातु! इमा[8] खो भिक्खवे! तिस्सो धातुयो' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

रूपधातुपरिञ्ञाय अरूपेसु असण्ठिता।
निरोधे ये विमुच्चन्ति[9] ते जना मच्चुहायिनो[10] ॥

५०. [1] तीनि, C.E. [2] तीनि, E. [3] "एतमत्थं", "अयम्पि—इति वाक्यद्वयं केवलं M.; D.E. इयमेव गाथा कोसलसंयुत्त १-२ (Feer, p.70), III.; (तत्रैव p.98). [4] पूरिसं, B. [5] अत्थसम्भ°, B. [6] सम्फलन्ति, E. M., कोसलसं० सफल्°, B.D.P.; सबलन्ति, C. [7] वुत्तं हेतं, एतमत्थं, अयम्पि—इति तु केवलं M.

५१. [8] इमे, B.C. [9] विमुञ्चन्ति, B. [10] °हायिनो ति, B.C.

कायेन अमतं धातुं फस्सयित्वा[1] निरूपधिं[2] ।
उपधिप्पटिनिस्सग्गं[3] सच्छिकत्वा[4] अनासवो ।
देसेति सम्मासम्बुद्धो असोकं विरजं पदन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(५२—वेदना-सुत्तं ३।१।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! वेदना। कतमा[5] तिस्सो ? सुखा[6] वेदना दुक्खा[7] वेदना अदुक्खमसुखा[8] वेदना। इमा खो भिक्खवे ! तिस्सो वेदना'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स सावको ।
वेदना च पजानाति वेदनानञ्च सम्भवं ॥
यत्थ[9] चेता[10] निरुज्झन्ति मग्गञ्च खयगामिनं ।
वेदनानं खया भिक्खु निच्छातो[11] परिनिब्बुतो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(५३—वेदना-सुत्तं ३।१।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! वेदना। कतमा[12] तिस्सो ? सुखा[13] वेदना दुक्खा[13] वेदना अदुक्खमसुखा वेदना।[14]

[1] फस्सयित्वा,P.; फुस्स°, B. Aa. पुस्तकयोः; फुस्सयित्वा, M.; पस्स°, C.D.E. [2] निरूपधि, D.E.M.; °धि, B.C.P.Pa. [3] उपधिप्प°, M.; न पकारद्वित्वं अन्येषु ह० D.E. त्यक्त उपधि। [4] °कत्वान, B.; अचलेत्वा, Pa. दृश्यन्त एता गाथाः ७३ सूत्रेऽपि [5] कतमे, C. [6] सुख, B.D.E.P.Pa. [7] दुक्ख, B.D.E.P.; [8] °ख, Pa. [9] यत्त, B.Pa. [10] चित्ता, C. [11] निज्झातो, C.; निच्छातो (नित्तण्हो. A) द्र० छातो "hungry" in Child. Dict. एता गाथा द्रष्टव्याः, ५४,५६ सूत्रयोः

५३. [12] कतमे, C. [13] दुक्खा......सु खा, C. [14] वेदनाति, M.

सुखा भिक्खवे ![1] वेदना दुक्खतो दट्ठब्बा, दुक्खा वेदना सल्लतो दट्ठब्बा, अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दट्ठब्बा। यतो खो[2] भिक्खवे ! भिक्खुनो सुखा[3] वेदना दुक्खतो दिट्ठा होति; दुक्खा[4] वेदना सल्लतो दिट्ठा होति, अदुक्खमसुखा वेदना अनिच्चतो दिट्ठा होति, अयं[5] वुच्चति भिक्खवे ! भिक्खु अरियो सम्मदसो[6], अच्छेज्जि[7] तण्हं[8] विवत्तयि[9] संयोजनं, सम्मामानाभिसमया[10] अन्तमकासि दुक्खस्सा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यो सुखं दुक्खतो दक्खि[11] दुक्खमद्दक्खि[12] सल्लतो।
अदुक्खमसुखं सन्त[13] अद्दक्खि नं[14] अनिच्चतो॥
स वे[15] सम्मद्दसो[16] भिक्खु यतो तत्थ विमुच्चति।
अभिञ्ञावोसितो[17] सन्तो 'स वे[18] योगातिगो[19] मुनी'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥४॥

(५४—एसना-सुत्तं ३।१।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुत—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! एसना। कतमा तिस्सो ? कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना, । इमा खो भिक्खवे ! तिस्सो एसना'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] त्यक्तः C. [2] यतो च खो, D.E. [3] सुख, B. [4] दुक्ख, Pa. [5] अयञ्च, C. [6] सम्यग्दृग्—संस्कृते सम्मदसो, C.M.P.Pa.; समद्द°, D.E. [7] अच्छेज्ज, C.; अच्छेच्छि, D.E.; अच्छन्ति, B. [8] तण्हा, B.C. [9] वितत्तयि, P. विज्जयि, Pa. [10] समद्दसो सम्माम°, D.E. [11] दस्सिक्खि, P.; अदस्सि, Pa.; अद्द, D.E. [12] अद्दक्खि, P. [13] सन्ततं, Pa. [14] अदक्खि, M.; अदक्खिणं, D.E.; अदक्खिणे, C. [15] वे, D.M.; चे, B.C.E.P.Pa. [16] सम्मदसो, C. [17] °वेसितो, C.; °वो सतो, B.; °परियोसितो, P.Pa. [18] सचे, B.C.; सथ, P.; त्यक्तः Pa., [19] योगातिगो, B.M.P.; °आतिको, Pa; °आतिभो, B.; °आनितो, D.; °अतिसो, E.; संगातिसो, C. संयतो यतत्तो अभिञ्ञा-परियोसितो सन्तो योगातिको मुनिति, Pa.—द्वितीया गाथा ७२, ८५ सूत्रयोरपि.

५४ यस्स, D.E

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स सावको ।
एसना च पजानाति एसनानञ्च सम्भवं ॥
यत्थ[1] चेता निरुज्झन्ति मग्गञ्च खयगामिनं ।
एसनानं खया भिक्खु निच्छातो[2] परिनिब्बुतो'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(५५—एसना-सुत्तं ३।१।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! एसना । कतमा तिस्सो ? कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना[3] । इमा खो भिक्खवे ! तिस्सो एसना'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना सह ।
इति सच्चपरामासो[4] दिट्ठिट्ठाना[5] समुस्सया[6] ॥
सब्बरागविरत्तस्स[7] तण्हक्खयविमुत्तिनो[8] ।
एसना पटिनिस्सट्ठा[9] दिट्ठिट्ठाना[10] समूहता[11] ।
एसनानं खया भिक्खु निरासो[12] अकथंकथि[13]' ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(५६—आसव-सुत्तं ३।१।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तयो' मे भिक्खवे आसवा ! कतमे तयो ? कामासवो भवासवो अविज्जासवो, इमे खो भिक्खवे ! तयो आसवा' ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] यस्स, D.E. [2] निज्झातो, C.; निच्छतो च, D.E. एतद्गाथार्थं द्र० ५२,५६ सूत्रयोः.

५५. [3] °एसना सह, B. (यथा प्रथम गाथायां) [4] °सच्चं°, D.E. P. Pa. [5] B.C. योज्यते च. [6] समुस्सना, B.C. [7] °त्ताय, C. [8] °विमुत्तिनो, D.E.P.Pa; °विमुत्तितो (?) अरहतो, A.; °विमुत्तिया, B.C.M. (तण्हक्खरा°, B.). [9] °निस्सग्गा, C.; °निसग्गा, P.Pa. [10] दिट्ठेसना, B.M. [11] समुहिता, B. [12] निवासो, D.E. [13] अकतंकथि, B.C.E.M.; °कति, P.

समाहितो सम्पजानो सतो बुद्धस्स[1] सावको[1] ।
आसवे च[2] पजानाति आसवानञ्च[3] सम्भवं ॥
यत्थ चेता निरुज्झन्ति मग्गनञ्च[4] खयगामिनं ।
आसवानं खया भिक्खु निच्छातो[5] परिनिब्बुतो ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(५७—आसव-सुत्तं ३।१।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्त मरहता ति मे सुतं—"तयो' मे भिक्खवे ! आसवा। कतमे तयो ? कामासवो भवासवो अविज्जासवो । इमे खो भिक्खवे ! तयो आसवा' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यस्स कामासवो खीणो अविज्जा च[6] विराजिता ।
भवासवो[7] परिक्खीणो विप्पमुत्तो निरूपधि[8] ।
धारेति[9] अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥८॥

(५८—तण्हा-सुत्तं ३।१।९)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! तण्हा। कतमा तिस्सो ? कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा । इमा [10]खो भिक्खवे ! तिस्सो तण्हा' ति[10] । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

तण्हायोगेन संयुत्ता रत्तचित्ता भवाभवे ।
ते योगयुत्ता मारस्स अयोगक्खेमिनो[11] जना ।
सत्ता गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो ॥

५६. [1] **सम्बुद्धसावको**, C. [2] **चे**, C.Pa. [3] **आसवानस**, C. [4] **मग्गञ्चस्स**, Pa. [5] **निज्झातो**, C. **एतद्गाथार्थद्र० ५२,५४ सूत्रयोः**. [6]**व**, P.; **त्यक्तः** Pa. [7] **भवाभवो**, D.E. [8] **निरुपधि**, B.C.D. E.M.; **निरूपधि**, Pa; **नियुप्पधि**, P. [9] **धारेन्ति**, B.

५८. [10] **इमा......तण्हा _ ति त्यक्तः** B.C.P.Pa. [11] °**क्खेमियो**, C.; °**क्खेमये** B.

ये च तण्हं पहन्त्वान[1] वीततण्हा[2] भवाभवे।
ते च[3] पारङ्गता[4] लोके ये पत्ता[5] आसवक्खयन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(५९—मारधेय्य-सुत्तं ३।१।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"तीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अतिक्कम्म[6] मारधेय्यं आदिच्चो, व विरोचति। कतमेहि तीहि ? इध भिक्खवे ! भिक्खु असेखेन[7] सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन[7] समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन पञ्ञाक्खन्धेन[8] समन्नागतो होति। इमेहि खो भिक्खवे ! तीहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अतिक्कम्म[9] मारधेय्यं आदिच्चो' व[10] विरोचतीति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

सीलं समाधि पञ्ञा च यस्स एते सुभाविता[11]।
अतिक्कम्म[12] मारधेय्यं आदिच्चो, व विरोचती'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[13] ॥१०॥

वग्गो पठमो

उद्दानं—

मूलधातु[14] (५०,५१) अथ वेदना दुवे (५२,५३) एसना च[15] दुवे (५४,५५) आसवा[16] दुवे (५६,५७)।
तण्हातो च (५८) अथ मारधेय्यतो[17] (५९) वग्गमाहु पठमन्तिमुत्तमन्ति[18] ॥

---

[1] पहन्तान, M.P.; पहत्वान, D.E. [2] वीततण्हा भव्°, D.E.P.Pa; नित्तण्हा च भ°, C.; नितण्हा, B.M. [3] ते वे, D.E.P.Pa. [4] पारंकता, B.; पारगता, D.E. [5] सत्ता, B.C.Pa.

५९. [6]अतिक्कम, P.Pa. [7]असेक्खेन, D.E. [8]पञ्ञाक्ख° D.E. [9]अतिक्कम, B.P.Pa. [10]च व, B. [11]सभ्°, D.E.; सभासिता, C. [12]अतिक्कम, P.Pa. [13]अयम्पि°—केवल M. [14]मूलंधातु, P.; त्यक्तः Pa. [15]च, त्यक्तः D.E. [16]आसवा च, B. [17]मारधेय्यो, C.; खेय्यतो, D. E. [18]°उत्तमन्ति, M.; अन्येषुहु० त्यक्तः– ति; पठमन्तमुत्तमं, D.E.

२—दुतिय-वग्गो

(६०—पुञ्ञ-सुत्तं ३।२।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं "तीणिमानि[1] भिक्खवे ! पुञ्ञकिरियवत्थूनि[2]। कतमानि तीणि? दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु[2] सीलमयं पुञ्ञकिरियवत्थु[2] भावनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु[2]। इमानि खो भिक्खवे ! तीणि पुञ्ञकिरियवत्थूनी'ति[2]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

पुञ्ञमेव सो सिक्खेय्य[3] आयतग्गं सुखिन्द्रियं[4]।
दानञ्च समचरियञ्च मेत्तचित्तञ्च भावये ॥
एते धम्मे भावयित्वा तयो सुखसमुद्दये[5]।
अब्यापज्झं सुखं लोकं पण्डितो उपपज्जती'ति[6] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

(६१—चक्खु-सुत्तं ३।२।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"तीणिमानि भिक्खवे ! चक्खूनि। कतमानि तीणि? मंसचक्खु दिब्बचक्खु पञ्ञाचक्खु। इमानि खो भिक्खवे ! तीणि चक्खूनी'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[7]—

मंसचक्खु दिब्बचक्खु[8] पञ्ञाचक्खु[8] अनुत्तरं।
एतानि तीणि चक्खूनि अक्खासि पुरिसुत्तमो[9] ॥

६०. [1]मानि—त्यक्तः B, [2]°किरिया°, D. E.; °क्रिय, M. [3]भावेय्य, C. Pa. (P. सिक्खेय्य)। [4]सुखुन्द्रियं, D. E. [5]°समुद्दये, D.E.M.; °समुदये, P.Pa.; सुखदुखिन्द्रियो, C.; °दुक्खुन्द्रिये, B. [6]उपपच्चतीति, B; उपज्झगाति, Pa. गाथा २२ सूत्रेऽपि.

६१. [7]एतं . . . वुच्चति—त्यक्तः B.C.Pa. [8]°चक्खुं, P.Pa. [9]पू°,B.

मंसचक्खुस्स[1] उप्पादो मग्गो दिब्बस्स चक्खुनो ।
यतो ञ्ञाणं[2] उदपादि पञ्ञाचक्खु[3] अनुत्तरं ।
यस्स चक्खुस्स पटिलाभा सब्बदुक्खा पमुच्चती'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[4] ॥२॥

(६२—इन्द्रिय-सुत्तं ३।२।३)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"तीणि'मानि भिक्खवे ! इन्द्रियानि कतमानि[5] तीणि ? अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं[6] अञ्ञिन्द्रियं अञ्ञातार्विन्द्रियं । इमानि खो भिक्खवे ! तीणिइन्द्रियानीति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

सेक्खस्स[7] सिक्खमानस्स उजुमग्गानुसारिनो ।
खयस्मिं पठमं ञाणं[8] ततो अञ्ञा अनन्तरा[9] ॥
ततो अञ्ञा[10] विमुत्तस्स ञाणं वे[11] होति तादिनो ।
अकुप्पा मे[12] विमुत्ती'ति[13] भवसंयोजनक्खया ॥
स वे[14] इन्द्रियसम्पन्नो सन्तो सन्तिपदे रतो ।
धारेति अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥

(६३—अद्धा-सुत्तं ३।२।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—तयो'मे भिक्खवे ! अद्धा । कतमे तयो ? अतीतो अद्धा अनागतो अद्धा पच्चुप्पनो अद्धा । इमे खो भिक्खवे ! तयो अद्धानि । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

[1] °चक्खुञ्च, C. [2] यतो च, B.; सतो च, C; यतो च ञ्ञानं, Pa.; यतो सञ्ञाणं, P. [3] °चक्खुं, B.C. [4] अयम्पि° केवलं M.

६२. [5] कतमा, B. [6] °मितिन्द्रियं,—सर्वेषु ह०, अञ्ञातञ्ञस्सामितिन्द्रियं, C. [7] सेक्खस्स, D.E. [8] यानं, D.E. [9] अन्तरा, P.; अनुत्तरा, B.C. [10] पुञ्ञा, B. [11] चे, B.C.M. [12] मे—त्यक्तः D.E. [13] B.C. योजितः ति-द्र० अङ्गुत्तर० III. सुत्त० ८४,१०२. [14] स वे, M. तवे, D. E.; सचे, B.C.P.Pa.Aa.

अक्खेय्यसञ्ञिनो सत्ता अक्खेय्यस्मिं परिट्ठिता ।
अक्खेय्यं अपरिञ्ञाय[1] योगमायन्ति मच्चुनो ॥
अक्खेय्यञ्च परिञ्ञाय अक्खातारं[2] न मञ्ञति[3] ।
फुट्ठो विमोक्खो मनसा सन्तिपदमनुत्तरं[4] ॥
स वे[5] अक्खेय्यसम्पन्नो सन्तो सन्तिपदे रतो ।
सङ्खाय[6] सेवी धम्मट्ठो सङ्खं[7] नोपेति[8] वेदगू'ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(६४—दुच्चरित-सुत्तं ३।२।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं ! तीणि' मानि भिक्खवे "दुच्चरितानि। कतमानि तीणि ? कायदुच्चरितं वचीदुच्चरितं मनोदुच्चरितं। इमानि खो भिक्खवे ! तीणि दुच्चरितानी'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं कत्वा वचीदुच्चरितानि च ।
मनोदुच्चरितं कत्वा यञ्च'ञ्ञं[9] दोससञ्ञितं[10] ॥
अकत्वा कुसलं[11] कम्मं[12] कत्वानाकुसलं बहुं ।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[13] उपपज्जती'ति[13] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(६५—सुचरित-सुत्तं ३।२।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—तीणि'मानि भिक्खवे ! सुचरितानि। कतमानि तीणि ? कायसुचरितं वचीसुचरितं मनोसुचरितं। इमानि खो[1]

[1]अप्परि°, D.E.; अक्खेय्यञ्च परि°, C.Pa. [2]अक्खातारं, C.M.; अक्खाभारं, Pa.; अक्खातानं, B.D.E.P. [3]मञ्ञसि, B.; मुञ्चति, D.E. [4]आद्यं गाथा द्वयं also in the संयुत्तनिकायेपि (ed. Feer) 1.2,18, केवलं द्वितीयस्य उत्तरार्द्धे भेदः। [5]स वे–किमु द्र० Sutt. 62, हस्तलेखे सचे; अच्चे, C. [6]सङ्खार, B. [7]सख्यं, B.; संख्या, C. [8]न उपेति, D.E.P.Pa. [9]यञ्चयं D.E.; यं अञ्ञं, Pa; यं सञ्ञं, P. [10]°सञ्हितम्, D.; °सम्हितं, E. [11]कत्वा अकुस°, Pa. [12]धम्मं, P. [13]सोपपज्जतीति, M.; द्र० ३३, ६५ सुत्त०.

भिक्खवे ![1] तीणि सुचरितानी'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायदुच्चरितं[2] हित्वा[3] वचीदुच्चरितानि[2] च ।
मनोदुच्चरितं[2] हित्वा[4] यञ्च'ञ्ञं[5] दोससञ्ञितं[6] ॥
अकत्वा कुसलं[7] कम्मं[8] कत्वान कुसलं बहुं ।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सग्गं सो उपपज्जतीति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

(६६—सोचेय्य-सुत्तं ३।२।७)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं । तीणि'मानि भिक्खवे ! सोचेय्यानि । कतमानि तीणि ? कायसोचेय्यं वचीसोचेय्यं मनोसोचेय्यं । इमानि खो भिक्खवे ! तीणि सोचेय्यानी'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

कायसुचिं[9] वाचासुचिं[9] चेतोसुचिं[10]अनासवं ।
सुचिसोचेय्यसम्पन्नं आहु सब्बपहायिनन्ति[11] ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

(६७—मोनेय्य-सुत्तं ३।२।८)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं—"तीणि'मानि भिक्खवे ! मोनेय्यानि । कतमानि तीणि ? कायमोनेय्यं वचीमोनेय्यं मनोमोनेय्यं । इमानि खो भिक्खवे ! तीणि मोनेय्यानीति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं एति वुच्च'ति[12]—

६५. [1] ख°भ°, त्यक्तः B.D.E.Pa. [2] °दुचर°, P.Pa. [3] गहेत्वा, Pa.; कत्वा, C. [4] गहेत्वा, Pa. [5] यं सञ्ञं, P. [6] °संहितं, D.E. [7] अकत्वाअक्°, B.D. E.P.Pa. [8] धम्मं, D.E.

६६. [9] °सुचि, B.M.P.Pa; °सुची, C.D.E. [10] °सुचोम, D.E. [11] °पहिननन्ति, B.; आहु सुचिसंपापणन्ति, P.Pa.

६७. [12] एतमत्थं°, केवलं M.; पे—इति D.E.

कायमुनिं[1] वाचामुनिं[1] मनोमुनिमनासवं ।
मुनिमोनेय्यसम्पन्नं[2] आहु निण्हातपापकन्ति[3] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥ ८ ॥

(६८—रागदोसमोह-सुत्तं ३।२।६)

वुत्तं हेत्तं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"यस्स कस्सचि भिक्खवे ! रागो अप्पहीनो दोसो अप्पहीनो मोहो अप्पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे ! बन्धो मारस्स,[4] पटिमुक्कस्स मारपासो[5], यथाकामकरणीयो च[6] पापिमतो । यस्स कस्सचि भिक्खवे ! रागो पहीनो दोसो पहीनो मोहो पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे ! अबन्धो[7] मारस्स,[4] ओमुक्कस्स[8] मारपासो, न[9] यथाकामकरणीयो च[10] पापिमतो' ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

यस्स रागो च दोसो च अविज्जा च विराजिता ।
तं भावितत्तञ्ञतरं[11] ब्रह्मभूतं तथागतं ।
बुद्धं वेरभयातीतं आहु सब्बपहायिनन्ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥९॥

(६९—रागदोसमोह-सुत्तं ३।२।१०)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"यस्स कस्सचि भिक्खवे ! भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा रागो अप्पहीनो दोसो अप्पहीनो मोहो अप्पहीनो,

[1] °मुनिं, D. E.; °मुनि, B.M.P.Pa. (वचिमुनि, P.); मुणी, C. [2] मनुमोनेय्यसम्पन्ना, D.E. [3] निन्हात°, M.; निण्हाण°, Aa. (अट्ठानामग्गजलेन सुट्ठु विक्खालितं पजहितपापमलं, A.); निन्वात°, P.Pa.; निन्विता°, C.B.; B. पुस्तकेतु शोधितः—निन्हात°; निह्वात, D.E.

६८. [4] मारपासस्स, C.P.Pa. [5] अबद्धो मारस्स ओमुक्कस्स मारपासो, D.E. (सूत्रस्योत्तरार्द्धमिव शब्दयोजना). [6] च—त्यक्तः M. [7] अबद्धो, D.E. [8] अपटिमुक्कस्स, B. [9] न—त्यक्तः D.E. [10] च—त्यक्तः B.M. [11] भावितत्थ°, B.; °ञ्ञात्°, P.Pa.

अय वुच्चति भिक्खवे! न[1] अतरि[2] समुद्दं सऊर्मि[3] सवीचिं सावट्टं[4] सगहं सरक्खसं। यस्स कस्सचि भिक्खवे! भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा रागो पहीनो दोसो पहीनो मोहो पहीनो, अयं वुच्चति भिक्खवे! अतरि[5] समुद्दं सऊर्मि[6] सवीचिं[7] सावट्टं सगहं सरक्खसं, तिण्णो पारंगतो[8] थले तिट्ठति ब्राह्मणो[9]'ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[10]—

यस्स रागो च दोसो च अविज्जा च विराजिता।
सो'मं[11] समुद्दं सगहं सरक्खसं ऊमिमयं[12] दुत्तर[13] मच्चतारि[14]॥
सङ्गातिगो[15] मच्चुजहो[16] निरुपधि[17] पहासि दुक्खं अपुनब्भवाय[18]।
अत्थङ्गतो सो न समानमेति[19] अमोहयि[20] मच्चुराजन्ति ब्रूमी'ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१०॥

दुतियो वग्गो

उद्दानं

पुञ्ञं[21] (६०) चक्खु[22] (६१) अथिन्द्रिया[23] (६२) अद्धा (६३) चरितं दुवे (६४,६५सुचि) [24] (६६)।
मनी[25] (६७) अथ राग[26] दुवे (६८,६९) पुन वग्गमाहु दुतियसुत्तमन्ति[27]

---

[1] न त्यक्तः B.C.M.; Aa. [2] आतरि, B.; अतिरीति नतिण्णो, A.; अगारी, D.E.; अपर, C.; अतिण्णो, M. [3] सऊर्मि, M.C.; सउम्मि, P.B., (न तु B.C.); त्यक्तः D.E.Pa. [4] सावाञ्जं, D.E. [5] अगारि, D.E.; अपर, C. [6] सऊर्मि, M.C., सउम्मि, P.Pa.B., (न तु B.C.); सवुमि, D.E. [7] त्यक्तः D.E. [8] पारगतो, C.D.E.P.Pa. [9] ब्रह्म°, B.P.Pa. [10] एतमत्थं° केवलं M. [11] सोमं, M. अन्येषु ह०—सो इमं। [12] ऊमि°, B.; वूमि°, D.E.; सूमि°, M.; सऊमि°, C.; उम्मि°, P.Pa.Aa. [13] दुत्तरमच्च्°, M., अन्येषु ह०—दुत्तरं; दुक्करं, B. [14] अच्चतारि, M. P.Pa.; °तरि, B.; अच्चगारि, D.E.; अतरीति, C. [15] संगातिको, B.; संगाहिको, C. [16] मच्चुहो, C.; त्यक्तः D.E. [17] निरूपधि, C.M. निरुप्°, B.D.E.; निरप्°, P.Pa. [18] सपुन°, B. [19] समानम्, C.; समाणम्, B.Aa.; पमाणं, D.E.M.P.Pa., पाठान्तरं A. [20] असमोहयि, C.; असमोहरि, B. [21] पञ्ञा, B.C.D.E. [22] भिक्खु, D.E. [23] अथिन्द्रिया, B.; अन्येषु ह०—अथ इन्द्रियानि; B.C.P.Pa. योजितः—च. [24] सोचि, M. [25] मुनो, M.; मुन, D.E. [26] अशुद्धं सर्वेषु ह० [27] उत्तमन्ति, M.; अन्येषु ह० त्यक्तः—ति।

३—तृतिय-वग्गो

(७०—दिट्ठ-सुत्तं ३।३।१)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं—"दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं[1] विनिपातं[1] निरयं[1] उपपन्ना[2] । तं खो पनाहं भिक्खवे ! नाञ्ञस्स समणस्स वा ब्राह्मणस्स[3] वा सुत्वा वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका, मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गति विनिपातं निरयं उपपन्ना[4]' । अपि च भिक्खवे ! यदेव सामं[5] ञ्ञातं[5] सामं[6] दिट्ठं[6] सामं विदितं तदेवाहं[7] वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता, अरियानं उपवादका, मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[8]'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

मिच्छा मनं[9] पणिधाय[10] मिच्छा वाचं अभासिय[11] ।
मिच्छाकम्मानि कत्वान कायेन इध पुग्गलो ॥

७०. [1]त्यज्यते C. [2]उप्पन्ना, D.E.; सत्ता कायदुच्चरितेन..... उपपन्ना—इति ९९ सूत्रेऽपि [3]ब्रह्मणस्स, B.P.Pa. [4]उप्पन्ना, C.D.E. [5]सामञ्ञातं, C.D.E. [6]त्यक्तः E. D. [7]तमेवहं, B. [8]उप्पन्ना, C. [9]मानं, C. [10]पनि°, D.E.; पनी°, C. [11]अभासिय, D.E.M.P.; अभासियं, C.; अभासिस्स, B.; मिच्छा वाच अभिस्सामीति (sic !) मिच्छा मुसावादादिवसेन वाचं भासित्वा, A.; द्र० ७१ सुत्तं म० पभासिय—किमु ?

अप्पस्सुतो[1] अपुञ्ञकरो[1] अप्पस्मिं इध जीविते[2] ।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो[2] उपपज्जती'ति[2] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१॥

(७१—दिट्ठ-सुत्तं ३।३।२)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं ! दिट्ठा मया भिक्खवे "सत्ता[3] कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा, सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना[4] । तं खो पनाहं[5] भिक्खवे ! नाञ्ञस्स[6] समणस्स वा ब्राह्मणस्स[7] वा सुत्वा वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे ! सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं[8] सग्गं लोकं उपपन्ना[9]' । अपि च भिक्खवे[10] ! यदेव सामं[11] ञातं[11] सामं[12] दिट्ठं[12] सामं विदितं तदेवाहं वदामि—'दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता कायसुचरितेन समन्नागतना वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना[13]' ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

सम्मा मनं[14] पणिधाय[14] सम्मा वाचं अभासिय[15] ।
सम्मा कम्मानि कत्वान कायेन इध पुग्गलो ॥

[1]अप्पस्सुतापुञ्ञाक्°, M.; अप्पसुताप°, P.Pa.; अप्पयुत्तो पु°, B.C. (पुञ्जनरो, B.). [2]सोपपञ्जतीति, M.

७१. [3]सत्ता इत्यतः परं, कायस्स भेदा परम्मरणा—इति योजनाऽयुक्ता. [4]उप्पन्ना, C.D.E.; उप्पपन्ना ति, B. [5]पन, B. [6]नञ्ञस्स, B. [7]ब्रह्मणस्स, B.P.Pa. [8]सुग्गतिं, B. [9]उप्पन्ना, C.D.E. [10]भिक्खवे त्यक्तः. B.; अपि च यदेव भिक्खवे, C.; अपि च देव भि°, D. E. [11]सामञ्ञातं, C.D.E.; सामंञ्ञा°, B. [12]त्यक्तः.D.E. [13]उप्पन्ना, D.E. [14]मानं पनी°, C. [15]अभासिय, C. D. E. M. P. Pa; अभासिस्स, B.; द्र० ७० सुत्तं

बहुस्सुतो पुञ्ञकरो अप्पस्मिं इध जीविते ।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो [1] सग्गं सो उपपज्जतीति [2] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥२॥

(७२—निस्सरण-सुत्तं ३।३।३)

72. (Tik. III. 3) वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"तिस्सो इमा भिक्खवे ! निस्सरणिया[3] धातुयो । कतमा तिस्सो ? कामानमेतं निस्सरणं यदिदं नेक्खम्मं, रूपानमेतं निस्सरणं यदिदं आरुप्पं [4], यं[5] खो पन किञ्चि भूतं सङ्खतं [6] पटिच्चसमुप्पन्नं निरोधो तस्स निस्सरणं । इमा खो भिक्खवे ! तिस्सो निस्सरणिया [7] धातुयो'ति । एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति :—

कामनिस्सरणं [8] ञत्वा रूपानञ्च [9] अतिक्कमं [10] ।
सब्बसङ्खारसमथं फुसं [11] आतापी [12] सब्बदा ॥
स वे [13] सम्मद्दसो [14] भिक्खु यतो तत्थ [15] विमुच्चति ।
अभिञ्ञावोसितो [16] सन्तो स वे[17] योगातिगो[18] मुनी'ति ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥३॥[19]

---

[1] सब्बञ्ञो, B. [2] उप्पज्ज°, Pa.; उपज्ज°, P.

७२. [3] निस्सरणिया, B.M.P.Pa.; निस्सरणिया ति निस्सरणपटिसंयुत्ता, A.; °णीया, C.; निस्साराणिया, D.E. (न् D.); निस्सारणीया, Child. Dict. [4] आरूप्पं, P.Pa. [5] त्यक्तः D.E. [6] असङ्खतं B.C. [7] निस्सारणिया, D.; °आणिया, E.; निस्सरणधा°, C. [8] °निस्सारणं, D.E. [9] रूप्प्°, P.Pa. [10] °क्कम्मं, P.Pa. [11] फुसं, M.; फुसन्तो, A. (हस्तलेखे—सुस°); फस्सं, Pa.; वस्सं, P.; पस्सम्—(आतापि), D.E.; सयं, B.C. [12] °ई, M.; °इ. [13] चे B.C. Pa.; त्यक्तः P. [14] सम्मवसो, M. [15] यतोतित्थ, D.E.; यथा कत्थ, C. [16] उपप्लवः C. Pa; तथैव

सुत्ते [सन्त] तरो ति......अप्पजानन्ति (?)—इति प्रक्षिप्तःपाठ उभयोर्हस्त० ! अभिञ्ञा [प्रक्षेपः] अहोसितो सन्तो, C. [17] चे, B.C.P.Pa. [18] °आतितो, D.E. [19] द्वितीया गाथा ५३,८५ सूत्रयोरपि०

(७३—रूप-सुत्तं ३।३।४)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं ! रूपेहि भिक्खवे "अरूपा[1] सन्ततरा[2], अरूपेहि निरोधो सन्ततरो[3]' ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

ये च रूपूपगा सत्ता ये च अरूपट्ठायिनो[5] ।
निरोधं अप्पजानन्ता[6] आगन्तारो[7] पुनब्भवं ॥
ये च रूपे[8] परिञ्ञाय अरूपेसु[9] असण्ठिता ।
निरोधे ये विमुच्चन्ति ते जना मच्चुहायिनो[10] ॥
कायेन अमतं धातुं फस्सयित्वा[11] निरूपधिं[12] ।
उपधिप्पटिनिस्सग्गं[13] सच्छिकत्वा अनासवो ।
देसेति सम्मासम्बुद्धो असोकं विरजं पदन्ति ।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥४॥

(७४—पुत्त-सुत्तं ३।३।५)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता' ति मे सुतं ! तयो मे[14] भिक्खवे "पुत्ता सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे तयो ? अतिजातो अनुजातो अवजातो' ति[15]। कथञ्च भिक्खवे ! पुत्तो अतिजातो होति ? इध भिक्खवे ! पुत्तस्स मातापितरो होन्ति न बुद्धं सरणंगता, न धम्मं सरणंगता, न सङ्घं सरणंगता, पाणातिपाता अप्पटिविरता अदिन्नादाना अप्पटिविरता, कामेसु मिच्छाचारा अप्पटिविरता, मुसावादा अप्पटिविरता, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना अप्पटिविरता, दुस्सीला

७३. [1] अरुप्पा, P.Pa. [2] सन्तरा, C.P.Pa. [3] सन्तरो, C.Pa. [4] चाति, B. [5] अरुपवासिनो, P.Pa. C. पुसाकयोःपूर्वोक्ते प्रक्षेपे °गामिनो, B., C. पुस्तयोस्तु योग्यस्थाने पूर्वार्द्धं उभयत्र संयुत्तनिकाये V. 4,5. [6] °अन्ति, C. Pa. प्रक्षेप एव। [7] आगन्तानो, B.; अगन्धारो, C. [8] ये च रूपे सर्व० ह० द्वितीय तृतीये गाथेतु द्र० ५१ सुत्त०। [9] आरुपेसु, D. E.; ये च रूपेसु, Pa. [10] °हारिनो, B. [11] फस्सयित्वा, P.Pa; फुस्स्°, C.; फुसय्° B.M.; फूसय्°, D.E. [12] निरूपधि, M.; °धि,—अन्य० ह० रूप—इत्यनेन सह प्रमादतः सम्बध्य ऊकारापादनम्। [13] °प्पटि°, अन्येषु ह० त्यक्तः °पटि°। [14] मे। [15] ति, त्यक्तः D.E.

पापधम्मा, पुत्तो च[1] नेसं[1] होति, बुद्धं सरणंगतो, धम्मं सरणंगतो, सङ्घं सरणंगतो, पाणातिपाता पटिविरतो[2] अदिन्नादाना पटिविरतो[3], कामेसु मिच्छाचारा पटिविरतो, मुसावादा पटिविरतो, सुरारमेयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो, सीलवा कल्याणधम्मो—एवं खो[4] भिक्खवे। पुत्तो अतिजातो होति। कथञ्च भिक्खवे! पुत्तो अनुजातो होति ? इध भिक्खवे! पुत्तस्स मातापितरो होन्ति, बुद्धं सरणंगता, धम्मं सरणंगता, सङ्घं शरणंगता, पाणातिपाता पटिविरता, अदिन्नादाना पटिविरता, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरता, मुसावादा पटिविरता, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरता, सीलवन्तो कल्याणधम्मा, पुत्तो' पि नेसं होति बुद्धं सरणं गतो, धम्मं सरणंगतो, सङ्घं सरणंगतो, पाणातिपाना पटिविरतो, अदिन्नादाना पटिविरतो, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरतो, मुसावादा पटिविरतो, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो, सीलवा कल्याणधम्मो—एवं खो भिक्खवे! पुत्तो अनुजातो होति। कथञ्च[5] भिक्खवे! पुत्तो अवजातो होति ? इध भिक्खवे! पुत्तस्स मातापितरो होन्ति, बुद्धं सरणंगता, धम्मं सरणंगता,[6] सङ्घं सरणंगता, पाणातिपाता पटिविरता, अदिन्नादाना पटिविरता, कामेसु मिच्छाचारा पटिविरता, मुसावादा पटिविरता, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरता, सीलवन्तो कल्याणधम्मा, पुत्तो च[7] नेसं[7] होति, न बुद्धं सरणंगतो,[8] न धम्मं सरणंगतो, न सङ्घं सरणंगतो, पाणातिपाता अप्पटिविरतो, अदिन्नादाना अप्पटिविरतो, कामेसु मिच्छाचारा अप्पटिविरतो, मुसावादा अप्पटिविरतो, सुरामेरयमज्जपमादाट्ठाना अप्पटिविरतो, दुस्सीलो पापधम्मो—एवं खो भिक्खवे! पुत्तो अवजातो होति[9]।—इमे खो भिक्खवे! तयो पुत्ता सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिन्ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति—

अतिजातं अनुजातं पुत्तमिच्छन्ति[10] पण्डिता।
अवजातं न[11] इच्छन्ति यो होति कुलगन्धनो[12] ॥
एते खो पुत्ता लोकस्मिं ये भवन्ति उपासका।

[1]पनेसं, D.E. [2]सर्वत्र ह० नतु C.M. योजितः—होति। [3]D.E. योजितः—होति। [4]खो, त्यक्तः P.Pa. [5]B. योजितः-खो। [6]ध° स° ग°, इत्यम P.Pa. प [7]पनेसं, D. (ण) E. [8]D.E. यौजितः—होति। [9]अवजातो ति, B. [10]पुत्तामिच्छ्°,B.D.E. [11]न—त्यक्तः D.E. [12]कुसजन्तुनो, C.; A.—कुलगन्धनो ति कुलच्छेदको, निर्दिश्यते पाठाप्तरं—कुलधंसनो (ह०—कुसलध°)

सद्धासीलेन[1] सम्पन्ना वदञ्ञू[2] वीतमच्छरा ।
चन्दो अब्भघना[3] मुत्तो[4] परिसासु विरोचरे[5]'ति[5]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥५॥

(७५—अवुट्ठिक-सुत्तं ३।३।६)

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता'ति मे सुतं—"तयो'मे भिक्खवे ![6] पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे तयो? अवुट्ठिकसमो पदेसवस्सी सब्बत्थाभिवस्सी। कथञ्च भिक्खवे! पुग्गलो[7] अवुट्ठिकसमो होति? इध भिक्खवे! एकच्चो पुग्गलो सब्बेसञ्ञेव[8] न[8] दाता होति, समणब्राह्मणकपणिद्धिकवनिब्बकयाचकानं[9] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्ध विलेपनं[10] सेय्यावसथपदीपेय्यं[10]—एवं खो भिक्खवे! पुग्गलो अवुट्ठिकसमो होति। कथञ्च भिक्खवे! पुग्गलो पदेसवस्सी होति? इध भिक्खवे! एकच्चो पुग्गलो एकच्चानं दाता होति, एकच्चानं न दाता होति[11], समणब्राह्मणकपणिद्धिकवनिब्बकयाचकानं[12] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्धविलेपनं[13] सेय्यावसथपदीपेय्यं[14]—एवं खो भिक्खवे! पुग्गलो[15] पदेसवस्सी होति। कथञ्च भिक्खवे! पुग्गलो[16] सब्बत्थाभिवस्सी होति? इध भिक्खवे! एकच्चो पुग्गलो सब्बेसं[17] देति, समणब्राह्मणकपणिद्धिकवनि ब्बकयाचकानं[18] अन्नं पानं वत्थं यानं मालागन्धविलेपनं[19] सेय्यावसथपदीपेय्यं[14]—एवं खो भिक्खवे! पुग्गलो[16] सब्बत्थाभिवस्सी होति।—इमे खो भिक्खवे! तयो पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं[17]न्ति।—एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति!

[1] सद्दा°, B. [2] °ञ्ञु, B.P. [3] अब्भघना, M.; गब्भ°, B.; अब्भगना, C.P.Pa; अब्भगणाति अब्भसंघाता, A.; बब्भसना, D.E. [4] पुत्तो, M. [5] विरोचयेति, C.; विरोचति, D.E.Pa.

७५. [6] भ°—त्यक्तः [7] पु°—त्यक्तः BCP. [8] न सब्बेसञ्जेव, B. [9] °कपणद्धिक°, M.; °ब्रह्मणद्धिक°, B. [10] A.—माला ति.. गन्धन्ति...... विलेपनन्ति...... सेय्याति...... आवसथन्ति.... प° ; गन्धं वि°, B.; °दीपयं, B.; पतिपयन्ति, Aa. [11] होति—त्यक्तः D.E.P.Pa. [12] °कपणद्धिक° M.; ब्रह्मणकपणद्ध°, B.; °ब्रह्मणपण अधिक, P.Pa. [13] °गन्धं वि°, D.E. [14] °वसथं प°, D. E.; °थदिपयं, B. [15] पु°—त्यक्तः C. [16] पु°—त्यक्तः B.C. [17] M. योजितः—व, [18] °ब्रह्मण°, B. Pa.; कपणद्धिक°, B.M. [19] गन्धं वि°, C.

न समणे न ब्राह्मणे न कपणिद्धिके न वनिब्बके[1] ।
लद्धान[2] संविभाजेति[3] अन्नं पानञ्च भोजनं ॥
अन्नं पानञ्च भोजनं ।
तं वे[4] अवुट्ठिकसमो ति आहु नं पुरिसाधमं[5] ॥
एकच्चानं न ददाति[6] एकच्चानं पवेच्छति[7] ।
तं[8] वे[9] पदेसवस्सीति[10] आहु मेधाविनो जना ॥
सुभिक्खवाचो[11] पुरिसो सब्बभूतानुकम्पको ।
आमोदमानो पकिरेति देथ देथाति भासति ॥
यथा पि[12] मेघो थनयित्वा[13] गज्जयित्वा[14] पवस्सति ।
थलं निन्नञ्च पूरेति अभिसन्दन्तो[15] वारिना[16]
एवमेव इध एकच्चो पुग्गलो होति तादिसो ॥
धम्मेन संहरित्वान[17] उट्ठानाधिगतं धनं ।
तप्पेति अन्नपानेन सम्मा सत्ते वनिब्बके[18] ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥६॥

---

[1] P.Pa. त्यक्ताः सर्वेनञाः समणब्रह्मणकप°, Pa., न समण ब्राह्मणे D.E. कपणद्धिके, B.; कपणिद्धि कवनिब्बके, M. [2] लद्दान, B.; लद्धानं, C. सद्दान, D.E. [3] °भाजेति, C.;° भजेति, M.; °भजति, P.Pa.; भज्जति, D.E.; °राजति, B. [4] चे, B.; नास्ति P.Pa. [5] नं साधमं D.E.; पुरिसाधम्मं, B.C. P.;Pa. अशुद्धम् [6] दाताति, D.E. [7] पवच्छेति, B.; °वेधति, C.; °वेदति, Pa. [8] एतं, C.Pa. [9] चे, B. [10] °परस्सवस्सित, Pa. [11] °वाचो, B.M.A.; °वेवो°, C.; °वासो, P.; सुभिक्खचेवाहो, D.E.A. पाठान्तरं—सुभिक्खवस्सी । [12] यथाभि, C. [13] धन्°, C. [14] तज्जयित्वा, D.E.; विज्जयित्वा, A.; B. च C. नास्ति गज्ज्°, किन्तु B. पथवी, C. पठवि, मेघो पश्चात् । [15] अभिसन्तो, C. [16] वा वारिना, B.M.; प वारिना, C.; परिवारि, D.E [17] संहरित्वा, B.; संहधित्वान, P. [18] सम्मा वत्ते, D.E.; सब्बसत्ते, P.Pa.; समापत्ते, M.; पनिब्बके, P.; मनिब्ब्°, Pa. B. अशुद्धं, पाठद्वयं तप्प्° अन्न्° । सम्मा पत्तेति अन्नपाणेन । समा सत्ते वकिप्पकेति । गाथात्रयं कोसलसंयुत्ते (ed. Feer) III. 3.4.17.

७६—सुख-सुत्तं [३।३।७]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। तीणि-मानि भिक्खवे सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो। कतमानि तीणि? पसंसा मे आगच्छतू ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, भोगा मे उप्पज्जन्तू[1] ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं[2] सग्गं लोकं उपपज्जिस्सामीति[3] सीलं रक्खेय्य पण्डितो। इमानि खो भिक्खवे तीणि सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो ति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति।

सीलं रक्खेय्य मेधावी[5] पत्थयानो तयो सुखे।
पसंसं[6] वित्तलाभञ्च[7] पेच्च सग्गे पमोदनं[8] ॥

अकरोन्तो पि चे पापं करोन्तमुपसेवति।
संकियो[9] होति पापस्मिं अवण्णो चस्स रूहति ॥

यादिसं कुरुते मित्तं यादिसं चुपसेवति[10]।
स वे[11] तादिसको होति सहवासो[12] हि[13] तादिसो ॥

सेवमानो सेवमानं संम्फुट्ठो सम्फुसं[14] परं
सरो दुट्ठो[15] कलापं वा अलित्तमुपलिम्पति[16]।
उपलेपभया[17] धीरो[18] नेव पापसखा[19] सिया ॥

पूतिमच्छं कुसग्गेन यो नरो उपनय्हति[20]।
कुसा पि पूति वायन्ति एवं बालूपसेवना ॥

तगरञ्च[21] पलासेन यो नरो उपनय्हति[20]।
पुत्ता पि सुरभि[22] वायन्ति एवं धीरूपसेवना ॥

तस्मा पलासपुटस्सेव[23] ञत्वा सम्पातय[24] त्तनो।

[1] उपपज्ज°, B.E.M. [2] सुगति, P.; सुग्गति, Pa. [3] उप्पज्ज्°, C.E. [4] नास्ति. P.Pa. [5] °वि, सर्वत्र न नास्ति तु E. [6] पसंसि, B.C. [7] वित्त°, E. P. Pa. च A. (धनलाभं भागुप्पत्ति); चित्त, D.; विति°, B.C.M. [8] च मोदनं, D.E. [9] सन्तियो, D.E. [10] यादिसञ्चुप°, P.Pa.; ° ‿ वूपस°, M.; यादिसंमुप°, C.; ° ‿ मप°, E.; °म्मप°, D. [11] चे, B.C.M. [12] सहावायो, B.; सभावासो, D.E. [13] पि, B.C.M. [14] संफुसि, B.; °फुसी, C. [15] विद्धो किन्तु [16] अमुलिलित्तप्पति, D.E. व्यत्यास [17] उपलिम्प°, P.M.; उपलेपतया, P.; °तिया, Pa.; उप्पलेपतिता, C. [18] वारि (?)., C. [19] °सुखा, D.E. [20] उपनेय्हति, B.P.Pa. [21] तग्ग्°, B.M.P.Pa. [22] सुरभिं, B. [23] पलासपुटस्सेव केवलं M. च A.; मालपुटस्सेव, P.; Pa. नास्ति गाथा मूलमुट्ठस्सेव, B.; फलमुट्ठस्सेव, C.; पत्तपुटस्सेव न्वोनुकूल D.E. [24] संपातम् M.P. च A.; संपाकम्, B.D.E.; सपाकम्, C.

असन्ते नुपसेवेय्य सन्ते सेवेय्य पण्डितो ।
असन्तो निरयं नेन्ति सन्तो पापेन्ति सुग्गतिन्ति[1] ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥७॥

७७—भिन्दन-सुत्तं [३।३।८]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। भिन्दन्तायं[2] भिक्खवे कायो, विञ्ञाणं विरागधम्मं,[3] सब्बे उपधी[4] अनिच्चा दुक्खा विपरिणामधम्मा ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[5]—

कायञ्च भिन्दन्तं[6] ञत्वा विञ्ञाणञ्च विरागुणं[7] ।
उपधीसु भयं दिस्वा जाति मरणमच्चगा[8] ।
संपत्वा परमं सन्तिं[9] कालं कङ्खति[10] भावितत्तो[11] ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[12] ॥८॥

७८—धातु-सुत्तं [३।३।९]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। [13]धातुसो[14] भिक्खवे सत्ता सत्तेहि[15] सद्धिं[15] संसन्दन्ति समेन्ति, हीनाधिमुत्तिका सत्ता हीनाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि

[1] सुगतिन्ति, B.P. [2] भिन्दन्तायं, M.; भिन्नोयं, B.C.; भिदरायं, D.E. (द्रष्टव्यं उद्दाने, च संस्कृते भिदुर); भिरूयं, P.; भिरुभयं, Pa. A. पाठद्वयं (भिन्दन्तायं च भिदुरायं° ?), किन्तु हस्तले० अशुद्धः (पिण्डायन्ति पिण्डतो अयं कायो ति......भिरु भेदनसीलो......तिभ्नरायन्ति पि पाठो); व्याख्याति भेदनसीलो। [3] विरागध्°, B.A.; विरागूध्°, M.D.E.; विरागुध्°, C.P.; द्र० गाथा। [4] °ई, केवलं M.; अन्यत्र °इ। [5] एतम्°, केवलं M. [6] भिन्दन्तं, केवलं M.; भिन्दनं, B.P.Pa.D.E.; भिन्नंतं, C. [7] विरागुणं, C.P.; °नं, B.M.Pa.; पभंगुणं, D.E. [8] अञ्जग्गा, M. [9] सन्ति, D.E.P.A.; सन्तं, B.C. M.Pa. [10] काल संखति, D.E. [11] °अत्तो, D.E.M.; °अत्थो, B.C.P.Pa. [12] अयम्° केवलं M. [13] पाठानुसारत, तत पर अतीतम्पि ...., अनागतम्पि ...., एतरहिपि... नास्त्यन्येषु अतीतम्पि, D.E. शयति अन्येषु हस्तलेखेषु तु साधारणोपन्यसि B.C. इत्यतः प्राक् अतीतेपि भिक्खवे, ततः परं अद्धानं Pa. पूर्वस्मात् पश्चात् समेन्तिः अतितं पि भिक्खवे अद्धानं (धातुसो) प (हिनाधिमुत्तिका); P. पूर्वस्मात् पश्चात् समेन्तिः अतितं पि भक्ख्° अद्ध्° धात्° व सत्ता संसन्वन्ति समेन्ति (हिवाधिम्°). [14] धातुसो व, D.E. [15] स्यजयते D.E.P.Pa.

सद्धिं संसन्दन्ति समेन्ति, कल्याणाधिमुत्तिका सत्ता कल्याणाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दन्ति समेन्ति। अतीतम्पि भिक्खवे अद्धानं धातुसो सत्ता सत्तेहि सद्धिं संसन्दिंसु समिंसु, हीनाधिमुत्तिका सत्ता हीनाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दिंसु समिंसु कल्याणाधिमुत्तिका सत्ता कल्याणाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दिंसु समिंसु। अनागतम्पि भिक्खवे अद्धाने धातुसेवो[1] सत्ता सत्तेहि[2] सद्धिं संसन्दिस्सन्ति समेस्सन्ति[3]: हीनाधिमुत्तिका सत्ता हीनाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दिस्सन्ति समेस्सन्ति[3] कल्याणाधिमुत्तिका सत्ता कल्याणाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दिस्सन्ति समेस्सन्ति[3]। एतरहि पि[2] भिक्खवे पच्चुप्पन्नं अद्धानं धातुसो-वा सत्ता सत्तेहि[2] सद्धिं संसन्दन्ति समेन्ति: हीनाधिमुत्तिका सत्ता हीनाधिमुत्तकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दन्ति समेन्ति, कल्याणाधिमुत्तिका सत्ता कल्याणाधिमुत्तिकेहि सत्तेहि सद्धिं संसन्दन्ति समेन्तीति[4]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[5]:

संसग्गा वनथो[6] जातो असंसग्गेन छिज्जति[7]।
परित्तं[7] दारुमारु[8]य्ह यथा सीदे महण्णवे।
एवं कुसीतमागम्म[9] साधुजीवी[10] पि[11] सीदति॥
तसमा तं परिवज्जेय्य कुसीतं हीनवीरियं[12]।
पविवित्तेहि[13] अरियेहि पहितत्तेहि झायिभि[14]।
निच्चं आरद्धविरियेहि[15] पण्डितेहि सहा वसेति।
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति [15]॥९॥

---

[1] व नास्ति M.; धातुयो व, E.; धातुसो याव, D. [2] समिस्सन्ति, B.M. [3] समेन्ति, C.D.E.P.Pa. [4] एतम्° केवलं M. [5] वनतो, B.C.P.Pa. [6] भिज्जति B. [7] परित्त, C. [8] दारुं, B; दारु, C. [9] कुसीतं, B. (इ); C. [10] °जीवो, M.; °जीवि, C. D.E. P. Pa.; °जिवि, B. [5] वि M. P. Pa. A.; प स्°, C.; स स्°, D.E. (E. प); संस्°, B. [11] °वीरियं, C. D. E. M.; °विरियं, B.P.Pa. [12] विवित्तेहि, B.; पविचित्तेहि, D.E. [13] झायिभि, M.; ज्झायिभि, B.P.Pa.; झायिहि, C.D.E. [14] °विरिय्°, सर्वत्र [15] अयम्° केवलं M.

७९—परिहाण-सुत्तं [३।३।१०]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो मे भिक्खवे धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे तयो? इध भिक्खवे सेखो[3] भिक्खु कम्मारामो होति कम्मरतो[4] कम्मारामतमनुयुत्तो, भस्सारामो होति भस्सरतो भस्सारामतमनुयुत्तो, निद्दारामो होति निद्दारतो निद्दारामतमनुयुत्तो। इमे खो भिक्खवे तयो धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। तयो–मे भिक्खवे धम्मा सेखस्स[2] भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे तयो? इध भिक्खवे सेखो[3] भिक्खु न कम्मारामो होति न कम्मरतो[5] न कम्मारामतमनुयुत्तो, न निद्दारामो होति न निद्दारतो न निद्दारामतमनुयुत्तो। इमे खो भिक्खवे तयो धम्मा सेखस्स[6] भिक्खुनो अपरिहा नायसंवत्तन्तिति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[7]।

कम्मारामो भस्सरतो निद्दारामो च उद्धतो[8]।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[9] सम्बोधिमुत्तमं॥
तस्मा हि अप्पकिच्चस्स अप्पमिद्धो अनुद्धतो[10]।
भब्बो सो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[9] सम्बोधिमुत्तमन्ति॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[11] ॥१०॥

ततियो वग्गो

उद्दानं

द्वे दिट्ठि (७०, ७१) निस्सरणं (७०) रूपं (७३)
पुत्तो (७४)म्र ट्ठिकेन (७५) च।
सुखा (७६) च[12] भिन्दना[13] (७७) धातु (७८)
परिहानेन (७९) ते दसाति॥

---

[1] वुत्तं° केवलं M. [2] सेक्खस्स, D.E. [3] सेक्खो, D.E. [4] °आरतो, B. [5] °आरतो, B.P. Pa. [6] °आरतो, Pa. [7] सेक्खस्स, D.E. [8] एतम्° केवलं M. [9] उद्धतो, B. [10] फुट्ठुं, M.; फुट्ठं B.P.Pa.; पुट्ठं, C.D.E., द्र० सुत्त ३४. [11] अनन्धतो, D.E. [12] अयं° केवलं [13] व, C.; प, D.E. [14] भिल्वना, B.C.M.; भिदुरा D.E.; भिरुवा, P.Pa.

चतुत्थो वग्गो

८०—वितक्क-सुत्तं [तिक, ४।१]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो मे भिक्खवे अकुसलवितक्का[2]। कतमे तयो? अनवञ्जत्तिपटिसंयुत्तो[3] वितक्को, लाभसक्कारसिलोकपटिसंयुत्तो[4] वितक्को, परानुद्दयतापटिसंयुत्तो[5] वितक्को। इमे खो भिक्खवे तयो अकुसलवितक्का[6] ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[7]:

अनवञ्ञत्तिसंयुत्तो[8] लाभसक्कारगारवो।
सहनन्दि[9] अमच्चेहि[10] आरासंयोजनक्खया॥
यो च पुत्ते पसुं हित्वा[11] विवासो[12] सङ्गहानि[13] च।
भब्बो सो तादिसो[14] भिक्खु फुट्ठुं[15] सम्बोधिमुत्तमन्ति॥१॥

८१—सक्कार-सुत्तं [तिक, ४।२]

दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[16]; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता

[1] वुत्त° केवले M. [2] अकुसला वि°, D.E. [3] °सञ्जत्तो, P.Pa.; °संञत्तो, D.E. [4] °सञ्जुत्तो, P.Pa. [5] परानुदयता°, B.M.P.; °ताय, Pa.; °सञ्जुत्तो, P.Pa. [6] अकुसला वि, D.E.M.Pa. [7] एतम्° केवलं M. [8] °सञ्जुत्तो, D.P.Pa.; °ञ्ञ°, C.; °ञ्°, E. [9] सहनन्दि D.E.M.P.Pa.; °नन्ति, B.; समानन्ति, C. [10] अमच्चेति, C. [11] पुत्त, M. Aa.; यो च पसुं भित्वा, D.E. [12] विवाहे, D.E.M.P. [13] सङ्घहानि, B.C.; सन्तहानि, B.E.; सन्ताह° D.; सङ्घहानि, P.Pa.; संहरानि, M.A. पाठान्तरं, किन्तु Ms. अशुद्धः A मतेन (="परिक्खाराणि"), किन्तु सुन्दरतरं सङ्ग-हानि। [14] अभब्बोतादिसो C. [15] फुट्ठुं, M.; फुट्ठं, B.P.Pa.; पुट्ठुं, C.D.E.; द्रष्टव्यं सुत्तं ३४. [16] उप्पन्ना, D.E. सर्वत्रेह सुत्ते.

असक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं[1] विनिपातं निरयं[2] उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना[3]। तं खो पनाहं भिक्खवे न अञ्ञस्स[4] समणस्स वा ब्राह्मणस्स[5] वा सुत्वा वदामि:[6] दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता असक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा पर म्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना। अपिच भिक्खवे यदेव मे सामञ्ञातं[7] सामं दिट्ठं सामं विदितं तदेवाहं वदामि: दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता असक्कारेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; दिट्ठा मया भिक्खवे सत्ता सक्कारेन च असक्कारेन च तदुभयेन अभिभूता परियादिन्नचित्ता कायस्सभेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना ति ।

यस्स सक्करीयमानस्स[8] असक्कारेन चूभयं ।
समाधि न विकम्पति[9] अप्पमादविहारिनो[10] ॥
तं[11] झायिनं[11] साततिकं[12]
सुखुमदिट्ठिविपस्सकं[13] ।
उपादानक्खयारामं[14] आहु सप्पुरिसो इतीति ॥२॥

---

[1] P.Pa. नास्ति सर्वत्र ˘ दुग्गतिं इह [2] निरियं, B.P.Pa. अत्रान्यत्र चेह-सुत्ते। [3] उप्पन्ना ति, D.E.; C. नास्ति तृतीयं दिट्ठा ..... उपपन्ना। [4] नाञ्ञ-स्स, M. [5] ब्रह्म°, B.P.Pa. [6] M. नास्ति द्वितीयं बुद्ध [7] यदेवस्स मे सामं जातं, P.Pa. [8] सक्करीय्° D.;°इय्°, E.M.; सक्कारिय्°, B.C.; सक्कारेय्°, P.Pa. [9] समाधिना वि° B.C.; विकमति, C.; समाधिन्न विकप्पति, P.Pa. [10] अपमाद°, P.; अप्पमान°, D.E.; अपमाण°, Pa. [11] तज्झायिनं, P.Pa. °अनं, C. [12] साततियं, M.; साचारिकं, C.P.Pa.; भाससतियं, B. [13] सुखुं वि°, B.C.D.E.P.M., विट्ठिपस्सकं, B.; सुखविट्ठि विप्, Pa. [14] उपादानक्ख° D.E. M.; उपादानं, B.C.; उपादानक्ख,° P.Pa.

८२—सद्द-सुत्तं [तिक. ४।३]

तयो मे भिक्खवे देवेसु दवेसद्दा निच्छरन्ति समया समयं उपादाय। कतमे तयो? यस्मिं[1] भिक्खवे समये अरियसावको केसमस्सुं ओहारेत्वा[2] कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं[3] पब्बज्जाय चेतेति, तस्मिं भिक्खवे[4] समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको मारेन[5] सद्धिं सङ्गामाय चेतेतीति। अयं भिक्खवे पठमो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। पुन च परं भिक्खवे यस्मिं समये अरियसावको सत्तन्नं बोधिपक्खियानं[6] धम्मानं भावनानुयोगमनुयुत्तो विहरति, तस्मिं भिक्खवे समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको मारेन[5] सद्धिं सङ्गामेतीति। अयं[7] भिक्खवे दुतियो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। पुन च परं भिक्खवे यस्मिं समये अरियसावको आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं[8] दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं भिक्खवे समये देवेसु देवसद्दो निच्छरति: एसो अरियसावको विजितसङ्गामो, तमेव सङ्गामसीसं अभिविजिय[9] अज्झा वसतीति। अयं भिक्खवे ततियो देवेसु देवसद्दो निच्छरति समया समयं उपादाय। इमे खो भिक्खवे तयो देवेसु देवसद्दा निच्छरन्ति समया समयं उपादाया[10]ति।

> दिस्वा[11] विजितसङ्गामं सम्मासम्बुद्धसावकं[12]।
> देवता पि नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं॥
> नमो ते पुरिसाजञ्ञा[13] यो त्वं दुज्जयमज्झभू[14]।
> जेत्वान मच्चुनो सेनं[15] विमोक्खेन अनावरं[16]॥

[1]यम्पि, B. [2]ओहायापेत्वा, B. [3]अनाग°, B.Pa. [4]भि°, केवलं M. [5]मानेन, C. [6] A. पाठान्तरं °पक्खिकानं द्रष्ट० सुत्त ९७ [7]अयम्पि, D.E. [8]नास्ति B. द्रष्टव्यं ९७ च पुग्गलपञ्ञत्ति III. 1. [9] °विजय, P.Pa.; °विज्जिय, C.; विज्झय, B. [10] इमे खो...... उपादाय, नास्ति D.E.

[11] दिस्वा च, P.Pa. [12] °सम्बुद्धस्स सावकं, D. [13] °ञ्ञं, D.E.; पुरिसजञ्ञा, B.

[14] अज्झभू, M. च A.; अज्झभि, P.Pa.; अज्झगं, C.; त्वं नुदुज्जमच्चगू, B.; त्वा दुज्जयमज्जयि, D.E. [15] जेत्वा मनोभुनो सेनं, M. [16] अनावरं, M.P. A. (अञ्ञेहि आवरितुं पटिसेधेतुं असक्कुनेय्यत्ता), अनासवं, C.D.E.; अनासवा, B. (पाठान्तर आनसव?).

इति हेतं नमस्सन्ति देवता पत्तमानसं[1] ।
तञ्हि तस्स नमस्सन्ति येन मच्चुवसं वजे ति ॥३॥

८३—चवमान-सुत्तं [तिक. ४।४]

यदा भिक्खवे देवो देवकाया चवनधम्मो होति पञ्च[2] पुब्बनिमित्तानि पातुभवन्ति । माला[3] मिलायन्ति, वत्थानि किलिस्सन्ति, कच्छेहि सेदा मुच्चन्ति[4], काये[5] दुब्बण्णियं ओक्कमति[6], सके देवो[7] देवासने नाभिरमतीति[8] । तमेनं[9] भिक्खवे देवा[10] चवनधम्मो अयं देवपुत्तोति इति विदित्वा तीहि वचाहि अनुमोदन्ति:[11] इतो भो सुगतिं गच्छ, सुगतिं गन्त्वा सुलद्धलाभं[12] लभ,[12] सुलद्धलाभं[13] लभित्वा सुप्पतिट्ठितो भवाहीति[14] । एवं वुत्ते अञ्जतरो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच । किन्नु[15] खो भन्ते देवानं सुगतिगमनसङ्खातं[16], किञ्च[17] भन्ते देवानं सुलद्धलाभसङ्खातं[17], किं पन भन्ते देवानं सुपतिट्ठितसङ्खात[17]न्ति ? मनुस्सत्तं खो भिक्खवे[18] देवानं सुगतिगमनसङ्खातं[17] । यं मनुस्सभूतो समानो तथागतप्पवेदिते धम्मविनये सद्धं[19] पटिलभति, इदं खो भिक्खवे[20] देवानं सुलद्धलाभसङ्खातं[17] । सा खो पनस्स सद्धा निविट्ठा[21] होति, मूलजाता पतिट्ठिता, दळ्हा असंहारिया समणेन वा ब्राह्मणेन[22] वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं[23], इदं खो भिक्खवे[20] देवानं सुप्पतिट्ठितसङ्खा[17]तन्ति ।

यदा देवो देवकाया चवति आयुसङ्खया[17] ।
तयो सद्दा निच्छरन्ति देवानं अनुमोदतं[24] ॥

[1] सत्तमानसं, C.; सत्ताम्°, B. [2] पञ्चस्स, B.M.P.Pa. [3] मालानि, B.C. [4] मुञ्चन्ति, D.E.; अट्ठकथाहस्तलेखे । [5] काय, D.E. [6] °अन्ति, C.D.E. [7] त्य० C. [8] इति त्य० D.E. [9] तमेनं, B.; तमेन, P.; तमे, D.E.; कतमो, C.Pa. [10] वेवो, C.D.E. [11] अनुमोवेन्ति, B. C. M. [12] नास्ति C.Pa.; सु सुग्गति गन्ता लद्ध लाभं, B. (नास्ति लभ). [13] सुलद्ध ल्°, B. [14] भगवाहीति, B.; भवाहि, C. [15] किं नु, B.M. P.Pa. [16] °संख्°, C.D.E. [17] किञ्च, M.; किञ्चि, C.D.E.P. Pa.; किच्चि, B. [18] भिक्खु, B.C.M.P. [19] सद्दं, B.; सच्चं, C. [20] भिक्खु, M. [21] निविद्धा, B. [22] ब्रह्म°, B.P.Pa. [23] लोकस्मिन्ति, B.C.M. [24] अनुमोदयं, B.C.M.

इतो भो सुगतिं[1] गच्छ मनुस्सानं सहब्यतं[2]
मनुस्सभूतो[3] सद्धम्मे लभ सद्धं अनुत्तरं ॥
सा[4] ते सद्धा निविट्ठस्स[5] मूलजाता पतिट्ठिता।
यावजीवं असंहीरा सद्धम्मे सुप्पवेदिते ॥
कायदुच्चरितं हित्वा वचीदुच्चरितानि च।
मनोदुच्चरितं हित्वा यञ्चञ्ञं दोससञ्हितं[6] ॥
कायेन कुसलं कत्वा वाचाय कुसलं वहुं।
मनसा कुसलं कत्वा अप्पमाणं निरुपधि[7] ॥
ततो ओपधिकं[8] पुञ्ञं कत्वा दानेन तं वहुं।
अञ्ञे पि मच्चे सद्धम्मे ब्रह्मचरिये निवेसये[9] ॥
इमाय अनुकम्पाय देवा देवं यदा[10] विदू।
चवन्तं[11] अनुमोदन्ति[12] एहि देव पुनप्पुनन्ति[13] ॥४॥

८४—लोक-सुत्तं [तिक, ४।५]

तयो मे पुग्गला लोके उप्पज्जमाना उप्पज्जन्ति वहुजनहिताय वहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय,[14] अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। कतमे तयो? इध भिक्खवे तथागतो लोके उप्पञ्जति अरहं, सम्मासम्बुद्धो, विज्जाचरणसमपन्नो, सुगतो, लोकविदू, अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि, सत्था देवमनुस्सानं, बुद्धो भगवा[15]। सो धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं

[1] सुग्गति, P. [2] सहब्यतं, B.C.M.P.Pa. [3] °भूते, B.C. [4] सी, D.E.; या, C. [5] निविट्ठस्सा ति निविट्ठा भवेय्य, A.; जिविट्ठस्स, D.E. [6] सञ्हितं, D.E.M.; संह्°, B. द्र० सुत्तं ३१ [7] नास्ति - सत्रि केवल A. निरुपधिन्ति निरुपधि ऋते ऊ, C.D.E.M. [8] ओपधिकं, C.M.P.A.; उपधिकं, D.E.Pa.; उपधितं, B.;Pa. अशुद्धं (ओपधिकं ?) हतेःप्राक् ततो वोमद्दमुपधिकं। [9] निवेसये, B. C.; निवेसय, D.E.; निवेसयं, Pa. (P.?). [10] सदा, C. [11] चवनं, D.E. [12] अनुमोदेन्ति, C.M. [13] पुनपु,° P.Pa.; पुनपुन,° B.; एहि नेहिव, D.E. [14] °कम्पकाय, D.E. [15] भगवाति, D.E.

सात्थं[1] सव्यञ्जनं[2] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयं भिक्खवे पठमो पुग्गलो लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं। पुन च परं भिक्खवे तस्सेव सत्थु सावको अरहं होति खीणासवो वुसितवा कतकरणीयो, ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो परिक्खीणभवसंयोजनो सम्मदञ्ञाविमुत्तो[3]। सो[4] धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं[1] सव्यञ्जनं[5] केवल-परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयम्पि भिक्खवे दुतियो पुग्गलो लोके उपज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं, पुन च परं[6] भिक्खवे तस्सेव सत्थु सावको सेखो[7] होति पाटिपदो बहुस्सुतो सीलवतूपपन्नो[8]। सोपि धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं[1] सव्यञ्जनं[9] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। अयम्पि भिक्खवे ततियो पुग्गलो लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं[10]। इमे खो भिक्खवे तयो पुग्गला लोके उप्पज्जमाना उप्पज्जन्ति बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय सुखाय देव-मनुस्सानन्ति[11]।

सत्था हि लोके पठमो महेसि तस्सन्वयो सावको भावितत्तो।
अथापरो पाटिपदो पि सेखो[12] बहुस्सुतो सीलवतूपपन्नो[13]॥
एते तयो देवमनुस्ससेट्ठा[14] पभंकरा[15] धम्ममुदीरयन्ता[16]।
अपावुणन्ति[17] अमतस्स द्वारं योगापमोचेन्ति[18] बहुजनं[19] ते[19]॥

[1] सत्थं, M.P.; द्वितीयपंक्तो Pa. [2] °व्यञ्ज°, B.M.P.Pa. [3] सम्माद्°, B.P.Pa. [4] यो, C. [5] °व्यञ्ज्°, B.C.M.Pa. [6] पुनचरं, P.Pa. [7] सेक्खो, D.E. [8] °वतुपप्°, B.P. [9] °व्यञ्ज°, B.C.M.P.Pa. [10] °मनुस्सानन्ति, D.E. [11] C. नास्ति (इमे...... °मनुस्सानन्ति), योजपतिअशुद्धः उप्पज्जमानो उप्पञ्जति। [12] सेक्खो, D.E. [13] °उपप्°, B. [14] °मनुस्सा स्°, B.D.E. [15] पभङ्क°, B.M.P.Pa. [16] उविर-यन्ता, M.; °ईरियन्तो, D.E.;—उविस्सयन्तो, C.;—उनिविस्सयन्तो, B.;—उविदस्सन्तो, P.; उविवंस्सन्तो, Pa. [17] अपावुणन्ति ननु; अपामुणन्ति, B.; अपापुनेन्तीति उग्घाटेन्ति, A.; अपापुरेन्ति, M.; अपापुरन्ति, C.D.E.P.Pa. [18] पमोचेन्ति, P.Pa.; पमोचन्ति, C.D.E.; पमुञ्चन्ति, B.M. [19] बहुजनं ते, Pa.; °जनन्ते, B.; °ञ्जनन्ते, M.; °जण ते, D.; °जना ते, C.E. च P. ?).

सत्थवाहेन[1] अनुत्तरेन सुदेसितं मग्गमनुक्कमन्ति[2]।
इधेव दुक्खस्स करोन्ति अन्तं ये अप्पमत्ता सुगतस्स सासने ति ॥५॥

८५—असुभ-सुत्तं [तिक. ४।६]

असुभानुपस्सी भिक्खवे कायस्मि विहरथ, आनापानसति[3] च वो[4] अज्झत्तं परिमुखं सूपट्ठिता[5] होतु[6] सब्बसंखारेसु अनिच्चानुपस्सिनो विहरथ[7]। असुभानुपस्सीनं भिक्खवे कायस्मि विहरतं[8] यो सुभाय धातुया रागानुसयो सो पहीयति[9]। आनापानसतिया[10] अज्झत्तं परिमुखं सूपट्ठिताय[11] ये

बाहिरा वितक्कासया[12] विघातपक्खिका ते न होन्ति। सब्बसंखारेसु अनिच्चानुपस्सीनं विहरतं या अविज्जा सा पहियति,[13] या विज्जा सा उप्पज्जतीति।

असुभानुपस्सी कायस्मि आनापाने[14] पतिस्सतो[15]।
सब्बसंखारसमथं पस्सं आतापी[16] सब्बदा ॥
स वे[17] सम्मद्दसो[18] भिक्खु यतो तत्थ विमुच्चति।
अभिञ्ञावोसितो सन्तो स वे[19] योगातिगो[20] मुनीति ॥६॥

८६—धम्म-सुत्तं [तिक. ४।७]

धम्मानुधम्मपटिपन्नस्स भिक्खुनो अय[21]मनुधम्मो होति, वेय्याकरणाय[22] धम्मानुधम्मपटिपन्नो, यन्ति,[23] भासमानो धम्मञ्ञेव भासति नो अधम्मं,

[1] सत्त,° C.D.E.P. [2] अनुग्गमन्ति, M. [3] आणापाणा स्°, B. [4] °सति चरो, D.E.; °सति ते, C. [5] सु°, सर्वत्र; सुपतिट्ठिता, B.C.P. [6] होतु ति, P.&Pa.; होति, C.; होथ, M.; होन्ति, B. [7] विहरथ, P.Pa.; नास्ति B.C.D.E. [8] विहरथ, B. [9] पहिय्यति, B.M.P.Pa.; पहिय्यति, C. [10] आनापाणास्°, B. [11] सु° सर्वत्र; सुपतिट्ठिताय, B.C.Pa. [12] °आसिया, B.C.; वितक्का विसया, D.E. [13] पहियति, C.; पहिय्यति, B.M.P.Pa. [14] आणायान, D.; आनायाण, E. [15] सतिसतो, D.E.; सतियतो, B.C. [16] °इ सर्वत्र हस्तलेखे [17] वे, D.E.M.; चे, B.C.P.Pa. [18] सम्मदस्सो, M.P.Pa.; सम्प°, B.; सम्मदसो, C.; समद्दसो, D.E. [19] स वेय्यगातिगो, P.; स वे योगातितो, D.E.; स चे योगाति (नास्ति गो मुनीति), Pa.; °सङ्गातिगो, B.M.; °गा, C. चरमा गाथा सू सुत्ते ५३ च ७२ [20] नास्ति P.Pa. [21] °करणस्स, C.; °करणियं, P.Pa. [22] धम्मानुधम्मपटिपन्नो, यन्ति केवलं M. च Aa., न चैतद० येषु हस्त

वितक्कयमानो वा[1] धम्मवितक्कञ्ञेव वितक्केति नो अधम्मवितक्कं, तदुभयं अभिनिवज्जेत्वा[2] उपेक्खको[3] विहरति सतो सम्पजानो ति।

धम्मारामो धम्मरतो धम्मं अनुविचिन्तयं[4]।
धम्मं अनुस्सरं भिक्खु सद्धम्मा न परिहायति[5]॥
चरं[6] वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उदवा सयं।
अज्झत्तं समयं चित्तं सन्तिमेवाधिगच्छतीति॥७॥

८७—अन्धकार-सुत्तं [तिक. ४।८]

तयो-मे भिक्खवे अकुसलवितक्का[7] अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा पञ्ञानिरोधिका[8] विघातपक्खिका अनिब्बानसंवत्तनिका[10] कतमे तयो? कामवितक्को भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको[8] विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। व्यापादवितक्को[9] भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको[8] विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। विहिंसावितक्को भिक्खवे अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको[10] विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको। इमे खो भिक्खवे तयो अकुसलवितक्का[7] अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा पञ्ञानिरोधिका[10] विघातपक्खिका अनिब्बानसंवत्तनिका। तयो-मे भिक्खवे कुसलवितक्का[11] अनन्धकरणा चक्खुकरणा ञाणकरणा पञ्ञावुद्धिका[10] अविघातपक्खिका निब्बानसंवत्तनिका। कतमे तयो? नेक्खम्मवितक्को[11] भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको[8] अविघातपक्खिको निब्बानसंवत्तनिको। अब्यापादवितक्को[9] भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको अविघातपक्खिको निब्बानसंवत्तनिको। अविहिंसावितक्को भिक्खवे अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो पञ्ञावुद्धिको[8] अविघातपक्खिको

[1] पन, D.E.P.Pa. [2] अभिनिवज्जेत्वा, B.M. P.Pa.; अभिज्जेत्वा, C.; अतिनिवञ्ज्°, D. E.; A. अभिनिवत्तेत्वा, व्याख्याति ········ अकत्वा। [3] उपेक्खको, D. E.

[4] °चिन्तियं, C.; चिन्तरं, B. [5] परिहायीति, D.E. [6] परं, D.E.; गाथा याःपूर्वार्द्ध सुत्ते ११० अङ्ग-निक, निपाते ११ [7] अकुसला व्°, D. E.P.Pa. [8] सञ्ञा°, C. [9] सत्रि ब्य्°। [10] सञ्ञा° B.C. [11] इमा, P.Pa. [12] कुसला व्°, D.E. [13] निक्ख्°, B.C.; निक्खम°, M.

निब्बानसंवत्तनिको। इमे खो भिक्खवे तयो कुसलवितक्का[1] अनन्धकरणा चक्खुकरणा ञाणकरणा पञ्ञावुद्धिका[2] अविघातपक्खिका निब्बानसंवत्तनिकाति।

तयो वितक्के[3] कुसले वितक्कये[4] तयो पन अकुसले निराकरे[5]।
स वे[6] वितक्कानि[7] विचारितानि[7] समेति वुट्ठिव[8] रजं[8] समूहतं।
स वे[9] वितक्कूपसमेन[10] चेतसा इधेव सो सन्तिपदं समज्झगाति[11] ॥८॥

८८—मल-सुत्तं [तिक. ४।९]

तयो-मे भिक्खवे अन्तरा माला अन्तरा आमित्ता अन्तरा सपत्ता अन्तरा वधका अन्तरा पच्चत्थिका। कतमे तयो? लोभो भिक्खवे अन्तरा मलो अन्तरा अमित्तो अन्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको। दोसो भिक्खवे अन्तरा मलो अन्तरा अमित्तो अन्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको। मोहो भिक्खवे अन्तरा मलो अन्तरा अमित्तो अन्तरा सपत्तो अन्तरा वधको अन्तरा पच्चत्थिको। इमे खो भिक्खवे तयो अन्तरा मला अन्तरा अमित्ता अन्तरा सपत्ता अन्तरा वधका अन्तरा पचत्थिका ति।

अनत्थजननो लोभो लोभो चित्तप्पकोपनो[12]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
लुद्धो अत्थं न जानाति लुद्धो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[13] तमं[13] तदा होति यं लोभो सहते नरं॥

[1] कुसला व्°, D.E. [2] सञ्ञा°, C. [3] वितक्कये, P. [4] वितक्कये, M.Aa. वितक्के, B.C.D.E.P.Pa. [5] नियाकरे, C. [6] चे, B.C.M.; Om. Pa. [7] विचारितानि, M.; विहारितानि, D.E.; विचारिकानि, B.C.P.Pa.; C. योज्यते ता; B.Pa. add तानि, वितक्कानि इति सर्वत्र हस्त०.; वितक्क, विचार, वितक्कितं, विचारितं संयुज्यते ब्रह्मजालसुत्तं, ed. Grimblot, p. 46 (द्र० अट्ठकथा P.T.S. 1886. p. 121). [8] वुट्ठीव, M.; वुट्ठिव, D.E.P.; वुद्धिविरजं, B.C.; वुत्तिविरजं, Pa. [9] चे. B.C.M. [10] वितक्कुप्°, B.M.P.Pa.; वितक्काप्°, D.E.; B. adds च. [11] सम्मज्जगा ति, B. [12] चित्तप°, M. [13] अन्तधमं, B.M.P.

यो च लोभं पहन्त्वान[1] लोभनेय्ये न लुब्भति।
लोभो पहीयते[2] तम्हा[3] उदबिन्दु[4] व पोक्खरा॥
अनत्थजननो दोसो दोसो चित्तप्पकोपनो[5]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
दुट्ठो अत्थं न जानाति दुट्ठो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[6] तमं[6] तदा होति यं दोसो सहते नरं॥
यो च दोसं पहन्त्वान[1] दोसनेय्ये न दुस्सति।
दोसो पहीयते[2] तम्हा[3] तालपक्कं[7] व[7] बन्धना॥
अनत्थजननो मोहो मोहो[8] चित्तप्पकोपनो[5]।
भयमन्तरतो जातं तं जनो नावबुज्झति॥
मूळ्हो अत्थं न जानाति मूळ्हो धम्मं न पस्सति।
अन्धं[6] तमं[6] तदा होति यं मोहो सहते नरं॥
यो च मोहं पहन्त्वान[9] मोहनेय्ये न मुय्हति।
मोहं विहन्ति सो सब्बं आदिच्चो वुदयं[10] तमन्ति॥९॥

८९—देवदत्त-सुत्तं [तिक. ४।१०]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहताति मे सुतं[12]। तीहि भिक्खवे असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्नचित्तो[13] देवदत्तो आपायिको[13] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। कतमेहि तीहि? पापिच्छताय भिक्खवे अभिभूतो परियादिन्नचित्तो[14] देवदत्तो आपायिको[1] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। पापमित्तताय भिक्खवे अभिभूतो

[1]पहत्वाना D.E. Aa. [2]पहियते, B.C.M. [3]तम्हा, D.E.Aa., तस्मा, B.C.M.P.Pa. [4]उदकब्°, B. [5]चित्तप°, M. [6]अन्धतमं, B M.P. [7]तालपक्कं व, M.; °पक्कमिव अन्यत्र ह० [8]होति, D.E.

[9]पहत्वान, D.E. [10]वुदय, B.P.Pa.; बुधयं, C.; उदयं, D.E. [11]गमन्ति, D.E. [12]वुत्तं°, एतमत्थं° केवलं in M. [13]B., M. सर्वदा परियाविण्ण° अस्मिन् सूत्रे, अन्यत्र ह० सकृद् न्न अन्यदा ण्ण, [14]अपाय्°, B.C.P. Pa.

परियादिन्नचित्तो[1] देवदत्तो आपायिको[2] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो। सति[3] खो पन उत्तरिकरणीये[4] ओरमत्तकेन[5] विसेसाधिगमेन[6] च अन्तरा वोसानं आपादि[7]। इमेहि[8] खो भिक्खवे तीहि असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्न-चित्तो[4] देवदत्तो आपायिको[9] नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[10]:

मा जातु कोचि लोकस्मिं पापिच्छो उपपज्जथ[11]।
तदमिना[11]पि जानाथ पापिच्छानं यथा गति॥
पण्डितो ति समञ्ञातो[12] भावितत्तो[13] ति सम्मतो।
जलं[14] वा यससा अट्ठा[15] देवदत्तो ति मे सुतं॥
सो पमादमनुचिन्नो[16] आपज्ज[17]नं तथागतं।
अवीचिनिरयं पत्तो[18] चतुद्वारं भयानकं॥
अदुट्ठस्स हि यो[19] दुब्भे[20] पापकम्मं अकुब्बतो[21]।
तमेव पापं फुस्सेति[22] दुट्ठचित्तं अनादरं॥
समुद्दं[23] विसकुम्भेन[24] यो मञ्ञेय्य पदूसितुं।
न सो[25] तेन पदूसेय्य तस्मा[26] हि उदधि[27] महा[28]॥
एवमेतं[29] तथागतं यो वादेन विहिंसति[30]।

[1]अपाय्°, C.D.E.P.Pa. [2]अपाय्°, C.D.P.Pa. [3]सति, D.E.M. तिहि, B.P.Pa.; तीहि, C. [4]उत्तरक्°, D.E.; उत्तरिकरणियेन, P.Pa. [5]°मत्तके, D. E. [6]°धिकमेन, C. [7]आयादि, D.E.Aa.; आयाति, C.; आपज्जि, B.; आपज्जति, M. [8]इमे, B.C.M. [9]अपाय्°, C.D.Pa. [10]उपपज्जति, M. [11]तदामिना, B. [12]समञ्जतो, Pa.; सामञ्जतो, B. [13]°अत्थो, B.C. [14]जालं, B.C. [15]अट्ठा, M.; अद्धा, B.C.P.Pa.Aa. (व्याख्यायते ठितो); अत्था, D.E. [16]पमादम्, D.E.P.Pa.; पमादं, B.C.; अनुचिन्नो, C.; पमाणमनुचिण्णो, M.Aa. किन्तु A. पुस्तके पमादमनुयुञ्जि इति पाठांतरं [17]आपज्ज, B.C.Aa.; आसज्ज, M.P.Pa.; आलज्ज, D.E. [18]युत्तो, C. [19]रो, C. [20]दुब्भे,D.E.M.P. Pa.; दुब्भो B.C.; दुब्भो, (?) ति दुस्सेय्य A. [21]अकु- प्पतो, B.C. [22]फुस्सेति, C. (फस्सेति इति स्थाने); फुसेति, P.Pa.; फुस्सति, B.; फुसति, D.E.M. [23]समन्त, B.; पसम, C. [24]वीस°, M.; विसकुज्जेन, B.; वीसकुज्जेन, C. [25]यो, C. [26]भेस्मा (?) D.E.M. [27]उदधी, C.D.E.M.; °इ, B.P.Pa. [28]मता, B. [29]एवमेव, M. [30]विहीसति, C; विहिसति, P.

सम्मग्गतं[1] सन्तचित्तं वादो तम्हि[2] न रूहति[3] ॥
तादिसं मित्तं कुब्बेथ[4] तञ्च[5] सेवेय्य पण्डितो।
यस्स मग्गानुगो[6] भिक्खु खयं दुक्खस्स पापुणे ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[7] ॥१०॥

चतुत्थो वग्गो

तस्स उद्दानं:[8]

वितक्का (८०) सक्कार (८१) सद्दा[9] (८२)
चवमान[10] (८३) लोके[11] (८४) असुभं[12] (८५)।
धम्म (८६) अन्धकार (८७) मलं (८८)
देवदत्तेन[13] (८९) ते[14] दसाति[14] ॥

---

[1] समग्ग॰, B.C.M.P.Pa. [2] तम्बि, C. [3] वुहति, B. [4] कुब्बति, C.; कुब्बेथ, M.;Pa.; कुप्पेथ, B.; कुपेथ, P. [5] तञ्चे। [6] ॰आनुभो, B. [7] अयम्पि,॰ केवलं M. [8] उद्दानं—स्तोक मेवाशुद्धं C. तृतीयः पादः समानः सर्वत्र ह॰ [9] सद्ध, D.E.; सन्त, B.P.; सम्मं, C.; नास्ति Pa. [10] ॰णं, P.Pa. वचमाला, B. [11] लोको, B.D.E.Pa. [12] असुभ, B.D.E.M.P.; असुरा, Pa. [13] देवदत्तो ति, B.M. [14] तेरस, B.

पंचमो वग्गो

९०—पसाद-सुत्तं [तिक. ५।१]

*वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। तयो-मे भिक्खवे अग्गप्पसादा[2]। कतमे तयो? यावता भिक्खवे[3] सत्ता अपदा[4] वा द्विपदा[5] वा चतुप्पदा[6] वा बहुप्पदा[7] वा रूपिनो वा अरूपिनो वा सञ्जिनो वा असञ्जिनो वा नेवसञ्जिनासञ्जिनो वा, तथागतो तेसं अग्गमक्खायति य[8] दिदं[8] अरहं-सम्मासंबुद्धो। ये भिक्खवे बुद्धे पसन्ना अग्गे[1] ते[1] पसन्ना[1], अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होति। यावता भिक्खवे धम्मा संखता वा असंखता वा विरागो तेसं अग्गमक्खायति, यदिदं मदनिम्मद्दनो[9] पिपासविनयो आलयसमुग्घातो वट्टुपच्छेदो तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं[10]। ये भिक्खवे विरागे धम्मे पसन्ना अग्गेते पसन्ना, अग्गे खो पन[11] पसन्नानं अग्गो[12] विपाको होति। यावता भिक्खवे संघा वा गणा वा, तथागतसावकसंघो[13] तेसं अग्गमक्खायति, यदिदं चत्तारि[14] पुरिसयुगानि[15] अट्ठ पुरिसपुग्गला, एस भगवतो सावकसंघो आहुनेय्यो[16] पाहुणेय्यो[17] दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो[18] अनुत्तरं पुञ्जक्खेत्तं[19] लोकस्स[20]। ये भिक्खवे संघे पसन्ना अग्गे ते पसन्ना' अग्गे खो पन[21] पसन्नानं[21] अग्गो[22] विपाको होति। इमे खो भिक्खवे तयो अग्गप्पसादा[21] ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति[23]:

[1] वुत्तं°, एतमत्थं°, अयम्पि°, केवलं M. [2] अग्ग°...भिक्खु°, नास्ति C. [3] अपाहा, P.Pa. [4] विप्°, D.E. [5] चतुपनवा, B.M.; नास्ति C. [6] बहुपवा, B.M. [7] नास्ति B.C.M.P.Pa. [8] नास्ति D.E.
[9] °निम्मबनो, B.C.D.E.; मद्दनिम्मद्दनो, P.Pa. [10] निब्बानन्ति, B.M. [11] नास्ति C. [12] अग्गे, C. [13] तथागतस्स सावकं संघो, B. [14] नास्ति B.C. [15] °युग्गानि, B. [16] आहुण्°, B.E.Pa. [17] पाहुण्°, C.D.M.P. [18] °इयो, B.M.; °इय्यो, P.Pa. [19] पुञ्ञक्ख्° B. [20] लोकस्सा ति, D.E. [21] नास्ति B. [22] अग्गयस्,° B.C. M. [23] एतमत्थं,° केवलं M.

*संपूर्ण सुत्तं अङ्गु०-निका० चतुक्कनिपाते ३४

अग्गतो[1] वे पसन्नानं अग्गं धम्मं[2] विजानतं।
अग्गे बुद्धे पसन्नानं दक्खिणेय्ये अनुत्तरे।
अग्गे धम्मे पसन्नानं विरागूपसमे सुखे।
अग्गे संघे पसन्नानं पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे॥
अग्गस्मिं दानं ददतं अग्गं पुञ्ञं पवड्ढति[3]।
अग्गं आयु च वण्णो च यसो कित्ति सुखं बलं[4]॥
अग्गस्स दाता मेधावी[5] अग्ग धम्मसमाहितो।
देवभूतो मनुस्सो वा अग्गपत्तो[6] पमोदतीति[7]॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति॥१॥

---

६ १—जीवित-सुत्तं [तिक. ५।२]

अन्तमिदं भिक्खवे जीविकानं[8] यदि[9]दं[9] पिण्डोल्यं, अभिलापायं[10] भिक्खवे लोकस्मि पिण्डोलो विचरसि पत्तपाणीति। तञ्च खो एतं भिक्खवे कुलपुत्ता उपेन्ति अत्थवसिका[11] अत्थवसं[12] पटिच्च, नेव राजाभिणीता न चोराभिणीता न इण-ट्ठा[13] न भयट्ठा[14] न आजीविका[15] पकता[16]। अपि च खो[17] ओतिण्णम्हा[18] जातिया जराय[19] मरणेन सोकेहि परिदेवेहि दुक्खेहि दोमनस्सेहि उपायासेहि दुक्खाभिकिण्णा दुक्खपरेता, अप्पेव नाम इमस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स अन्तकिरिया[20] पञ्ञायेथाति। एवं पब्बजितो चायं[21] भिक्खवे कुल पुत्तो सो[22]च[22]होति अभिज्झालू[23] कामेसु[24] तिब्बसारागो[25] व्यापन्नचित्तो[25]

[1] अग्गे, C. Pa. गाथाद्वयं नास्ति [2]अग्गधम्मं B.P. [3]पवुड्ढति, B; पवड्डति, M. [4]फलं, B. [5]°ई, M.P. Pa.; °इ, B.C.D.E. [6]अग्गपत्तो, B.M.P.Pa. [7]नास्ति—इति B.C.P. [8]जीवितं, C. [9]नास्ति C. [10]अभियायं, C. अभियायायं, B; अभिसायायं, P.Pa.; °सपायं, M.; अतिसप्पायं, D.E. [11]अत्त°, C. [12]इणट्टा, M. इणद्धा, B.; इनद्दा, C. [13]भयट्टा, M.; भयता, C. [14]आजीविका, D.E.; आजीविक, B.M.P.Pa. आजीवक, C. [15]वकता, D.E.; पणता, B. [16]खो पन, C. [17]ओतिण्णम्हा च, D.E. [18]जरामर्°, B.C. [19]दुक्खातिण्णा, C.Pa.; बुक्खोतिण्णा, B.M.P. [20]°किरियाय, B.C. [21]वायं, D.E.
[22]सो च नास्ति B.C.M.P.Pa. [23]°लू, E.; °लु B.M.P. Pa.; D., C. फकार सदशं ट्ठ कार ञ्ञ. कारयो विर सूक्ष्म वर्तुलरेखा युक्तम् [24]कामेसु च, P.Pa. [25]तिप्प,° P.B.Pa.; तिब्बरागो, C.D.E.; द्र० परतनं सूत्र D.E. पुस्तके विहाय सर्वत्र ब्य्।

पदुट्ठमनसङ्कप्पो मुट्ठस्सति[1] असम्पजानो असमाहितो विभन्तचित्तो पाकतिन्द्रियो। सेय्यथा पि भिक्खवे छवालातं उभतो पदित्तं मज्झे गूथगतं[2]नेव गामे कट्ठत्थं[3] फरति[4]न अरञ्जे तथूपमाहं भिक्खवे इमं पुग्गलं वदामि, गिहि भोगा[5] च परिहीनो सामञ्जत्थञ्च न परिपूरेतीति।

गिहिभोगा च परिहीनो सामञ्जत्थञ्च दुब्भगो[6]।
परिधंसमानो[7] पकिरेति[8] छवालातं व[9] नस्सति॥
सेय्यो अयोगुळो[10] भुत्तो तत्तो अग्गिसिखूपमो।
यञ्चे भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्जतोति॥२॥

६२—संघाटि-सुत्तं [तिक. ५।३]

सङ्घाटिकण्णे[11] चे[11] पि भिक्खवे

भिक्खु[12] गहेत्वा पिट्ठितो[13] अनुबन्धो अस्स पदे पादं निक्खिपन्तो सो च होति अभिज्झालू[14] कामेसु तिब्बसारागो[15] व्यापन्नचित्तो[15] पदुट्ठमनसंकप्पो मुट्ठस्सति असम्पजानो असमाहितो विभन्तचित्तो पाकतिन्द्रियो, अथ खो सो आरका व[16] मय्हं अहञ्च तस्स। तं किस्स हेतु? धम्मं हि सो भिक्खवे भिक्खु न पस्सति धम्मं अपस्सन्तो[17] न[18] मं[18] पस्सति। योजनसते चे पि सो[19] भिक्खवे

[1] मुट्ठसति, M. [2] गूथ, B. गुथ°, P.Pa. [3] कण्ठत्थं, C. [4] परति, C.P. [5] गिही°, C.E.; गीहि°, B. [6] बुभगो, Aa.; बुभवो, B.; बुभतो, D.E. (ऊ कारेण सार्द्धं E.); बुभगत, ., दुग्गतो, M;, दुग्गति, Pa.; °ति, C. [7] परिधंस्°, D.E.M.P.Pa.; परितंसमानो ति विनयमानो, A.; परित्तंस्, B.; परिच्चंस्, C. [8] पकी°, C.M.; परिकि°, B. [9] ब, M.; च, C.D.E.; °लातञ्च, B;P. अत्राशुद्धं, a. पुस्तके शब्द द्वयं नास्ति [10] °गुलो, C.D.E.; गुळो, P.; गुळ्हो, B.M.Pa.—द्वितोया गाथा ४८ सूत्रेपि [11] चे नास्ति D.E. संघाटिकण्णञ्चे, C.

[12] भिक्खुनो, B. [13] पिट्ठितो पिट्ठितो, C.; cp. ब्रह्मजालस्, ed. Grimblot, p. 2. [14] °लु, B.D.P.Pa.; C. इह ९१ सूत्रमिव तदेवाक्षम् [15] तिप्प°, B.P.Pa.; तिब्बरागो, C.D.E. सर्वत्र ह० ब्य°, (द्र० सू० ११) [16] च, B. [17] न पस्स्°, B. [18] मं न, D.E.Pa. [19] मे, D.E.P.Pa.

भिक्खु विहारेय्य, सो च होति अनभिज्झाल[1] कामेसु न तिब्बसारागो[2] अब्यापन्न-चित्तो[3] अप्पदुट्ठमनसंकप्पो[4] उपट्ठितसति सम्पजानो समाहितो एकग्गचित्तो संवुतिन्द्रियो,[5] अथ खो सो सन्तिके व मय्हं अहञ्च[6] तस्स[7]। तं[8] किस्स हेतु? धम्मं हि सो भिक्खवे भिक्खु पस्सति, धम्मं पस्सन्तो मं पस्सतीति।

अनुबन्धो पि चे अस्स महिच्छो[9] व[10] विघातवा।
एजानुगो[11] अनेजस्स निब्बुतस्स अनिब्बुतो।
गिद्धो[12] सो वीतगेधस्स पस्स यावञ्च आरका[13]॥
यो[14] च धम्ममभिञ्ञाय धम्ममञ्ञाय पण्डितो।
रहदो व निवातो च[15] अनेजो[16] वूपसम्मति॥
अनेजो सो अनेजस्स निब्बुतस्स च निब्बुतो[17]।
अगिद्धो[18] वीतगेधस्स पस्स यावञ्च सन्तिकेति॥३॥

६३—अग्गि-सुत्तं [तिक. ५।४]

तयो मे भिक्खवे अग्गी[19]। कतमे तयो? रागग्गि, दोसग्गि, मोहग्गि। इमे खो भिक्खवे तयो अग्गीति।

रागग्गि[20] दहति[21] मच्चे[22] रत्ते[23] कामेसु मुच्छिते।
दोसग्गि पन व्यापन्ने[24] नरे पाणातिपातिनो[25]॥

[1] °लू, E.; °लु, अन्यत्र ह० [2] तिप्प°, B.C.P.Pa. D.E. विहाय सर्वत्र ब्य°, [3] अपदु°, B.C.M. [4] संवुतिन्द्रियचित्तो, B.C. [5] अहञ्चस्स, M.; अहञ्च, B. [6] नास्ति B. [7] महिज्झो, C. [8] च, B.D.E.M. [9] ओजानुगो, D.E.; एजादासो, M.; एजासा, C. [10] यिद्धो, C. [11] Pa. इह तृतीय गाथायाः चरमः पादः, त्यज्यन्तेऽवन्तरिकाः [12] सो, C.M. [13] रहदो उपनिवातो व, P.; वहदो उपनिवातो च, B.C.; वहदो वुपनिवातो, M. (व-च योर्वा विना); रहदो च निवातो च, D.E.; A. व्याख्याति निवातट्ठाणे रहदो विय। [14] अनेजा, B.C. [15] निब्ब° स निब्ब, M.; निब्बुतस्स अनिब्बुतो, B.C.P. [16] अगिद्धो सो, B.M.; अविद्धो सो, C.P. [17] अग्गी, M.; अन्यत्र ह० °इ। [18] रागग्गि धहति, C. [19] मच्चो, B.C. [20] रत्तो, B. C. [21] D. E. विहायान्यत्र ह० ब्य°; ब्यापन्नो, B. C. [22] °पातिने, C; °पातने, B; °पातिके, P. Pa.

मोहग्गि पन सम्मूळ्हे[1] अरियधम्मे अकोविदे[2]।
एते अग्गी अजानन्ता[3] सक्कायाभिरता पजा॥
ते वड्ढयन्ति[4] निरयं तिरच्छानञ्च योनियो[5]।
असुरं पेत्तिविसयञ्च[6] अमुत्ता मारबन्धना[7]॥
ये च[8] रत्तिं दिवा युत्ता सम्मासम्बुद्धसासने।
ते निब्बापेन्ति रागग्गि[9] निच्चं असुभसञ्ञिनो॥
दोसग्गिं[10] पन मेत्ताय निब्बापेन्ति नरुत्तमा।
मोहग्गिं[9] पन पञ्ञाय[11] यायं[12] निब्बेधगामिनी[13]॥
ते निब्बापेत्वा निपका रत्तिन्दिवमतन्दिता[14]।
असेसं परिनिब्बन्ति असेसं दुक्खमच्चगुं[15]॥
अरियद्दसा[16] वेदगुनो[17] सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
जातिक्खयम[18] भिञ्ञाय नागच्छन्ति पुनब्भवन्ति॥४॥

६४—उपपरिक्खय-सुत्तं [तिक. ५।५]

तथा[19] तथा[19] भिक्खवे भिक्खु

[1]संमुळ्हे, B. Pa.; स्मूळ्हो, D.E.; सं°, C.P. (उ); समुळ्हो, B. [2]अकोविदो, C.D.E.; °विधे, P.; °विधो, B. [3]अजानन्तो, P.Pa. [4]वड्ढयन्ति, M.; वड्यहन्ति (?), Pa.; वप्पयहन्ति, P.; वडयिहन्ति, C. [5]योनिया, P.Pa.; योनिसो, C.

[6] असुरं (=असुरनिकायं ?), D.E.M.P.; असुरे, B.Pa.; असुर°, C.; पित्ति,° B.C.M.P.Pa.; °विसयं, नास्ति च, M. [7]मान°, B. [8]नास्ति C. [9] °इं, M.; अन्येषु ह० इं, [10] °इं, M.; °अं, D.E.; अन्येषु ह० °इ। [11]सञ्जाय C. [12]नास्ति D.E. [13] °गामिनं, M. [14]रत्ति दिवा अतन्तिता, B. [15]अच्चगुं, M.; अच्चगू, C.; अज्जगू, B.;अज्झगा, D.E.P.; अञ्चगा, Pa. [16]अरियद्दसा, M.P.; अरियबुसा, D.E.; अरियद्धसो, B.C.; अरियस्स, Pa.; A. हन्तलेखेपि (अरियत्थसा ति, Aa.) अशुद्धिरत्र द्र० सुत्तं ९५ यत्र सैव गाथा उपलभ्यते [17] °गुणो, D.E.P.; गुना, B.; गुणा,C. [18] °म्, M. अन्यत्र ह० [19]तथागता, C.

उपपरिक्खेय्य[1], यथा यथा[2] उपपरिक्खतो[3] वहिद्धा चस्स[4] विञ्ञाणं अविक्खित्तं[5] होति अविसटं[6] अज्झत्तं असण्ठितं[7] अनुपादाय[8] अपरितस्सतो आयतिं[9] जातिजरामरणदुक्खसमुदय—सम्भवो न होतीति।

सत्तसङ्गापहीनस्स[10] नेत्तिच्छिन्नस्स भिक्खुनो।
विक्खीणो[11]जातिसंसारो नत्थि तस्स पुनब्भवोति ॥ ५ ॥

६५—उपपत्ति-सुत्तं [तिक, ५।६]

तिस्सो इमा भिक्खवे कामुपपत्तियो[12]। कतमा तिस्सो? पच्चुपट्ठित-कामा[13] निम्मानरतिनो परनिम्मितवसवत्तिनो[14]। इमा खो भिक्खवे तिस्सो[15] कामुपपत्तियो[12] ति।

पच्चुपट्ठितकामा च ये देवा वसवत्तिनो।
निम्मानरतिनो देवा येचञ्ञे कामभोगिनो॥
इत्थभावञ्ञथाभावं[16] कामभोगेसु पण्डितो[17]।
सब्बे परिच्चजे[18] कामे ये[19] दिब्बा ये च मानुसा॥
पियरूपसातगधितं[20] छेत्वा सोतं[21] दुरच्चयं[22]।
असेसं परिनिब्बन्ति असेसं दुक्खमच्चगुं[23]॥
अरियद्दसा[24] वेदगुनो[25] सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
जातिक्खयम[26]भिञ्ञाय ना गच्छन्ति पुनब्भवन्ति ॥ ६ ॥

---

[1] उपरुपरिक्खेय्य, B.; उपपरिक्खेय्यं, P.Pa. [2] यथा यथायं, D.E.; यथा यथस्सुपपरिक्खतो, P.Pa. [3] °क्खितो, C.; °क्खित्तो, B. [4] पस्स, D.E. [5] विक्ख्°, C. [6] अविसतं, B.; °दं, C. [7] असण्ठिता, D.E.; असण्ठितं, P. [8] अनुप्पा°, C. [9] आयति, M.; अन्येषु ह० °इ, [10] तत्थसङ्ग°, C. [11] विक्खनो, C. [12] कामूप्,° E. [13] °कामो, B.C. [14] परिनिम्मितवस्स°, B. [15] नास्ति B. C. [16] इत्थिभा,° C.; न इत्थ,° B. [17] सण्ठिता, D.E. [18] परिचज्जे, B.; परिब्बजे, P. [19] ये च विप्पा, P.Pa.; ते निब्बा, C.

[20] °सातगोधतं, B.M.; cp उदानं II.7. पियरूपसातगधिता वे देवकाया पुथुमनुसा च; °सातराधितं, C.; °सातरामितं, B.; °सातरूपगोधतं, D.E. P. Pa.; Aa. अपि द्र० सु० १०९ [21] हेतं दुच्चरयं, C. [22] अज्जगुं, B.; अज्झगू, D.E.; द्र० सुत्तं ९३ [23] अरियद्दसा, B.D.E.M.P.Pa.; अरियन्तसा, C.; द्र० सु० ९३ गाथा यत्र सैव [24] °गुणो, C.E.; °गुणा, B. [25] °म् M.; शेषेषु ह० [26]कामरागयुत्तो, B.

६६—काम-सुत्तं [तिक. ५।७]

कामयोगयुत्तो[1] भिक्खवे भवयोगयुत्तो आगामी[2] होति आगन्ता[3] इत्थत्तं[4]; कामयोगविसञ्ञुत्तो[5] भिक्खवे भवयोगयुत्तो[6] अनागामी[7] होति अनागन्ता[8] इत्थत्तं[4]; कामयोगविसञ्ञुत्तो भिक्खवे भवयोगविसञ्ञुत्तो[9] अरहा[10] होति खीणासवो ति।

कामयोगेन सञ्ञुत्ता[11] भवयोगेन चूभयं।
सत्ता[12]गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो[13]॥
ये च कामे पहन्त्वान[14] अप्पत्ता आसवक्खयं[15]।
भवयोगेन सञ्ञुता[16] अनागामीति वुच्चरे॥
ये च खो चिन्नसंसया[17] खीणमानपुनब्भवा।
ते वे[18] पारंगता[19] लोके ये पत्ता[20] आसवक्खयन्ति॥७॥

ततियभाणवारं।

६७—कल्याण-सुत्तं [तिक. ५।८]

कल्याणसीलो भिक्खवे भिक्खु कल्याणधम्मो कल्याणपञ्ञो इमस्मिं धम्मविनये केवली[21] वुसितवा उत्तमपुरिसो तिवुच्चति। कथञ्च भिक्खवे भिक्खु

[1] आगामी, M.; अनागामि, B.C.D.E.; अधो आगामि, P.; अधोभागामि, Pa. [2] आगन्ता, केवलं M.; शेषेषु हृ० आगन्त्वा, A. अपि (आगमनधम्मो—इति वृत्तिः). [3] इत्यत्थं, C.P. [4] योगसञ्ञात्तो,C. [5] °योगविसंयुत्तो, B.C.P. Pa., [6] °ई, केवलं M.; शेषेषु हृ० °इ, [7] अनागन्ता, केवलं M.; अनागता, B.; शेषेषु हृ० °अन्त्वा। [8] भवराग°, B.; भवयोग°, P. [9] अरह, C.; अरहं, D.E.P.Pa. [10] cp. अङ्गु०-निकाये चतु० निपा ०१०।३ [11] सत्था, B.P. [12] शेषेषु हृ० किन्तु M. योज्यतें—ति; °गामिनो ति, B.P.Pa; °गामिनन्ति, C.D.E. [13] पहन्ता न, B.P.; पहत्वान, D.E. [14] °क्खयन्ति, B.C. [15] सर्वत्र हृ० संय°। [16] चिन्नसंसया, C.M.Aa; भिन्न°, B.; तिन्नसंसारं, D.E.; खीणसंसारा, P. °रो, Pa. [17] खो, P.; ब, C.D.; चे, B. [18] पायंगु°, P.; पार गता, D.E. [19] सत्ता, B.C.; भत्ता, Pa. [20] केवलं, B.C.

कल्याणसीलो होति? इध भिक्खवे भिक्खु सलिवा होति पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति, आचारगोचरसम्पन्नो अनुमत्तेसु[1] वज्जेसु भयदस्सावी समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु, एवं खो भिक्खवे भिक्खु कल्याणसीलो होति। इति कल्याणसीलो। कल्याणधम्मो च कथं होति? इध भिक्खवे भिक्खु सत्तन्नं[2] बोधिपक्खिकानं धम्मानं भावनानुयोगमनुयुत्तो विहरति, एवं खो भिक्खवे भिक्खु कल्याणधम्मो होति। इति कल्याणसीलो कल्याण धम्मो। कल्याणपञ्ञो च कथं होति? इध भिक्खवे भिक्खु आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं[3] पञ्ञाविमुत्तिं[3] दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञाय[4] सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति, एवं खो भिक्खवे भिक्खु कल्याणपञ्ञो होति। इति कल्याणसीलो कल्याणधम्मो कल्याणपञ्ञो इमस्मि[5] धम्मविनये[5] केवली[6] वुसितवा उत्तमपुरिसोति वुच्चतीति[7]।

यस्सकायेन वाचाय मनसा नत्थि दुक्कटं।
तं वे[8] कल्याणसीलो ति आहु भिक्खुं[9] हिरीमतं[10]॥
यस्स धम्मा सुभाविता[11] पत्तसम्बोधिगामिनो[12]।
तं वे[4] कल्याणधम्मो ति आहु भिक्खुं[5] अनुस्सदं[13]॥
यो दुक्खस्स पजानाति इधेव[14] खयमत्तनो।
तं वे[4] कल्याणपञ्ञो[15] ति आहु भिक्खुं[5] अनासवं॥
तेहि धम्मेहि सम्पन्नं अनीघं चिन्नसंसयं।
असितं[16] सब्बलोकस्स आहु सब्बप्पहायिनन्ति[17] ॥8॥

---

[1] अनुप्पत्तेसु, C. [2] सत्तन्नं, M. Aa.; द्र० सु० ८२, अन्येषु ह० सततं। [3] °विमुत्ति, B.C.P.Pa. [4] अभिञ्ञा, B.Pa.M.; द्र० सुत्तं ९९ पुग्गल-पञ्ञत्ति, ३।१ च यत्र तदेव वाक्यम्। [5] नास्ति. D.E. [6] केवलं, B.C. [7] वुच्चति, C.; °पुरिसो होतीति वुच्चति, B. [8] चे, B. [9] भिक्खु, B.C.P.Pa.M.; [10] हिरीमतं, D.E.; हिरिमतन्ति हिरिमन्तं हिरिसम्पन्नं, A.; हिरिमनं, B.C.P.Pa.M. [11] सम्°, D.E. [12] °सम्बोध°, C.M.; पत्तंसम्बोधि°, P.Pa.; सत्तंसम्बोध°, B. [13] अनुस्सतं, D.E.; अनुस्सरं, B.C. [14] इधेवा, B. [15] °धम्मो, C.P.Pa. [16] अहितं, C.; अप्पितं, B. [17] सब्बपह्°, B.C.M.

९८—दान-सुत्तं [तिक. ५।९]

द्वे-मानि[1] भिक्खवे दानानि आमिसदानञ्च[2] धम्मदानञ्च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं दानानं यदिदं धम्मदानं। द्वे मे भिक्खवे संविभागा आमिससंविभागो[3] च धम्मसंविभागो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं संविभागानं यदिदं धम्मसंविभागो। द्वे-मे भिक्खवे अनुग्गहा आमिसानुग्गहो[4] च धम्मानुग्गहो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं अनुग्गहानं यदिदं धम्मानुग्गहो ति।

यमाहु दानं परमं अनुत्तरं यं संविभागं भगवा अवण्णयि।
अग्गम्हि[5] खेत्तम्हि[5] पसन्नचित्तो विञ्ञू पजानं को न यजेथ[6] काले॥
ये चेव भासन्ति सुणन्ति चूभयं पसन्नचित्ता सुगतस्स[7] सासने।
तेसं सो अत्थो परमो विसुज्झति ये अप्पमत्ता सुगतस्स[7] सासने ति॥९॥

९९—धम्म-सुत्तं [तिक. ५।१०]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[8]। धम्मेनाहं भिक्खवे तेविज्जं ब्राह्मणं[9] पञ्ञापेमि, नाञ्ञं[10] लपितलापनमत्तेन। कथञ्चाहं[11] भिक्खवे धम्मेन तेविज्जं ब्राह्मणं पञ्ञापेमि नाञ्ञं[12] लपितलापनमत्तेन?—इध भिक्खवे भिक्खु अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, सेय्यथिदं एकम्पि जतिं[13] द्वे पि जातियो तिस्सो पि जातियो चतस्सो पि जातियो पञ्च[14] पि[14] जातियो दस३ पि[15]जातियो वीसम्पि[16]जातियो तिंसम्पि[17]जातियो चत्तालीसम्पि जातियो पञ्ञासम्पि जातियो जातिसतम्पि जातिसहस्सम्पि जातिसतसहस्सम्पि,

[1]इमानि, B.C.M. [2]आमिस्स°, B.D.E.; च, नास्ति, D.E. [3]अम्मिस्सं°, P. [4]आमिस अनु°, D.E.; आम्मिस्सनु°, M.; आमिस्सानु°, B. [5]अग्गदक्खिणखेत्तम्हि, B. [6]यजेय, P. [7]सुग्ग°, P.Pa. [8]वुत्तं°, एतमत्थं°, अयम्पि°, केवलं M. [9]B. P.Pa. सर्वत्र—ब्रह्म° किन्तु M. ब्राह्म° [10]नञ्ञं, M.; न अञ्ञं, B.C.P.Pa. [11]कथञ्च, M. [12]नञ्ञं, M.; न अञ्ञं, C.P.Pa. अनञ्ञं, B. [13]जाति, C.P.Pa. [14]नास्ति C.D.E.P.Pa. [15]दसम्पि, B.C.P.Pa. [16]वीसम्पि, C.; विसम्पि, B.; विसंपि, P.Pa; वसितिम्पि, D.E. विंसंपि, M. [17]तिंसम्पि, B.

---

*इ० सुत्तं १००, अङ्गुत्तरनिकाय २।१०।३ च

अनेके पि संवट्टविवट्टकप्पे अमुत्रासिं[1] एवंनामो एवंगोत्तो[2] एवम्वण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खपाटिसंवेदी[3] एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो अमुत्र उदपादिं[4] तत्रापासिं[5] एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवं सुखदुक्खपटिसंवेदी [6]एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो इधूपपन्नो ति। इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति। अयमस्स पठमा विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो, यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो।—पुन च परं भिक्खवे भिक्खु दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन[7] सत्ते पस्सति चवमाने उप्पज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति। इमे वत[8] भोन्तो सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन[9] समन्नागता[9] मनोदुच्चरितेन[10] समन्नागता[10], अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना। इमे वा पन भोन्तो सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन[11] समन्नागता[11] मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं उपवाहका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना ति। इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन[12]—पे—यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति। अयमस्स दुतिया विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो, यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्सविहरतो।—पुन च परं भिक्खवे भिक्खु आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं[13] दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञाय[14] सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। अयमस्स ततिया विज्जा अधिगता होति, अविज्जा विहता विज्जा उप्पन्ना, तमो विहतो आलोको उप्पन्नो, यथा तं अप्पमतस्स आतापिनो पहिततस्स विहरतो। एवं खो अहं भिक्खवे धम्मेन तेविज्जं ब्राह्मणं

[1]अमुत्रासिं, C.M.; °सि, B.D.E.P. Pa. [2]नास्ति D.E. [3]°वेदि, B.C. P.Pa. [4]उवपादि, M.; °दि, B.C.P.Pa; उप्पादि, D.E. [5]तत्रापासन्ति, Aa.; °आसि, विहाय सर्वत्र ह० तत्रासापि, D.E.; तत्रासि, C. [6] °वेदि, B.C. [7] °मानुस्सकेन, B.M.P.Pa. [8]च पन, B.C. [9]संचित्य त्यक्तं सर्वत्र द्र० सुत्तं ७०-७१. [10]दुच्च्°, सम्°, संचिन्त्य त्यज्यते [11]न त्यज्यते D. E. द्र० सुत्तं ७०-७१. [12] °मानुस्सकेन, B. M. P. Pa. [13] °विमुत्ति M.; B.C. D.E.P.Pa; विहाय द्र० तदेव वाक्यं सुत्ते ९७. [14]अभिञ्ञा, B.C.M.

पञ्ञापेमि नाञ्ञं[1] लपितलापनमत्तेनाति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति:[2]

(पुब्बेनिवासं यो वेदि सग्गपायञ्च ब्राह्मणञ्च।
पञ्ञापेमि न च अञ्ञं लपितलापनमत्तेन ॥)[3]
पुब्बेनिवासं यो [4]वेदि सग्गापाञ्चपस्सति[4]।
अथ[5] जातिक्खयं[6] पत्तो अभिञ्ञावोसितो[7] मुनि ॥
एताहि तीहि विज्जाहि तेविज्जो होति ब्राह्मणो।
तमहं[8] वदामि तेविज्जं नाञ्ञं[9] लपितलापनन्ति ॥१०॥
अयम्पि[10] अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[11] ॥१०॥

॥ पञ्चमो वग्गो ॥

तस्सुद्दानं:[12]

पसाद[13] (९०) जीवित[14] (९१) संघाटि[15] (९२)
अग्गि (९३) उपपरिक्खया (९४)।
उपपत्ति (९५) काम (९६) कल्याणं (९७)
दानं (९८) धम्मेन (९९) ते दसाति ॥

॥ तिकनिपातं[16] निट्ठितं ॥

---

[1] न अञ्ञं, C.M.; अनञ्ञं, B. [2] °एतम् केवलं M. [3] इयं गाथा केवलं B.,C.; अर्वाक्तनः प्रक्षेपोयम् [4] वेदि, वेद ? A. जानाति—इति व्याख्या, किन्तु Childers धम्मपद गाथा ४२३ यत्र सैव गाथा विशेषणवत् वेदी; द्र० अङ्गुत्तरनिकाय ३।५८.६।५९।४ च [5] पस्सतो, C. [9] अत्थो, D.E. [6] जातिखयं, B. [7] अभिञ्ञादेसितो, C. [8] तस्माहं, P.Pa. [9] नञ्ञं, M.; अञ्ञं, B. C.P.Pa. [10] M. नास्ति पि। [11] अयम्° केवलं M. [12] तस्सुदानं, M.; शेषेषु ह०. वग्गस्स उद्दानं (एकेन केवलं द, P.Pa.) [13] पास्,° B. C. D. E. [14] विजिता, B.; जीविता, D.; 'जीविका, E. [15] °ति, B.C. [16] तिक्कं°, B.M.P.Pa.

चतुक्कनिपातो

१००—ब्राह्मण-सुत्तं [चतु. १]

वुत्तं हेतं भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं[1]। अहमस्मि[2] भिक्खवे[3] ब्राह्मणो[4] याचयोगो सदा पयतपाणि अन्तिमदेहधारो[5] अनुत्तरो भिसक्को सल्लकत्तो। तस्स मे तुम्हे पुत्ता ओरसा[6] मुखतो जाता धम्मजा धम्मनिम्मिता[7] धम्मदायादा नो आमिस दायादा[8]। द्वे—मानि भिक्खवे दानानि आमिसदानञ्च[9] धम्मदानञ्च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं[10] द्विन्नं दानानं यदिदं धम्मदानं। द्वे—मे[11] भिक्खवे संविभागा, आमिससंविभागो[11] च[10] धम्मसंविभागो[12] च,[12] एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं संविभागानं यदिदं धम्मसंविभागो। द्वे—मे भिक्खवे अनुग्गहा, आमिसानुग्गहो[13] च धम्मानुग्गहो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं अनुग्गहानं यदिदं धम्मानुग्गहो। द्वे—मे भिक्खवे यागा, आमिसयागो च[12] धम्मयागो च, एतदग्गं भिक्खवे इमेसं द्विन्नं यागानं यदिदं धम्मयागो ति। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति:[14]

यो धम्मयागं अयजी[15] अमच्छरी[16] तथागतो सब्बभूतानुकम्पी[17]।

[1] वुत्तं°, एतमत्थं°, अयम्पि, केवलं M. एतत्सूत्र भावार्थं द्र० सु० ९८
[2] अस्मि, C.D.E. [3] भिक्खवे भिक्खु, B.C.P.Pa. [4] ब्रह्म°, B.P.Pa. [5] °धारो, B.M.; शेषेषु ह० °धरो। [6] ओरस, D. E.; B. ओरसा इत्यतः परं पुत्ता; वाक्य समूहार्थं द्र० अस्सलायनसुत्त ed. Pischel, P.9 [7] °निमित्ता, D.E.Pa. [8] आमिस्स°, P.Pa.
[9] आमिस्स°, B.P.Pa. [10] नास्ति D.E. [11] इमेद्वे मे, C. [12] आमिस्स°, B. [13] नास्ति C. [14] आमिस्सनु°, B.; आमिस्स अनु,° Pa. [15] एतमत्थं, अयम्पि, केवलं M. [16] अयजी, M.E.; अयजि, D.Pa.; असजि, P.; अस्सजी, C.; अस्सजि, B. [16] °इ, B. P.Pa.
[17] सब्बसत्तानुकम्पीति, Aa.; M. पश्चात् ११ °कम्पी, किन्तु शेषेषु ह० °कम्पितं सहैव लिखितं B, ११ पश्चात् तं, C. °कम्पिनं।

तं तादिसं देवमनुस्ससेट्ठं[1] सत्ता[2] नमस्सन्ति भवस्स पारगुन्ति[3] ॥
अयम्पि[4] अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति[5] ॥१॥

१०१—चत्तारि-सुत्तं [चतु. २]

*चत्तारि-मानि भिक्खवे अप्पानि चेव सुलभानि च[6] तानि[6] च[6] अनवज्जानि। कतमानि चत्तारि? पंसुकूलं भिक्खवे चीवरानं[7] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। पिण्डियालोपो भिक्खवे भोजनानं[8] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। रुक्खमूलं भिक्खवे सेनासनानं[9] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं। पूतिमुत्तं भिक्खवे भेसज्जानं[10] अप्पञ्च सुलभञ्च तञ्च अनवज्जं[11]। इमानि खो भिक्खवे चत्तारि अप्पानि चेव सुलभानि च[12] तानि[13] च[13] अनवज्जानि। यतो खो भिक्खवे भिक्खु[14] अप्पेन च तुट्ठो होति सुलभेन च,[14] इमस्साहं[15] अञ्ञतरं सामञ्ञङ्गन्ति वदामीति।

अनवज्जेन तुट्ठस्स अप्पेन सुलभेन च।
न सेनासनमारब्भ चीवरं पानभोजनं।
विघातो होति चित्तस्स दिसा नप्पटिहञ्ञाति[16] ॥
ये चस्स धम्मा अक्खाता सामञ्ञस्सानुलोमिका।
अधिग्गहीता[17] तुट्ठस्स अप्पमत्तस्स भिक्खुनो[18] ति ॥२॥

---

[1] °मनुस्सानं सेट्ठं, B.C. [2] सक्का, C. [3] °गुत्ति, B.C.P., °गूत्ति, Pa. [4] M. नास्ति Pi. [5] गतानि च, P.; तानि च, Pa.; तानिचत्तारि, C. [6] चीवरं, D.E. [7] भोजनं D.E. [8] सेनासनं, D.E.M.P.Pa. [9] भेसज्जं D.E. [10] अनवज्जानं, C. [11] नास्ति D.E. [12] नास्ति B. [13] भिक्खु तुट्ठो होति अप्पेन चवे सुलभेनच अनवज्जेन, D.E. [14] तस्साहं, D.E.; इवमस्साहं, P.Pa. [15] नपटि, M.P.; नप्पति°, B.C. D.E.; न पत्ति°, Pa., °हञ्ञत्ति, B. [16] °हता, B.M. [17] भिक्खुनो, C.D.E. A.; Burmese इ० सिक्खतो. Pa; न सन्ति सर्वा गाथा, आवितः इस्यतो यावद् तुट्ठस्स second, द्वितीयं स्पक्तः खंडः—जानतो अहं भिक्खवे इत्यतः पर परतन किन्तु योज्यते सुत्त [18] अहं, B.Pa.

*संपूर्ण सुत्तं अङ्गुत्तरनिकाये चतु० २७

१०२—जानं-सुत्तं [चतु. ३]

जानतोहं[1] भिक्खवे पस्सतो आसवानं खयं वदामि, नो अजानतो अपस्सतो[2] । किञ्च[3] भिक्खवे जानतो किं[4] पस्सतो आसवानं खयो होति ?[5] इदं दुक्खन्ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो[6] होति[6], अयं दुक्खसमुदयो ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति, अयं दुक्खनिरोधो ति भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति, अयं दुक्खनिरोधगामिनी[7] पटिपदा[8] ति[9] भिक्खवे जानतो पस्सतो आसवानं खयो होति। एवं खो भिक्खवे जानतो पस्सतो[10] आसवानं खयो होतीति[11] ।

सेखस्स सिक्खमानस्स[12] उजुमग्गानुसारिनो ।
खयस्मिं पठमं ञाणं ततो अञ्ञा अनुत्तरा[13] ॥
ततो अञ्ञा विमुत्तस्स विमुत्तिञ्ञाण[14] मुत्तमं ।
उप्पज्जति खये ञाणं खीणा[15] संयोजना[15] इति ॥
न त्वेविदं[16] कुसीतेन बालेनम[17]विजानता[17] ।
निब्बानं अधिगन्तब्बं[18] सब्बगन्थपमोचनन्ति[19] ॥३॥

१०३—समण-सुत्तं [चतु. ४]

ये हि केचि[20] भिक्खवे समणा वा[21]

[1]नो अपस्स्° D.E.Pa. [2]किञ्चि, B.C.D.E. [3]किं, M.P.; कि, B.; किञ्चि, D.E.; नास्ति C, Pa. [4]खयो ति, Pa. [5]खयो ति, Pa. [6]°ई, C.D.E.; शेषेषु ह० °इ, [7]पतिप्,° P.Pa [8]तं, P.; नास्ति C. Pa. [9]सर्वत्र ह० किन्तु M. पठति एवं पस्सतो इत्यतः प्राक् । [10]होति, B.C.M. [11]भिक्खमानस्स, C.; खयमानस्स Pa. [12]अनन्तरा, M. Pa.; शेषेषु ह० अनुत्तरा। [13]साद्धं, ञ्ज, B.p.; अन्यत्र ह० एकेन ञ [14]खीण, C.D.; खीणं, संयोजनं, M. आद्यं गाथा द्वयं द्र० अङ्गुत्तरनिकाय ३।८४ [15]तोवरं, B.C. [16]A. पाठः—मकारो पदसन्धिकरो, द्र० Ed. Muller, pali, Gr. P. 63.; बालेन अविज्° B.C.; बालेन अन्ता (?), D.E. [17]°गन्धब्बं, B. [18]°गन्थ°, M.; शेषेषु ह० °गन्ध° । [19]काचि B.; योहि को चि, C. [20]नास्ति D.E.

ब्राह्मणा[1] वा इदं दुक्खन्ति यथाभूतं नप्पजानन्ति[2], अयं दुक्खसमुदयो ति यथाभूतं नप्पजानन्ति, अयं दुक्खनिरोधोति यथाभूतं नप्पजानन्ति[3], अयं दुक्खनिरोधगामिनी[2] पटिपदा ति यथाभूतं नप्पजानन्ति, न ते मे[4] भिक्खवे समणा वा ब्राह्मणा वा समणेसु वा[5] समणसम्मता ब्राह्मणेसु[6] वा[6] ब्राह्मणसम्मता[6], न च[7] पनेते[7] आयस्मन्तो[8] सामञ्ञत्थं[9] वा ब्राह्मञ्ञत्थं९ वा दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरन्ति। ये[10] च खो केचि[10] भिक्खवे समणा वा ब्राह्मणा वा इदं दुक्खन्ति यथाभूतं पजानन्ति, अयं[11] दुक्खसमुदयो ति यथाभूतं पजानन्ति, अयं दुक्खनिरोधो ति यथाभूतं पजानन्ति, अयं दुक्खनिरोधगामिनी[12] पटिपदा[13] ति यथाभूतं पजानन्ति, ते खो मे[14] भिक्खवे समणा वा ब्राह्मणा वा समणेसु चेव समणसम्मता, ब्राह्मणेसु च ब्राह्मणसम्मता, ते च पनायस्मन्तो[15] समञ्ञत्थञ्च[16] ब्राह्मञ्ञत्थञ्च[17] दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञा[18] सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरन्ती ति[19]।

ये दुक्खं नप्पजानन्ति अत्थो[20] दुक्खस्स सम्भवं।
यत्थ च[21] सब्बसो दुक्खं असेसं उपरुज्झति॥
तञ्च मग्गं न जानन्ति दुक्खूपसमगामिनं[22]।
चेतोविमुत्तिहीना[23] ते[23] अथो[24] पञ्ञाविमुत्तिया।
अभब्बा[25] ते अन्तकिरियाय ते[26] वे[26] जातिजरूपगा[27]॥

[1] B.P.Pa. सर्वत्र—ब्रह्म°, अ, ब्रह्मणत्यं, शेषेषु ह० चापिM. सर्वदा ब्राह्म°। [2] न प,° P.Pa. [3] ई°, C.D.E.; शेषेषु ह० इ°, [4] न ते मे, M., शेषेषु ह० न मे ते। [5] चेव, P.Pa. [6] नास्ति C. [7] ते चपन, B. [8] °मन्तो, M.P.Pa.; °मन्ता, B.D.E.; मन्ति, C. [9] °अत्तं, B.P.Pa. [10] ये हि केचि, D.E.; सच्छिकत्वा......केचि इति स्थाने Pa. पाठः—तंनप्पजानन्ति C. [11] इदं, C. [12] °ई, D.E.; अन्येषु ह० इ; C. नास्ति गामिनी। [13] पतिप्°, P.Pa. [14] ते खो मे, M.P.; ते न खो मे, B.C.Pa.; ते च खो मे, D.E. [15] °ओ, M.P.; अन्येषु ह०. °आ, [16] °असञ्च, B.P.Pa. [17] ब्रह्मणत्तणसञ्च, P.Pa.; नास्ति. B. [18] अभिञ्ञाय C., संपूर्ण वाक्यकृते द्र० अङ्गु०—नि० चतु० ५।१ [19] विहरतीति, B.C. [20] अत्थो, C.; यतो, B. [21] यत्थञ्च, D.E.; यथा च, C.; यतो च, B. [22] दुक्खुप°, B.M.P.Pa. [23] विमुत्तिनातेन, C.; °विमुत्तिसम्पन्ना, B. [24] अत्थो, B.C. [25] भब्बा, Pa. [26] न ते, B.C. [27] °जरुप°, B., B.C.D.E. योज्यते—ति।

ये च[1] दुक्खं पजानन्ति अथो[2] दुक्खस्स सम्भवं।
यत्थ[3] च सब्बसो दुक्खं असेसं उपरुज्झति ॥
तञ्च मग्गं पजानन्ति दुक्खूपसमगामिनं[4]।
चेतो विमुत्तिसम्पन्ना अथो[5] पञ्ञाविमुत्तिया।
भब्बा[6] ते अन्तकिरियाय न ते जातिजरूपगा ति[7] ॥

१०४—सील-सुत्तं[8] [चतु. ५]

ये ते भिक्खवे भिक्खु सील सम्पन्ना समाधिसम्पन्ना पञ्ञासम्पन्ना[9] विमुत्तिसम्पन्ना विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना[10] ओवादका विञ्ञापका[11] सन्दस्सका समादपका[12] समुत्तेजका[13] सम्पहंसका[14] अलंसमक्खातारो[15] सद्धम्मस्स[16] दस्सनम्पहं[17] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं[18] वदामि, सवन[19] म्पहं[19] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, उपसङ्कमनम्पहं[20] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, पयिरुपासनम्पहं[21] भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, अनुस्सरणम्पहं भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, अनुपब्बज्जम्पहं भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि। तं किस्स हेतु? तथारूपे भिक्खवे

[1] नास्ति B. [2]यतो, B.C.M.P.Pa. [3]यत्त, B. [4]दुक्खुप°, B.P.Pa. [5]अत्थो, C. [6]भब्बा, M.; अन्येषु ह० सब्बा। [7]°जरुप°, P.Pa.; B. चरमं गाथा, द्वयं द्विः प्रथमः पादो त्यशुद्धः [8] B. एतत्सूत्र स्याद्येनां शेन द्र० पुग्गल-पञ्ञात्ति, ४।२३ द्वितीयां शेन द्र० पुग्ग ०३।१३

[9] नास्ति P.Pa. [10] नास्ति B.C.P.Pa. [11] पश्चात्—विञ्ञा°, P.Pa. योजयतः अघबोधका, इति अवबोधका-स्थाने A. व्याख्या [12] °पिका B. [13] °जिका, B. [14] °सिका, B. [15]सलसमत्तका, C.; अलंसम्मत्तका। सद्धम्मस्स द°, B. [16]सद्दस्स, C.; नास्ति D.E.; पश्चात्—सद्ध° P.Pa. योजयतः देसेतारो, A. व्याख्या [17]पहं, यञ्च यद् वारमिह,=अपिअहं, B. सर्वदा—अहं नास्ति P; C.D.E.M. प्रात्यने कर्मवचने सर्वदा अनुस्वार; दस्सनं सहं, C. [18]केवलं C. पाढः प्रायः सर्वदा बहुप°; अन्येषु ह० बहु°. D.E. सर्वदा बहुकारं; C. च प्रथमंवारं [19]सवानं सवं, C.; समणं पहं D.E. [20]पहान, C. [21]पयिरूप°, B.; पतिरूप°, C.; पुस्तके नास्ति Pa. पयिर°, अनुस्स°, अनुप°

भिक्खू सेवतो भजतो[1] पयिरुपासतो[2] अपरिपूरो पि सलीक्खन्धो भावनापारिपूरिं[3] गच्छति, अपरिपूरो पि समाधिक्खन्धो भावनापारिपूरिं गच्छति, अपरिपूरो पि पञ्ञाक्खन्धो[4] भावनापारिपूरिं गच्छति, अपरिपूरो पि विमुत्तिक्खन्धो भावनापारिपूरिं गच्छति[5], अपरिपूरो पि विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धो[6] भावनापारिपूरिं गच्छति। एवरूपा च ते[7] भिक्खवे भिक्खू[8] सत्थारो[9] ति[10] पि वुच्चन्ति, सत्थवाहा[11] ति पि[10] वुच्चन्ति, रणञ्जहा[12] ति पि वुच्चन्ति, तमोनुदा ति पि[10] वुच्चन्ति आलोककरा ति पि[13] वुच्चन्ति, ओभासकरा ति पि वुच्चन्ति, पज्जोतकरा ति पि वुच्चन्ति, उक्काधारा ति पि वुच्चन्ति, पभङ्करा ति पि वुच्चन्ति[14], अरिया ति पि वुच्चन्ति, चक्खुमन्तो[15] ति पि वुच्चन्तीति।

पामुज्जकरणं[16] ठानं एवं[17] होति विजानतं[18]।
यदिदं भावितत्तानं अरियानं धम्मजीविनं[19] ॥
ते जोतयन्ति[20] सद्धम्मं भासयन्ति पभङ्करा।
आलोककरणा धीरा चक्खुमन्तो रणञ्जहा[21] ॥
येसं वे[22] सासनं सुत्वा सम्मदञ्ञाय[23] पण्डिता।
जातिक्खयम[24] भिञ्ञाय नागच्छन्ति पुनब्भवन्ति ॥५॥

---

[1]अनुसर्°, P.; अनुसयं, C. नास्त्येद् वाक्यं D.E. [2]नास्ति C. [3]परिरूप°, B.Pa. [4] M. सर्वदा °पूरिं; B.C.P.Pa. सर्वदा °पूरि, इह सूत्रे

[5]पञ्ञाक्ख° D.E.P. [6]D.E. Omit this sentence. [7]नास्ति एतद्वाक्यम् ऊ कारः केवलं M. [8]सत्तारो, C. [9]नास्तिC. [10]जातकन्ता राविनिस्थरणतो सत्तवाहा ति A.; सत्तवाहो, C.P.Pa. [11] °हो, C.; मरणजहा, D.E. [12]आलोक-दिवाकरा वा ति व°, Pa.; पज्जोतक° इत्यतः प्राक्। [13]यथा A.M.; अन्येषु ह० पभ° उक्क° इत्यतः प्राक्; उक्ककरा, B.; पभाकरो, Pa. [14] °मन्ता, B.C. [15]पामोज्ज° D.E.; पामुज्जकरण, B.; °करणट्ठाणं, C.; °कारणं, P.Pa. [16]एतं, B.D.E.-P.Pa. [17]विज्जानं, C. [18]जीवितं, D.E. [19]जोतस्सन्त, C.; वोभारन्ति Pa. [20]°जहो, B. C.; °वहा P. [21]चे, B.; च D.E. [22]सद्धम्मञ्ञाय, B. [23] °म केवलं M.; अन्येषु ह०°-.

१०५—तण्हा-सुत्तं [चतु. ६]

* चत्तारो-मे भिक्खवे तण्हुप्पादा यत्थ भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति। कतमे चत्तारो ? चीवरहेतु वा भिक्खवे[1] भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, पिण्डपातहेतु वा भिक्खवे[1] भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, सेनासनहेतु वा भिक्खवे भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, इतिभवाभवहेतु[2] वा भिक्खवे भिक्खुनो तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, इमे खो भिक्खवे चत्तारो तण्हुप्पादा यत्थ भिक्खुनो[3] तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जतीति।

तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धानं[4] संसरं[5]।
इत्थभावञ्जथाभावं संसारं[6] नातिवत्तति ॥
एवमा[7] दीनवं ञत्वा तण्हा दुक्खस्स[8] सम्भवं।
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजे ति ॥६॥[9]

१०६—ब्रह्म-सुत्तं [चतु. ७]

[10] सब्रह्म कानि भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे पूजिता होन्ति। सपुब्बदेवतानि[11] भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं मातापितरो अज्झागारे[12] पूजिता होन्ति। सपुब्बाचरियानि भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे पूजिता होन्ति[13]। साहुनेय्यकानि[14] भिक्खवे तानि कुलानि

[1] नास्ति D.E. [2] इतिभगवाभ°, C. [3] य° भिक्खवे त°, B.C.; Pa. एतस्य सूत्रस्य गद्यभागेऽतिसंदिग्धः पाठः। [4] सर्वत्र ह० Pa. पुस्तकं विहाय अद्धान—इति पाठः। [5] °सारं, P.Pa. [6] संसरं, B. [7] एतं, D.E. [8] तणहं दु°, M.; तण्हाहेतु स्स, Pa. [9] ता एव गाथा १५ सूत्रे [10] संपूर्णं सूत्रं दृश्यते अङ्गुत्तरनिकाये—तिक० ३१, चतु० ६३ च। तिकनिपात—पाठः समीचीनतमः गाथानुकूल्यात्। अस्य सूत्रस्य द्वितीयं (सपुब्बदेवतानि) अधिकम्। [11] पुब्ब°, अन्तरा स—, C. Pa.

[12] °आगारेसु, B. [13] यथा A.D.E. अन्येषु ह० नास्तीदं तृतीयं वाक्यं (सपुब्बाचरियानि), यद्यपि पुब्बाचरिया—इति अपरार्द्धे अस्य सूत्रस्य सर्वत्र ह० योज्यते (पंचमः D.E., चतुर्थः शेषेषु ह०) पाहुणेय्यकानि (सपाहुन°, M.; सापिहुण°, P.) भिक्खवे तानि कुलानि येसं पुत्तानं...न तु इदंमिव एतत्सूत्रोत्तरार्धे नास्ति च A. [14] आहुण,° B.C.P.Pa.

---

*संपूर्णं सूत्रं अङ्गुत्ता०—निक० चतु० ९.

येसं पुत्तानं माता पितरो अज्झागारे[1] पूजिता होन्ति। ब्रह्मा ति[2] भिक्खवे मातापितूनं[3] एतं अधिवचनं। पुब्बदेवता[4] ति भिक्खवे मातापितूनं[3] एतं अधिवचनं। पुब्बाचरिया ति[5] भिक्खवे मातापितूनं[3] एतं[6] अधिवचनं। आहुनेय्या ति भिक्खवे मातापितूनं[3] एतं[7] अधिवचनं[8]। तं किस्स हेतु? बहूपकारा[9] लोकस्स दस्सेतारो ति।

ब्रह्मा ति मातापितरो पुब्बाचरिया ति वुच्चरे[10]।
आहुनेय्या च पुत्तानं पजाय अनुकम्पका॥
तस्मा हि ने[11] नमस्सेय्य सक्करेय्य[12] च[12] पण्डितो।
अन्नेन अथो पानेन वत्थेन सयनेन च।
उच्छादनेन न्हापनेन[13] पादानं धोवनेन च॥
ताय नं पारिचरियाय मातापितूसु पण्डितो।
इधेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे पमोदतीति[14]॥७॥

१०७—बहूपकार-सुत्तं [चतु. ८]

बहूपकारा[15] भिक्खवे ब्राह्मणगहपतिका[16] तुम्हाकं, ये वो[17] पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारेहि। तुम्हे पि[18] भिक्खवे बहूपकारा[19] ब्राह्मणगहपतिकानं[20], यं नेसं[21] धम्मं देसेथ आदिकल्याणं मज्झे-कल्याणं परियोसानकल्याणं, सात्थं[22] सब्यञ्जनं[23] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेथ[24]। एवमिदं भिक्खवे अञ्जमञ्ञं निस्साय ब्रह्मचरियं वुस्सति[25] ओघस्स नित्थरणत्थाय[26] सम्मा दुक्खस्स अन्तकिरियायाति।

[1] आगारेसु, B. [2] ब्रह्मणा ति, B.C.; ब्रह्माका ति Pa. [3] °पितुन्नं, D.E. [4] °देवा, B.P.Pa. [5] एव एतं, B. [6] चरियानीति, B. [7] नास्ति B. [8] पुब्बदेवता...... अधिवचनं Om. C. [9] बहुपकारा, B. M.P.Pa. [10] वुच्चरे—इत्यतः परं C. पाठ—पे—B.—प—. [11] ते, D.E. [12] सक्कार,° B.; सक्करेय्या च, C.; °एय्याथ, D.E. [13] हापनेन, C.D.E. न्हानेन, M. [14] पमोदति, C.

[15] बहुप°, B.M.P. [16] ब्रह्मण°, P.Pa.; ब्रह्मणा, B. [17] ते, C.; B. M. पुस्तकयोः वो, ते—इतीव। [18] हि, B. [19] बहुप°, B.M.P.Pa. [20] ब्रह्म° B.P.Pa. [21] तेस, C. [22] सत्थ, °M.P. [23] सब्य°, B.M.P.Pa. [24] सोत, D.E. [25] वुच्चति P. [26] °त्थाय, B.

सागारा[1] अनागारा[2] च[3] उभो अञ्ञोञ्ञनिस्सिता ।
आराधयन्ति[4] सद्धम्मं योगक्खेममनुत्तरं[5] ॥
सागारेसु[6] च चीवरं पच्चयं सयनासनं ।
अनागारा[7] पटिच्छन्ति परिस्सयविनोदनं[8] ।
सुगतं[9] पन निस्साय गहट्ठा[10] घरमेसिनो ।
सद्दहाना[11] अरहतं अरियपञ्ञाय[12] झायिनो ॥
इध धम्मं चरित्वान मग्गं[13] सुगतिगामिनं ।
नन्दिनो देवलोकस्मिं मोदन्ति कामकामिनोति ॥

१०८—कुहना-सुत्तं [चतु, ९]

य केचि भिक्खवे भिक्खू कुहा थद्धा लपा सिङ्गी[14] उन्नला [15]असमाहिता, न मे[16]ते भिक्खवे भिक्खू मामका, अपगता[17]च ते भिक्खवे [18]भिक्खू[19]इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं[20] वेपुल्लं आयज्जन्ति । ये च खो[21] भिक्खवे भिक्खू

[1]सगारा B.C.D.E. [2]अनग° C.M. [3]D.E.P.Pa.च, अनाग°—इत्यतः प्राक्, [4] आरामयन्ति, C. [5]यथा D.E.M.A.; B.C.P.Pa. पाठः—योगक्खेमस्स पत्तिया ।

[6]सगार,° B.; सागर्,° D.E. [7]अनग्°, M.; अनागारं, B. [8]अपरिस्स,° B.; परिस्सयन्तिविन°, D.E.; सरिसस्सविन° C.; A. पाठः परिस्सयविनोदनन्ति उतुपरिस्सयादिपरिस्सयगहणं विहारादि आवसतं, [9]सुगतं, D.E.Aa. (P. Pa.पाठः संदिग्धः); पुग्गलं, M.; सद्धम्मं B.C.; पाठोऽशुद्धश A. व्याख्याति पुग्गलं, तस्य चरमं वाक्यं—सावको हि इध पुग्गलो हि (?) अधिप्पेतो । [10]घरट्ठा, P.Pa. [11]सद्दहाना D.E.; सद्दहानो, B.C.M. P.Pa.Aa. [12]°पञ्ञाय, D.E.; धम्मसञ्ञाय, B.; धम्मंस,° C.

[13]सग्गं, C. [14]सिङ्गी, D.E.P.Pa. सीगीति, Aa.; सिङ्गा, B.C.M.; सङ्गो इत्यस्यसं प्रदानं, पाठ आवा व शुद्धः A. व्याक्यान्तं—एवंवुत्तेहि संघ (?)—सविसेहि पाकटकिलेसेहि समन्नागता । [15]उन्नळा, M. [16]न च ते C. [17]अपागता, C. [18]नास्ति D.E. [19]नास्ति B.C.P.Pa. [20]विरूळ्हिं, B.M.P.Pa. (न तु B.Pa.) । [21]खो ते, D.E.P.Pa.

निक्कुहा [1]निल्लपा धीरा अथद्धा[2] सुसमाहिता, ते च[3] खो मे[4] भिक्खवे भिक्खू मामका, अनपगता च ते भिक्खवे भिक्खू इमस्मा[5] धम्मविनया, ते च[6] भिक्खवे भिक्खू इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं[7] वेपुल्लं आपज्जन्तीति।

कुहा थद्धा लपा सिङ्गी[8] उन्नला[9] असमाहिता।
न[10] ते धम्मे विरूहन्ति[10] सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥
निक्कुहा[11] निल्लपा[12] धीरा अथद्धा[13] सुसमाहिता[14]।
ते वे[15] धम्मे विरूहन्ति[16] सम्मासम्बुद्धदेसिते ति ॥९॥*

१०६—पुरिस-सुत्तं [चतु. १०]

सेय्यथा पि भिक्खवे पुरिसो नदिया सोतेन आवुय्हेय्य[17] पियरूपसातरूपेन[18], तमेनं चक्खुमा पुरिसो[19] तीरे ठितो दिस्वा एवं वदेय्य: किञ्चापि खो त्वं अम्भो[20] पुरिस[21] नदिया सोतेन ओवुय्हसि[22] पियरुपसातरुपेन[23]। अत्थि चेत्थ हेट्ठा रहदो[24]

[1]यथा B.C.M., द्र० द्वितीया गाथा; P. पाठ:—असन्धा Pa. अवन्धा=अथद्धा; D.E. पाठ: निक्क° नित्थद्धा निलपा धी° आवन्धा सुस°; A. न सुख्याख्याति सुखपक्खं [2]नास्ति M.Pa. [3]नास्ति B.C.P.Pa. [4]इमस्मा D.E.; इमम्हा B.C.M.P.;Pa. नास्ति इम° अधस्तना: शब्दाश्च यावद् इमस्मिं। [5]ते च कल्पनया च ते, P.; न च ते, C.; ते, नास्ति तु च, B.M.; किन्तु B, पाठे च, इमस्मिं इत्यत: प्राक्; D. E. पाठे— इमस्मिञ्चे ते धम्मविनये (न तु— भिक्खवे भिक्ख)। [6]विरूळ्हिं, B.M. P.Pa. (न तु B.P.Pa.) [7]सिङ्गि, E.P.Pa; सिङ्गी, D.; सिङ्गा, B.C.M. [8]उन्नळा, M. [9]न ते..., सुसमाहिता; नास्ति [10]विरूहन्ति केवलं M.; विरूळ्हन्ति, B.C.D.E.P. (B.P. कारेण उ सह).

[11]निकहा, D.E. [12]निलपा, D.E. [13]असद्धा, P. [14]न ते...., सुसमाहिता; नास्ति Pa. [15]च B. [16]विरूहन्ति केवलं M.; विरूळ्हन्ति, B.C.D.E.P.Pa. (B.P.Pa. उ कारेण सह).

[17] अहुय्हे, D.; ओवुय्ह, P.; ओरुय्ह, B.Pa.; गुय्हति, C. [18]पियरूपेन स°, P.Pa. [19]पुरिसो, P. [20]अब्भो, B. [21]पुरिसो, P.Pa. [22]ओवुय्हति, M.; वुय्हसि, C.; ओवुय्ह, D.E. [23]°सातरूपंमन, B.; °रूपंपन, C.; पियरूपेन स°, P.Pa.;E.D. [24]वहवो, M.

---

*इदं सूत्रं अङ्गुत्त० निका० चतु० २६ अपि

सउम्मि[1] सावट्टो सगहो सरक्खसो यं त्वं अम्भो[2] पुरिस पापुणित्वा[3] मरणं[4] वा निगच्छसि[5] मरणमत्तं वा[6] दुक्खन्ति। अथ खो सो भिक्खवे पुरिसो तस्स पुरिसस्स सद्दं सुत्वा हत्थेहि च[7] पादेहि च पटिसोतं वायमेय्य[8]। उपमा खो मे[9] अयं [10] भिक्खवे कता अथस्स विञ्ञापनाय[11]। अयं चेत्थ[12] अत्थो: नदिया सोतो[13] ति[14] खो भिक्खवे छन्नेतं अज्झत्तिकानं[15] आयतनानं अधिवचनं; हेट्ठा रहदो[16] ति खो भिक्खवे पञ्चन्नं ओरम्भागियानं संयोजनानं अधिवचनं; सउम्मीति[17] खो भिक्खवे कोधूपायासस्सेतं[18] अधिवचनं; सावट्टो ति खो भिक्खवे पञ्चन्नेतं कामगुणानं अधिवचनं; सगहो सरक्खसो ति खो[19] भिक्खवे मातुगामस्सेतं अधिवचनं; पटिसोतो[20] ति खो भिक्खवे नेक्खम्मस्सेतं[21] अधिवचनं; हत्थेहि च पादेहि च वायामो ति खो भिक्खवे विरियारम्भस्सेयं तं अधिवचनं; चक्खुमा पुरिसो[22] तीरे ठितो ति[23] खो भिक्खवे तथागतस्सेतं अधिवचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्साति।

सहापि[24] दुक्खेन जहेय्य कामे*
योगक्खेमं आयति[25] पत्थयानो[26]।
सम्मप्पजानो[27] सुविमुत्तचित्तो
विमुत्तिया फस्सये[28] तत्थ तत्थ॥

[1] सऊमि, M.; चऊमि, D.E. [2] अम्भो, B. [3] पापुणेत्वा, P.Pa.; रहदं पापुणेत्वा, E., न कारेण सह D. [4] मार°, P.Pa. [5] निगच्छति, C. [6] नास्ति B. [7] नास्ति D.E. [8] यापेय्य, C. [9] अयं मे, D.E. [10] विञ्जापना, B.C.P.; °पनान, Pa. [11] अयं वे चेत्थ, C.; अयंञ्चेव, Pa; अयमेवत्थ, D.E. [12] सोता, P.Pa. [13] नास्ति B. [14] तण्हाय सोतं, D.E. [15] पियरूपं स°, B.C.M. [16] अधिञ्ञत्त,° D.E. [17] वहदो, M. [18] उम्मीति, D.E.Pa.; सऊमीति, M.; अभीति, D.E. [19] कोधूप°, E.Pa., °उप° शेषेषु ह० °पायस्सेतं, D.E.

[20] नास्ति B.C. D.E.Pa. [21] पटिसोतो, B.C.M.P.Pa.; पतिसोता ति, D.E.; नास्ति क्वचिदपि ह० पीटसोतं। [22] निक्ख°, B.; नेक्खमस्स्°, M. [23] प° ती°, ति नास्ति Om. C. [24] पहासि, C.M.; स एव दुष्पाठः A.; महासिपि, B. [25] आयति, सर्वेषु ह० [26] पत्थयमानो, P.Pa. पत्थमानो, C. [27] सम्मपज°, P.; समप्प°, Pa; सम्पजानो, B. [28] पस्सये, B.P.

* द्र० अङ्गु०-निका० चतु० २।२,३

स वेदगू वुसितब्रह्मचरियो[1]
लोकन्तगू पारगतो[2] ति वुच्चतीति ॥१०॥*

११०—चर-सुत्तं [चतु. ११]

चरतो[3] चे[4] पि भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा व्यापाद-वितक्को[5] वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[6] भिक्खु अधिवासेति न-प्पजहति[7] न विनोदेति न व्यन्तिकरोति[8] न अनभावं[9] गमेति, चरं पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो[10] अनातापी[11] अनोत्तप्पी[12] सततं समितं कुसीतो हीनविरियो ति वुच्चति । ठितस्स चे[13] पि[14] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा व्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[15] भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न व्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, ठितो पि भिक्खवे भिक्खु एवं भूतो अनातापी अनो- त्तप्पी सततं समितं कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति ।—निसिन्नस्स चे पि[15] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा व्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[16] भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न व्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, निसिन्नो पि[17] भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो[18] अनातापी अनोत्तप्पी सततं समितं

[1] वूसित°, M.P.; वुसित°, B.C.Pa.; वुसितं, E.; सितं, D.; °चारियो, P.Pa· [2] पारंग°, B. [3] वुच्चति, C.D.E.; P.Pa. पाठे वग्गो ।
[4]For चर° D.E. पाठे—पर° अस्मिन् सूत्रे [5] चे-केवलं M. [6] ब्य्°, अस्मिन् परतने सूत्रे च केवलं D.E.; शेषेषु ह० ब्य°। [7]केवलं M.
[8] न पज°, D.E. [9] ब्य° केवलं D.E.; शेषेषु ह० ब्य°; M. पाठ: सर्वदा—ब्यन्तिङ्करोति। [10] द्र० अनभावकता अङ्गु० ३।३३ [11] एवं पि भूतो, C. [12] अनातापी सर्वदा M.; शेषेषु ह० सर्वदा °ह। [13]°त्तप्पी, सर्वदा M., द्वि० श्च C.; °इ, B.C.; D.E.P.Pa. पाठ: सर्वदा °त्तापि, अस्मिन् परतने च सूत्रे
[14] चे, नास्ति M. [15]पि, नास्ति C. [16] केवलं M. [17]पिस्रो, D.E.
[18]एवंपि भ,° C. [12]C. नास्ति वाक्खण्ड: ., (सयानस्स ...वुच्चति.)

---

*द्र० अङ्गु० निका० चतु० २।२,३
† इदं च सूत्रं अङ्गु०-निका० चतु० ११

कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति।—सयानस्स[1] चे पि भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु अधिवासेति नप्पजहति न विनोदेति न ब्यन्तिकरोति न अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो अनातापी अनोत्तप्पी सततं समितं कुसीतो हीनविरियोति वुच्चति[1]।—चरतो चे[3] पि भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसवितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[2] भिक्खु नाधिवासेति[4] पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, चरं पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[2] ति वुच्चति।—ठितस्स चे पि[5] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवित्तक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[6] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, ठितो[7] पि भिक्खवे भिक्खु[8] एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि[10] भिक्खवे भिक्खुनो उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे भिक्खवे[11] भिक्खु नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, निसिन्नो पि भिक्खवे भिक्खु एवं भूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[9] ति वुच्चति।—सयानस्स[12] चे पि[13] भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स[13] उप्पज्जति कामवितक्को वा ब्यापादवितक्को वा विहिंसावितक्को वा; तञ्चे[14] भिक्खवे[15] भिक्खु नाधिवासेति पजहन्ति विनोदेति ब्यन्तिकरोति अनभावं गमेति, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चतीति।

चरं वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उदवा सयं।[16]
यो वितक्कं वितक्केति पापकं गेहनिस्सितं॥
कुमग्गं[17] पटिपन्नो[18] सो मोहनेय्येसु मुच्छितो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[19] सम्बोधिमुत्तमं॥

[1] चे, केवलं M. [2] पित्तो, D.E. [3] नाधिव°, सर्वदा ह० नडीष,° B.C. D.E.; अनधिव,° P.Pa. [4]° स्यो, C. [5] नास्ति C.

[6] नास्ति D.E.P.Pa. [7] निसिन्नो, C. [8] भिक्खु जागरो एवं भ,° C. [9]° स्यो, C. [10] नास्ति B.C. [11] नास्ति D.E.P.Pa. [12] यवेकटि (?), C. [13] नास्ति C. [14] तं चे पि, B. [15] केवलं M. [16] द्र० सु० ८६ [17] कुम्भगं, D.E. [18] पति°, D.E.Pa. [19] फुट्ठा, P.Pa.

यो चरं[1] वा यो[2] तिट्ठं वा निसिन्नो उदवा सयं।
वितक्कं समयित्वान[3] वितक्कोपसमे[4] रतो।
भब्बो[5] सो[5] तादिसो भिक्खु फुट्ठुं[6] सम्बोधिमुत्तमन्ति ॥११॥

१११*—सम्पन्न-सुत्तं [चतु. १२]

सम्पन्नसीला भिक्खवे विहरथ, सम्पन्नपातिमोक्ख[7] पातिमोक्खा संवर-संवुता[7] विहरथ, आचारगोचरसम्पन्ना[8] अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी[9], समादाय सिक्खथ[10] सिक्खापदेसु।—सम्पन्न सीलानं भिक्खवे विहरतं, सम्पन्नपातिमोक्खानं [11] पातिमोक्खासंवरसंवुतानं[11] विहरतं, आचारगोचर-सम्पन्नानं[12] अनुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावीनं[13] समादाय सिक्खतं[14] सिक्खापदेसु किञ्चस्स[15] भिक्खवे उत्तरि[16] करणीयं?—चरतो[17] चे पि[18] भिक्खवे भिक्खुनो अभिज्झा विगता होति, व्यापदो विगतो होति, थीनमिद्धं विगतं होति, उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं होति, विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं

[1]ञारम, C. [2]त, M.; नास्ति Pa. D.E. पाठ:—यो परं यदि वा तिट्ठं [3]समयि-त्वान, D.E.M. (=वुपसमेत्वा, A.) समसित्वान, P.Pa.;। सम्मसित्वान, B.C. [4]°पस्समे, P.Pa.; °ऊपसमे, D.E.

[5]समो सो, D.E. [6]फुट्ठुं, M.; शेषेषु ह०—फुट्ठं (पु°, D.E.), द्र० सू० ३४, ७९, ८०

[7] °पाटि° C.D.M.; सम्पन्नपातिमोक्ख संवर°, B.C.M.P.; सर्वेण वाक्येन सह द्र० सूत्रं ९७ Pa. प्रथमं द्वितीयं वाक्यं च भ्रान्त्या मिश्रित संभिद्य एकीकृतं [8]च, Pa. पाठे पुन:—भिक्खवे, आचार° इ यत: परं। [9] °वि, B.C.P.; °विनो, D.E. [10] °थ, केवलं M.; °त, D.; °ति, B.C.E. P.Pa.; समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु—इत्याम्रेड्यते (द्र० सु० ९७.अङ्गुत्त Index S.V. सिक्खापद), अत: सिक्खति—इतिप्राय: अयुक्तस्थाने, यथा चाथ: [11] °पाटि°, D.M.; सम्पन्नपातिमोक्खानं संवर° B.C. सम्पन्नपातिमोक्खसंवर°, P.M. [12]B.C. आम्रेड्यते—भिक्खवे, आचार° इत्यत: परम्। [13] °वीनं केवलं M.; °विनं, D.E.P., °वि, B.C. [14]सिक्खति, B.C.P. [15]किञ्चिस्स, D.E.; किचस्स, B.; किस्स, M. [16]न तु ँ सर्वत्र ह० [17]पर°, D.E., यथा सू० ११०. [18]चे पि, M.; केवलं चे, D.E.P.Pa.; केवलं—पि, B.C.; द्र० सू० ११०.

* सम्पूर्णमिदं सूत्रं=अङ्गु°० चतु० १२

होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असंमुट्ठा,[1] पस्सद्धो[2] कायो असारद्धो[3], समाहितं चित्तं एकग्गं,[4] चरं[5] पि भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[6] ति[6] वुच्चति।—ठितस्स चे पि[7] भिक्खवे भिक्खुनो अभिज्झा[8] विगता होति, ब्यापादो विगतो[9] होति[9], थिनमिद्धं विगतं[10] होति[10], उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं[11] होति[11], विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असंमुट्ठा[12], पसद्धो[12] कायो असारद्धो[13], समाहितं चित्तं एकग्गं, ठितो पि भिक्खवे[14] भिक्खु एवंभूतो आतापी ओतप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो[15] ति वुच्चति।—निसिन्नस्स चे पि[16] भिक्खवे भिक्खुनो अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो[9] होति[9], थीनमिद्धं विगतं[17] होति[17], उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं[11] होति[11], विचिकिच्छा पहीना होति, आरद्धं होति विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति[18] असमुट्ठा[19], पस्सद्धो कायो असारद्धो, समाहितं चित्तं एकग्गं, निसिन्नो पि[20] भिक्खवे भिक्खु एवंभूतो आतापी[21] ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चति।—सयानस्स[22] चे पि[23] भिक्खवे भिक्खुनो जागरस्स अभिज्झा विगता होति, ब्यापादो विगतो[24] होति[24], थीनमिद्धं विगतं[25] होति[25], उद्धच्चकुक्कुच्चं विगतं[26] होति[26], विचिकिच्छा पहीना[27] होति[27], आरद्धं होति[28] विरियं असल्लीनं, उपट्ठिता सति असंमुट्ठा[29], पस्सद्धो

[1] असंमुट्ठा, द्र० संम्मुस्स न ता, पुग्गल- पञ्ञत्ति २।८ असंमुस्सनता, धम्मसंङ्गणि १४, ... अप्पमुट्ठा, D.E., द्र० सुमङ्गल-विलासिनी I-p. 113, J.P.t.S., 1884, P.94. [2] °द्ध, C. [3] अस्सार°, C. [4] एतदग्गं, D.E.; B.C. आम्रेधडते—चित्तं, एकग्गं इत्य.त: परं। [5] चरम्पि, B.C. D.E.; पर°, D.E.

[6] ति, नास्ति B.; °त्थे तीति, C. [7] D.E.Pa. नास्ति चे; B.C. नास्ति चे पि. [8] अविज्जा, D.E. [9] ॥ प ॥, M. [10] नास्ति B.C. M.P.Pa.; (॥ पे ॥, C.; ॥ प ॥, B). [11] नास्ति सर्वत्र ह० [12] असंपुट्ठ, P.; असंपमुट्ठा, Pa; अप्पम्मुट्ठा, D.; अपम्म्°, E. [13] आरद्धो, C. [14] नास्ति Pa. [15] °त्थो, C. [16] B.C.Pa. केवलं चे। [17] न सर्वत्र ह० (॥पे॥, C.; ॥प॥, B.) [18] उपट्ठितस्सति, C. [19] अप्पमुट्ठा, D.E. [20] नान्ति B.C.D. [21] नास्ति D.E. [22] सयनस्स, B.C. [23] C. Pa. पाठे केवलं—चे. D.E. नास्ति चे पि। [24] ॥प॥, M. [25] न सर्वत्र ह० (॥पे॥, C.; ॥प॥, B.) [26] न सर्वत्र ह० [27] नास्ति M. [28] नास्ति C. [29] अपम्मुट्ठो, D.E.

कायो असारद्धो, समाहितं चित्तं एकग्गं, सयानो पि भिक्खवे भिक्खु जागरो एवंभूतो आतापी ओत्तप्पी सततं समितं आरद्धविरियो पहितत्तो ति वुच्चतीति।

यतं[1] चरे[2] यतं[3] तिट्ठे यतं[3] अच्छे[4] यतं[5] सये।
यतं [1]सम्मिञ्जये[6] भिक्खु यतमेनं[7] पसारये[8] ॥
उद्धं तिरियं अपाचिनं[9] यावता जगतो[10] गति[10] ।
समवेक्खिता वा[11] धम्मानं खन्धानं उदयब्बयं[12] ॥
एवं विहारिमा[13]तापिं[14] सन्तवुत्ति[15]मनुद्धतं ।
चेतोसमथसामीचिं[16] सिक्खमानं सदा सतं[17] ।
सततं[18] पहितत्तो ति[19] आहु भिक्खुं[20] तथाविधन्ति[21] ॥१२॥

११२—[22]लोक-सुत्तं [चतु. १३]

वुत्तं[23] हेतं[24] भगवता वुत्तमरहता ति मे सुतं। लोको भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकस्मा तथागतो विसञ्ञुत्तो; लोकसमुदयो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकसमुदयो तथागतस्स पहिनो; लोकनिरोधो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो, लोकनिरोधो तथागतस्स सच्छिकतो; लोकनिरोधगामिनी पटिपदा भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धा[23], लोकनिरोधगामिनी पटिपदा तथागतस्स भाविता। यं[25] भिक्खवे सदेवकस्स लोकस्स[17] समारकस्स सब्रह्म-

[1]सतं, B.C. [2]परे, D.E. [3]सतं, B. [4]विट्ठे, C. [5]अच्छे, B. [6]समिज्जये, M.; °आये, D.E.; समिञ्चये, B.P.; सम्मिञ्जेय्य, C. द्र० सुमङ्गलविलासिनी, I. p. 196. [7]यतंमेनं, D.E., ° ˇ मेन, P.Pa.; सत्°, B. [8] पस्सार°, P.Pa.

[9]अपाचीनं—इति कल्पनया (= हेट्ठा, A.); अपाचिनं, P.Pa.; अपाचिनि, B;°नी, C.;अपामिनं D.E.; अपास्वि, M. [10]जगतो, P.; जागतो,Pa; जगता, D.E.; जरातो, B. C.; गती, D. E.; यावता च लोकगति M. [11] व D. E.; अन्यहस्त लेखपाठे—च; सम्मपेक्खिता चम्मानं, C. [12] °ब्ययं, D.E.

[13] °इम, M.; °इ, B.C.D.E.Pa.; विहारति, P. [14] सर्वत्र ह० नास्ति ˇ [15] सन्ति°, D.E.; °वुत्तिम, M.; °इं, D.E.; °इ, P.Pa.; °वुद्धि, B.C. [16] °समत°, C.; °इच°, B.M.P.Pa.; ° ˇ, M.[17] नास्ति Pa. [18] नास्ति D.E. [19] पिहितत्तोपि, D.E. [20] °उ, B.C. [21] °विदन्ति, D.E. [22] संपूर्ण सू० अङ्गुत्त०-निक० (ed. Morris) चतु० २३ [23] वुत्तञ्हेतं, B.P.Pa.; ° ˇ चेतं, C· [24] °बुद्धा केवलं M., अन्येषु ह०, Morris अङ्गु०-नि०, l.c. °बुद्धो। [25] यं हि हि, नतु—यं, Pa.

कस्स सस्समणब्राह्मणिया[1] पजाय सदेवमनुस्साय दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातंपत्तं[2] परियेसितं अनुविचरितं मनसा, यस्मा[3] तं[3] तथागतेन अभिसम्बुद्धं, तस्मा तथागतो ति वुच्चति। यञ्च भिक्खवे रत्तिं तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झति, यञ्च रत्तिं अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायति, यं एतस्मिं अन्तरे भासति लपति निद्दिसति[4], सब्बन्तं तथेव होति, नो अञ्ञथा, तस्मा तथागतो ति वुच्चति। यथावादी भिक्खवे तथागतो तथाकारी यथाकारी तथागतो[5] तथावादी[6], इति यथावादी तथाकारी, यथाकारी तथावादी, तस्मा[5] तथागतो ति वुच्चति। सदेवके भिक्खवे लोके समारके सब्रह्मके सस्समण ब्राह्मणिया[7] पजाय सदेवमनुस्साय तथागतो अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती तस्मा तथागतो ति वुच्चतीति[8]। एतमत्थं भगवा अवोच, तत्थेतं इति वुच्चति:

सब्बलोकं अभिञ्ञाय सब्बलोकेयथातथं[9]।
सब्बलोकविसंयुत्तो[10] सब्बलोके अनूपमो[11] ॥
सब्बे[12] सब्बाभिभू धीरो सब्बगन्थप्पमोचनो[13]।
फुट्ठस्स परमा सन्ति[14] निब्बानं अकुतोभयं ॥
एस खीणासवो बुद्धो अनीघो[15] छिन्नसंसयो।
सब्बकम्मक्खयं पत्तो विमुत्तो उपधिसङ्खये ॥
एस सो भगवा बुद्धो एस सीहो अनुत्तरो।
सदेवकस्स लोकस्स ब्रह्मचक्कं[16] पवत्तयि ॥

[1] ससमण°, B.M.P.; °ब्रह्म°, B.P.Pa. [2] °विदन्ति, D.E. [3] नास्ति D.E

[4] निद्दिस्सति, B.; नविस्सति, D.E. [5] नास्ति D.E. [6] यथाव° P.Pa. (Pa. प्राक्तनं शब्दत्रयं नास्ति s). [7] ससमण°, B.P.M.; समण, नतु—स, C.; °ब्रह्म°, B.P.Pa. [8] वुच्चति, नतु—ति, C.D.E. [9] यथातथं, M.A.; अन्यत्र ह० तथागतो, °तं, P. [10] °लोके, C.D.E.Pa.; हि संयुत्तो, C. [11] अनपमो (=अनुपम), C.D.E.; अनुप°, B.; द्र० चरमा गाथा; अनुपेया, M.P.; अनुपयो, Morris L.C. (?) A पाठान्तर (अनूभयो ?): अनुसयो ति (?) सब्बस्मि लोके सम्मादिट्ठि तण्हादिट्ठि उसयेहि अनुसयो (?) तेहि उभयेहि विरहितो। [12] सब्ब, C.; सते, D.E.; Morris L.C. पाठान्तर—स वे। [13] °गन्ध°, B.C.D.E.P.; °न्ठ°, Pa.; °पम्°, D.E.M.; °ब्बम्°, C. [14] परमो, D.E. परमं सत्ति, M.; A पाठः—फुट्ठस्साति फुट्ठा अस्स करणत्थे.......फुट्ठा अनेनातिअत्थो (हस्तलेखे सर्वदा पु°, अस=अस्स) [15] अनिगो, C. [16] ब्रह्मं च°, B.

इति देवा[1] मनुस्सा च ये बुद्धं सरणंगता
संगम्म[2] तं[2] नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं ॥
दन्तो दमयतं[3] सेट्ठो[3] सन्तो समयतं इसि[4] ।
मुत्तो मोचयतं अग्गो तिण्णो तारयतं वरो ॥
इति हेतं नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं
सदेवकस्मिं लोकस्मिं नत्थि ते[5] पटिपुग्गलो ति ॥
अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति ॥१३॥
चतुक्कनिपातं निट्ठितं[6]
तस्सु[7]द्दानं[8] ।

ब्राह्मणा[9] (१००) चत्तारि (१०१) जानं[10] (१०२) समण (१०३) सीला[11] (१०४) तण्हा (१०५) ब्रह्मा (१०६) । बहूपकारा[12] (१०७) कुहना[13] (१०८ पुरिसा (१०९) चरं[14] (११०) सम्पन्न (१११) लोकेन (११२) तेदसाति[15] ॥

इतिवुत्तके द्वादसाधिकसतं सुत्तन्ति [16] ।
इतिवुत्तकं निट्ठितं [17] ।

---

[1]देव°, B.C., and Morris l.c. [2]तथागत D.E. [3]धम्मयतं सेट्ठं, B. [4]इति, B. [5]व तं, P.; ठितं, Pa. [6]केवलं M. [7]केवलं in M. [8]उद्दानं M.P.Pa. [9]°अ, C.; ब्रह्मण, B.M.P.Pa. (I take ब्राह्मणा as ablative: after br.) [10]जानं, M.; जिना, B.P.Pa.; जिनास मण C.; परिजना, D.E. [11]सील, P.Pa. [12]अनुमीयते; बहुकारा, M.; बहुतरा, B.C.P.Pa. °ततरा, D.E. [13]°न, D.; °ण, E.; कुहका, P.; कुह, M. [14]अनुमीयते वर, M.; च, B.C.P.Pa.; व, D.E. [15]तेरसाति, M. [16]द्वा, नास्ति D.E.; °धिकंसतसुत्° B.C.—Instead of this tine M. has the following verses:

सत्तविसेकनिपातं दुक्खं बावीससुत्तसङ्गहितं ।
समपञ्ञासमथतिकं तेरस चतुकञ्च इति यमिदं ॥
द्विदसुत्तरसुत्त सते सङ्गायित्वा समारोहिसु पुरा ।
अरहन्तो चिरठितिया तमाहु नामेन इतिवुत्तन्ति ॥

[17]इतिवुत्तकपाळि निट्ठिता, C.M.